BHASHASAR

PITI

OR V

A GOOD READER OF THE HINDI LANGUAGE CO PILED FROM THE BEST WORKS IN HINDI,

RT

SAHAB PRASAD SINHA

Manager Sadgavilas Press and Kshatriya Patrika, and Harish Chandra K offices and author of Guruganit Satak, Ganit Battisi anvilas, Karyakala, Strishiksha, Bhasha-tatwa-bodh, Sutuprabodh, Munaspathantar, Manasmayanka, Palwra Prakash, and Ras Rahasya.

भाषा-सार

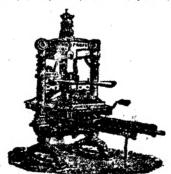
अर्थात्

हिन्दी भाषा की एक उत्तम पुस्तक।

जम् क खद्गविलास प्रेस, और क्षात्रिय-पतिका, हरिश्चन्द्रकला के मनेजर और गुरुगणितशतक, गणितबत्तीसी, सज्जनविलास, काञ्यकला, वेशिक्षा, भाषातस्वबोध, सुताप्रबोध, मानसपाठान्तर, कैनसमयंक, पहाडाप्रकाश. और रसरहस्य के संग्रह कर्ता

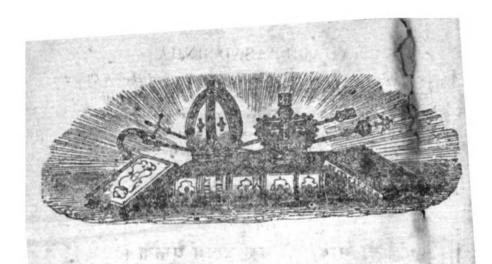
साहब प्रसाद सिंह ने

भनेक उत्तम दिन्दी ग्रन्थों में संग्रह कर इपकार्या।



पटना-"खड़्विलास" प्रेस-बांकीपुर।

साइब प्रसाद सिंह ने छाप कर प्रकाशित किया। १८९०.



and the second

PRINTED & PUBLISHED BY SAHAB PRASAD SINHA,
AT THE KHADGAVILAS PRESS, BANKIPUR.

1890

PREFACE.

Some years ago, I had compiled a Hindi Reader entitled the "Bhashasar". It will be presumptuous on my part to say any thing as regards the merits of the book. According to the well-known Hindi proverb, "no one calls his own curdled milk sour." The fact of its meeting with the approval of an ardent promoter of Hindi literature like Mr. S. Pope, late Inspector of Schools, Behar Circle, and of its being selected as a text book of the Middle Vernacular Scholarship Examination testifies to its usefulness.

I tender my sincerest thanks to those gentlemen who have, at the instance, of Mr. Pope reviewed and reviewed favourably this my humble compilation and especially to G. A. Grierson, Esq, B. A., C. S., who has been pleased to take rather a more favourable veiw of the merits of the book than it actually deserves.

The book has undergone several editions and every time that it was published, it underwent some modification both in the matter and in the manner of it arrangement. Mr. Pope had suggested that new extrats which are actually good ones and which had not found a place in the book should be incorporated in it; while the others which were selected in the first instance for want of better ones and which can now be advantageously replaced by those of a superior kind should be abstracted from it. These suggestions have been kept in view in issuing this the 6th edition of the book.

Last year when Mr. Pope was going to England, he had impressed upon me the desirability of making amendments in the next edition of Bhashasar in consultation with a Hindi scholar like Mr. Grierson and of not allowing such matters to remain in it as may be got by heart parrot-like by the school pupils, but such as may give its readers a decent knowlege of the Hindi language and make them sufficiently proficient init to be able to understand the other books of that language and also to write it correctly.

I have accordingly consulted Mr. Grierson and have effected improvements in the book on the line indicated by that gentleman.

The present Inspector of schools Dr. Martin, has kindly selected this the 6th edition of the book as a text book of the Middle Vernacular Scholarship Examination and I take this opportunity of thanking him for this favor and also of thanking those gentlemen who, at his instance, have passed favourable remarks on the compilation.

I have also to tender my acknowledgments to Babu Kali Cumar Mitter, B. A., Head Master, Patna Normal School, for suggesting selections from Tapasi Ram's Prem Gang Tarang and Tulsi Das' Ramayan.

Although the book has increased in volume, it is offered to the public at its original price, as my intention in compiling it is not to make a capital out of it but to benefit the Hindi-reading public of the province.

It is requested that I may be communicated with, if for any reason, any selection is considered as unsuitable. I shall give my best consideration to the communication when issuing the next edition of the book.

SAHAB PRASAD SINHA.



भूमिका.

दोष्टा।

सुमिरि गजानन पद पदुम, उर धरि सीताराम । पवन सुअन को सुरति करि, बरनत गृथ छछाम ॥

कई वर्ष हुए मैंने हिन्दी में अनेक उत्तम विषयों का एक संप्रह किया था और उस का नाम भाषासार रक्खा। इस पुस्तक के विषय में मेरा कहना सुनना स्पर्थ है क्योंकि अपने दही को कोई भी खट्टा नहीं कहता; परन्तु विद्यानुरागी तथा विज्ञतम मिस्टर पोप की न्यायदृष्टि में इस का अंचना और कुछ दिन से बराबर बिहार प्रान्त के मिडिल वर्णेक्यूलर और ज़िला स्कूलों में "कोर्स " की पुस्तकों में रहना ही इस की यथार्थकता के सूचित करने को बहुत है। मिस्टर पोप के उत्साह बढ़ाने पर जिन लोगों ने कुपापूर्वक इस की समालोचना कर के मेरे अम को सुफल किया उन को मैं- चित्त से धन्यवाद देता हूं। विशेषत: मिस्टर ग्रियर्सन साहब बहादर धन्यबादाई हैं।

यह अंथ कई बार छप चुका है. परन्तु मिस्टर पोप की सम्मति से इस के विषय बरावर बदलते रहें. क्योंकि उक्त महाशय की आज्ञा थी कि जो २ उत्तमोत्तम सकें और शुद्ध २ हिन्दी लिख पढ़ लेवें । आप इस का तृतीय चतुर्थ भाग भी बनाइए. वह यथावसर नार्मक स्कूल के कोर्स अथवा प्राइज़लिस्ट अर्थात् परितोषिक के निमित्त रक्खा जायगा।

इंस्पेक्टर साहिब के आज्ञानुसार मैंने जी ० ए० ग्रियर्सन साहिब बहादुर से सम्मात ली और उन्हीं के कहने के अनुसार विषय क्रमशः रक्खे गबे और उस में हर प्रकार की भाषा दिखलाई गई है।

माषासार में इस नूतन परिवर्त्तन होने का कारण मैंने वहां के वर्त्तमान इस्पेन्टर डाक्टर सी० ए० मार्टिन साहिब बहादुर को लिखा तो उन्हों ने कुपा पूर्वक इस को खीकार करके ६ ठें संस्करण को स्कूल कोर्स में रक्छा । मैं उन महापुरुषों का भी अन्तःकरण से वाधित हूं कि जिन्हों ने इस्पेक्टर साहिब को पूछने पर भाषासार की सराहना की और मेरे उत्साह को बढ़ाया। हिन्दी भाषा के रिसक तथा सज्जनशिरोमणि वाव् कालीकुमार मित्र हेडमास्ट पटना नार्मल स्कूल से भी इस संस्करण के अदल बदल करने में सम्मति ली और उन से बहुत सहाय्य मिला। विशेष कर आपने रामायण और मक्तभूषण तपखीराम के प्रथी की अनुरोध की।

यद्यपि भाषासार का आकार सर्जनों के उत्साह दान से बहुत बढ़ गया है परन्तु मूल्य उस का वही है जो पहिले था, क्योंकि मेरा लक्ष्य इन पुस्तकों के प्रचार से व्यापार का नहीं है बरख बालकों के लाभ और भाषा वृद्धि से 1

सुजनों से प्रार्थना है कि यदि इस में कोई विषय ऐसे छए गये हों को कनुचित हों तो अनुग्रह करके मुझे लिख भेजें दूसरे संस्करण में उस पर विचार कर के दूसरा रख दिया जायगा।

प्रकाशक।

सूचीपत्र ।

नंबर.	विषय.				
1	प्रेमसागर. (लल्ला	क कवि.)			?
7	वर्षा. (भारतेन्द्र हरि				9
ą.	प्रेमपथिक. "				6
8	कादम्बरी. (हरिश्चन	द्रचन्द्रिका)			99
9	रामकथा. (पंडित	छोटूराम त्रिपार्ट	(a)		12
Ę	रामचरितमानस. (ग	ोस्वामी तुलसी	दास जी री	चत. और	28
	जी० ए० प्रिय	र्भन साहिब सम	पादित.)		
v	ग्वाल कावि की कवि	ता. (शिव सिं	ह सरोज.)	••••	8.
(सुन्दरीतिलक. (भा	तिन्दु हरिश्चन्द्र	.)		. 85
9	रसिकविनोद. (महा	राजाधिराजकुम	ार लालखङ्ग	बहादुरमछः.)	89
90	विष्णुपद युवराज. (हरिश्चन्द्रचन्द्रि	का.)	*	89
8.8	कवितावली. (पं०	रामगुलाम द्वि	वेदी)		.86
17	उर्दू मिश्रित कविता. (पं • संतोष सिंह	और साहिबज	ादे सुमेरींसह स	ाहब.)४९
73	भाषा का लाभ. (i • व्यासरामशं	कर शम्मी)	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	9.
18	मित्रता	"			98
29	च्तराई और चालाव	i. "			90
22	ईर्षा	"			- 83
20	उपदेश करना			••••	88
80	प्रशंसा	"			20
99	परिश्रम	/ 27			86
20	बदला.	"		•••	90
-79	राजनीति. (मनोहर	शतक.)			90
	काविता. (भारतेन्दु				७३
	मैथिली रामायण. (पं ॰ वर चन्दा झा महाराज दरभंगा के सभासद.) ८१				

[7]

नंबर.	विषय.	पृष्ठ.
28	पृथ्वीराजरासी. (चंद कवि, पं० मोहनलारुपंड्या सम्पादित.)	(3
29	संदेह. (पं० व्यासरामशंकर शम्मी.)	29
28	बैताकपचीसी. (कलुलाक कवि.)	(4
20	भूगोळहस्तामलक. (राजा शिवप्रसाद सितारै हिंद)	"
36	विद्या "	99
39	कविता. (खानखानानवाब अब्दुल रहीम बादशाह अकबर के समासद	.) 98
30	सूरसागर. (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र संप्रहित सूरशतक पूर्वार्द्ध सटीक.	708
9.8	श्रीमती महारानी इंगर्जेंडेश्वरी } (काशीराज महाराज ईश्वरीप्रसाद कीनविक्टोरिया यात्रा. } नारायण सिंह देव बहादुर.)	209
33	बृन्द की कविता. (बृंद कवि.)	179
11	प्रेमगंगतरंग. (भक्त भूषण श्री तपस्वीराम.)	?30
38	प्रासङ्गिक कविता. (पंडितवर दुर्गादत्त कवि.)	188
29	कविता. (महामहोपाध्याय कविराजश्यामळदास मेम्बर इंजलास	
	खास महाराणा उदयपुर.)	18€
38	जानकी मंगल. (पंडित वर शीतल प्रसाद त्रिपाठी)	680
३७	ऋणी होने का दुख. (पं॰ वर व्यासरामशंकर शम्मी.)	180
20	कनरपी घाट लड़ाई. (जी० ए० प्रियर्सन साहिब बहादुर.)	788
28	कवित रामायण. (गोस्वामी तुल्सीदास.)	308
80	आर्थ्यावर्त्त का विकाप. (बाबू रूक्मीप्रसाद)	9<7
86 -	मेघदूत. (राजा लक्ष्मण सिंह बहादुर.)	१८३
83	रुक्मिणी परिणय. (महाराज रघुराज मिंह बहादुर)	129



EXTRACT FROM THE REMARKS

OF

MR. G. A. GRIERSON M. R. A. S. IN HIS "SOME USEFUL HINDI BOOKS."

I should advise persons in want of Hindi books to put themselves in communication with Babu Sahib Prasad Sinha, Khadga Vilas Press, Bankipore (Patna.) This gentleman, and his partner Babu Ram Din Sinha, are extensive publishers, and can direct the inquirer as to the most likely places for finding printed books. Amongst books published by this firm, I may mention the Kshatriya Patrika, a monthly magazine in Hindi, containing a great deal of original matter by writers of repute. It often contains instructive articles on the Hindi language, and not seldom is very pugnacious on the subject. The subscription to this magazine is Rs. 6 as. 6 per annum. Those who wish to familiarize themselves with the Kaithi * character, now much used in Bihar, cannot do better than buy the Suta-Prabodh (price 4 annas, say 6 d.), published by the same. It is a reading book for girls, in simple Hindi. I would also draw particular attention to a work entitled Bhakha Sar (part II), which comes from these publishers. In my opinion it is the best Hindi reader for advanced students extant. Besides the usual and proper extracts from the Prem Sagar and the Ramayan of Tulsi Das, it contains selections from the writings of near-1 ly all the best modern Hindi writers. Chief among the authors laid under tribute is Harish-Chandra, whose late lamented death at an early age has been a severe blow to the progress of Hindi literature. Amongst writings by him here given may be mentioned extracts from the History of Kashmir (Kashmir Kusum), founded principally on the Raja Tarangini, the History of Maharastra, the Nil Devi (a play, in which the language and customs of Musalmans and Hindus are well contrasted), and the Purna-Pra-V kash-Chandra-Prabha (a well-known and much-admired novel. Harish Chandra's unique and most valuable essay, entitled Hindi Bhakha, on the different dialects of Hindi known to him, is given in full. In this essay, after a note on the various dialects current in the city of Benares, including that of the thieves, he gives samples of a great number of local dialects and of various local songs sung to peculiar melodies with the legends connected with them. He shows how utterly unsuited modern Hindi is for poetry, and vindicates triumphantly the claim of poets to write in their own dialects, till something better is produced as a standard. He then gives examples of the modern style of pross Hindi, written and spoken.

^{*} I should mention that many of the above books can also be had in the Knithi character.

Of this he describes six kinds; I that full of pure Sanskrit words; 2) that containing a few Sanskrit words; 3) that containing no Sanskrit and only pure Prakrit words; 4) that in which words from foreign languages are admitted; 5) that which is full of Persian words; and 6) that which admits English words. He states that he himself prefers the second and third styles, and I fancy that in this every European scholar will agree with him. It will be observed that he calls all these, even the fifth style, Hindi. As will be seen hereafter, amongst natives, the true criterion between Hindi and Urdu is not vocabulary, but idiom and order of words. I may add that the sixth style is that in general use at the present day amongst educated Hindus of Hindustan. English words are used much as the words 'jockey' or 'a shake-hands' are used in French. After some examples of the bad Hindi used in various localities, he winds up this part of his essay, in a grim humour, with samples of three new kinds of Hindi, the Hindi of the Bengali Babu, the Hindi of the English Sahib, and the Hindi of the Railway companies. In these, the first two especially, the faults of the nationalities of the speakers are most eleverly hit off. The essay concludes with specimens of the writings of English Hindi scholars. Foremost honour is given to the Christian hymns by Mr. John Christian, lately deceased, "Jan Sahib, as he is affectionately called by the natives. He is the only European I have ever met who has achieved any success as a Hindi writer; and the best native scholars admit that many of his hymns are faultless compositions so far as their language goes. Natives of India much admire his works, and they have had a strange fate, for, in addition to being put to their legitimate purposes, they are sung by nach girls all over Bihar together with Vaishnava songs of Bidyapati and Sur-Das. The expressions in the songs are so truly native, and Mr. Christain has so cleverly caught the style of these old masters, that these girls have no idea that they are singing Christain hymns.

There are also given copies of letters in Hindi, written in England to native friends in India, by Messrs. Nicholl and Pincott. I suspect that they were hardly intended for publication. I say this, judging from their contents, and not from the Hindi style, which, it is needless to say, I do not criticize here.

The book also contains the well-known "Kahani Thenth Hindi men" (Tales in pure Hindi), which should be studied by every European student for two purposes: firstly, to master its wonderfully pure vernacular vocabulary; and Secondly, to learn what is not Hindi. This set of stories is a veritable lusus natura. It contains only the purest Hindi vocabulary, ie words derived only from Frakrit sources; not a single Arabic or Persian

word finds entrance into it, and yet it is not Hindi, but Urdu. The work is continually referred to by native Hindi scholars as showing bow impossible it is for a Musalman (for such was its author) to write in that language, and the very first sentence, sir Jhuka kar nak regar to hun us ap'ne bananewale ke samh'ne, bowing my head, I show my humility before my Creator, is often quoted for that purpose. Here the verb is in the middle of the sentence; and in Hin ii narrative prose it must come at the end. The quotation, in spite of its vocabulary, is very good Urdu, but it is very bad Hindi.

The Kahani Thenth Hindi men is followed by an appropriate antidote, extracts from the elegant Ram Katha of Panlit Chhotu Ram Tiwari, Professor of Sanskrit at Patna College. In this work the old familiar story of Ram is told again in mingled prose and verse. It is universally recognized as a model of pure Hindi, written in a flowing and not too learned style. So highly appreciated is the book, and so great was the demand for it, that I believe there was actually a large sale of the proof sheets before it could be completely printed off.

Selections from Buital, Kabir, and other poets make up this really excellent reading-book. I hope that a new edition will soon be celled for, and that, encouraged by the sale of the first, the publishers may see their way to printing it with better type, on better paper.

A member of the same firm Babu Ram Din Singh, published a moful Bhakha Byakaran, a work written by Gir'dhar Das, the father of Harish-chandra. It is the only native work which deals with the grammar of Tul'si Das, and is well worthy of attention. I have myself found it very useful. To the European student, its style may be found difficult, as it is written in verse. As at present published, it only goes down to the end of nouns.

the English language and literature yet the vernacular Bengali hastened to keep pace with its Western rival, and a really valuable vernacular literature has been called into existence during the last forty years. The Wave of intellectual light is now passing westward, and we find the press of the contiguous province of Bihar is becoming year by year more active and more worthy in its literary productions. Foremost among the pioneers of progress is the Khadga Vilas, Press, at Bankipore, which sends forth with startling rapidity a series of works in the Hindi language, steadily rising higher in the scale of improvement.

At the end of 1884 the Bhashasar was produced, a work in two parts containing a selection from the best writers in Hindi Part I. contains specimens from Lalu Lal, Raja Siva Prasad, Babu Harishchandra, Sri Gridher Das, Chhotu Ram Tiwari and Babu Gadadhar, all of whom have made their mark as writers of the great vernacular of the north. This really good book happily contains a large proportion of prose, and shows that Indians are now wisely giving their attention to the cultivation of manly prose in preference to effeminate Poetry. In a few more year Hindi will have passed from its childhood of sickly Poetry, through its youth of translation, and will have reached its manhood of original composition.

THE OVERLAND MAIL.

February. 9, 1885, LONDON.

OUR BOOK NOTICE.

THE HINDI LANGUAGE.

We have just received a copy of the Bhashasar, which is put forth as a compilation from the "best Works in Hindi." It is really a very worthy attempt on the part of patriotic Indians to present numerous specimens of the great vernacular of their country in a manner calculated to show that it is deserving the recognition they demand for it. It is certainly remarkable in these days of boasted social and political liberty that sixty or seventy millions of people under English rule should still be ineffectually pleading to be allowed to use their own vernacular in the transaction of public business and in official communications and legal pleadings.

The compiler begins with a selection from the Prema Sagar, illustrating the curious metric prose of Lallu Lall. This is followed by histoircal sketches of Kashmir and Maharastra, by Babn Harishchandra in his best style. These two pieces are written in good Practical Hindi prose, Selections

[&]quot;Bhacha ar" Fars I. A Rindi Reader, compiled from the best works in Hind by Sahio Prasad Sing

from the samous poem of Tulsi Das, and a sew verses of Baital a post office last century, are followed by a good specimen from the work of the peasant poet Kabir. Some pages of Babu Harishchadra's pleasing verses are followed by two scenes from his drama called 'Nila Devi.' A long story in what is ca lled Thenth, or " pure " Hindi follows and it would puzzle some of the people who talk so flippantly about Hindi to read this specimen of the pure language. A prose tale in a fluent style by Chhotu Ram Tiwari is succeeded by some pages of the "literary" form of Hindi-the Puran-prakash Chandra-prabha, and then we have an essay on the various dialects of the language, with specimens of each. This is by Babu Harish Chandra, and it does him much credit, and is singularly interesting. The twelve methods now practised in different places of writing Hindi deserve attention. These are followed by specimens of Hindi by Englishmen who are esteemed model writers of the language. The gentlemen selected for this compliment are Mr. John Christian (four pages) Professor Nicholl of Oxford seven pages and Mr. Frederic Pincott (twenty pages) selections from the very valuable works of Mr. Grierson, giving illustrations of the Eastern dialects of Hindi. bring to an end this really good book.

It is very pleasant to find Indian gentlemen taking so intelligent a view both of the importance of their vernacular and of the proper method of cultivating it. It is only by a careful study of the dialect that the eclectic form the language will be evolved which will command general assent, and secure for Hindi the high position which its richness and its flexiblity so eminently qualify to attain.

भाषा-सार।

त्रेमसाग्र ।

उत्तराह[®]—५१ पथ्याय ।

श्री ग्रवदेवकी बोले, कि महाराज ! जो श्री खणायन्द दश समेत जरा-धन्म को जीत, काक्यवन को सार, इज को तश, दारका में जाय बसे सो में सब क्या कहता हूं, तुम धनेत हो चित कगाय सुनो, कि राजा उपसेन तो राजनीति किये मधुरापुरी का राज करते थे, भीर श्री खणा बचराम सेवज को भांति उन के भाजाकारी, इस से राजा राज प्रजा सुन्दी थो, पर एक कंस की रानियां हो पपने पति के शोक से महादुन्दी थीं, न उन्हें नींद बातो बो, न भूज व्यास जगती थी, पाठ पहर उदास रहती थीं।

एक दिन वे दोनों वहन चिता विन्ता कर चापस में कहने सभी कि जैसे जृप विना प्रका, चन्द्र विन सामिनी भोभा नहीं पाती तैसे कंत दिन कामिनी भी भोभा नहीं पातो । चवं चनाय हो यहां रहना भन्ना नहीं इस से अपने पिता के घर चल रहिये सो चच्छा महाराज वे दोनों रामियां ऐसे चापस में सोच विचार कर, रथ मंगवाय, उस पर चढ़ मथुरा से चनीं मगस देश में चपने पिता के यहां चाईं, चौर जैसे श्लोकच्च वनरामजी ने सब चस्रों समेत कंस को मारा, तैसे उन दोनों ने रो रोसमाचार अपने पिता से सब काइ सुनाया।

सुनते की अरासन्य पति क्रोधकर सभा में पाया, भीर कगा कक्ष्म कि ऐसे अभी कीन यदुकुल, में उपजी, जिन्हों ने प्रभुरी समित सहावकी कंश की सार मेरी वेटियों की शंड किया, में प्रभी प्रपत्ना सब कटक की धार्क, चीर सब यदुव प्रियों समेत मधुरापुरी को कक्षाय राम क्षणा को जीता बांधकार्क, तो मेरा नाम करासन्य, नहीं तो नहीं।

ादतना कर इस ने तुरन्त की चारी कोर के राजाकी की पन शिखे जि तुस बयना दक्ष की के इसार पास काकी, इस बंध का पकटा की यहुर्वशिक्षी को निर्देश करिने, जराइन्स का पन पार्त की सब दिस देस के नरेस क्यांगा खपना दश्व वाथ की, भाट चली वाये भी यथां जरावश्व में भी अपनी स्व सेना ठीज ठाल बनाय रक्ती, निदान एवं चस्त्रद्य वाथ की जरावश्व में जिस समय नगभ देश से मथुरापुरी की, प्रस्तान किया, तिस समय क्ष के वंग तिरंग चलीकियों थी। रक्षीस क्षस्त चाठ वी चलर रथ, चीर इतने की गृज़ पति, एक बाक नी सक्स वाड़े तीन वी पैद्या, चीर पेंसठ सहस्त का बी दश अखनि, यथ जलीकियों का प्रमाण है।

ऐसी तर्स चर्ची हियी उस के साथ थीं, चौर दन में से एक एक राज्य जीता बसी था, सी में बर्णन करां तक कर्फ महाराज ! जिस काक जरासक सब चमुर सेना साथ से धींसा दे चका, जस काक दमी दिमा के दिक्पाब की धर थर कांपने, चौर गृथ्वी न्यारी ही बोक्स में कभी छात सी दिक्ष के तिहान कितने एक दिनों में चका चला जा पहुंचा चौर इस ने चारों चौर से मधुरापुरी को घर किया, तब नगर निवासी चित भय खाय जोक चावन्द की पाम जा पुकार, कि महाराज ! जरासन्ध ने चाय चारों चौर से नगर चैरा चन क्या करें चौर किथर जांग ।

दतनी वात के मुनते को करि जुक सीच विचार करने कारी, इस में वक्ष-राम जो ने बाय प्रभु में कका, कि मकाराज ! बापने भक्तों का दृ:ख दूर कर-ने के हितु सबतार किया है, अब अग्नितन धारण कर बसुर कयी वन को जनाय भूमि का भार कतारिये यक सुन जी क्षयाचन्द बन की साथ के बसमेन की पास गये, चीर कका कि मकाराज ! कमें तो कक्ने की बाजा दीजे चीर बाप सब यदुवंशियों को साथ के नद को रक्षा कीजे।

इतना कर जो मात पिता के निकट थाये, तो यब नगर निवासी चिर याये, भीर करी भित व्याक्षक को करने कि हे लाणा है लाणा ! यव इन अमुरी को दाय में कैसे वर्ष तब हरि ने मात पिता समेत सब की भयातुर देख समक्षा के कहा, कि तुम किसी भांति चिन्ता मत करो, यह अमुर इक की तुम देखते ही सी पक्ष भर में यहां का यहीं ऐसे विकाय जायगा, कि जैसे यानी के वस्ते पानी में विकाय जाते हैं, यो कह सब की समकाय, तुकाय हाइस बंधाय कम से विदा ही यक्ष भरे रहीं में बैठ किये।

निवसे दोक यदुराय, वर्षे मुद्दक में जाय।

करां जरासन्य खड़ा या, तथा का निकसे, देखते की जरातन्य की क्षण चन्द से मित प्रतिमान कर करने क्या घर तू मेरे सीची से भाग का में. तुमी क्या साख तू मेरी बामान का नवीं की में तुभा घर मंत्र बका का का मार्थ के मार्थ के का मार्थ के मार्य के मार्थ क

दतनी बाल के सुनते ची जरासका ने जो कोच किया ती खोक चा मक देन चक चड़े इए इन के घोड़े वह भी चवनी सब सेना को घारा, चीर कमने यों प्रकार के कह सुनाया, चर दुछो। मेरे चारी से तुम कहां भाग का चोमे, वहतं दिन जोते बचे। तुम ने चपन मन में क्या समभा है, चब कोते न रहने पाघोरी, जहां सब चसरी समित कंस गया है, तहां हैं सब यदुवंशियों समित तुन्हें भी में मूंगा। महाराज। ऐसा दुष्ट बचन उस चतुर के मुख से निकंसते हो, कितनी एक दूर जाय दोनों भाई फिर खड़े इए। खोक च्याचन्द्र को ने तो सक यक्यों किये चीर बसराम को ने इस सुमल, जो चतुर इस कन को मिलाट गया, तो दोनों बोर कल कार के ऐसे दूरे जैसे हाथ यों के यूय पर सिंह दूरे चीर कमा को चा बाजने।

उप आज माफ को बाजता या, ची ती मैच सा गरजता या थी चारी जीर में राजिं का दक की चिर जाया या, भी दल बादक सा काया था, भी मक्ती की भड़ी सी करी थी, उस के बीच श्रीक्षणा वसराम युद्ध करते ऐसे बीमाबः मान जनते थे. जैसे सचन चन में दासिनो सुदावनी कागती है।

इतनी क्या मुनाय श्रीश्वनदेव की बोले, कि पृथ्वी नाथ ! अब कड़ते कड़ते अवृशें की बहुत की छेना कटगई, तब बकदेव की ने रथ से कतर जरास्त्र्य की बांध किया, इस में श्रीक्षणाचन्द की ने का वक्तराम की से कहा, कि माई इसे कीता छोड़ दो, मारी मत, क्यांकि यह कीता जायगा तो फिर अब्दोंकी बाध के पावेगा, तिन्हें मार इम भूमि का भार उतारेंगे और की कीता क छोड़ेंगे की को राश्वस भाग गये हैं की दाध न पावेंगे, ऐके बकदेव की की समस्ताय ग्रंस ने करासन्त्र की सुड़ाय दिया, वह पाने विन कीगों में जथा की देख से भाग के करी थे !

च पूंदिणि चाचि काचै मसुभाय े सिमरी चेमा गर्ड विकाय । भयी दुःच चति वैसे जीजै । अब घरकाड़ि तपका कीजै ॥ किस्ती तक कड़े समभाय - तुस सी भानी क्यों पिक्ताय ! कव मुंडार जित पुनि कोर - राज देश काड़े निर्वं कीर॥

क्या प्रचा की भव को सड़ाई में दार किर भवना दन जोड़ कावेंगे की सब यहुंबंधियों समित काला बकादेव की द्धर्म पठावेंगे, तुम निष्ठी बात को विकास मत कारी महाराज! ऐसे समभाय बुभाय की भमुर रख से भाग के बचे थे, तिन्हें भी जरासमा को मंत्री ने घरके पहुंचाया, भी यह फिर वहां व्याटक जोड़ने कामा। यहां त्रीक्षणा बक्षराम रण भूमि में देखते क्या हैं, कि कोडू को नदी वह निकासी है, तिस में रख बिना रथी नाव से वह काते हैं, ठौर ठौर टाबी मरे पहाड़ से पड़े हुए बाते हैं, छन के घाषों से रक्ष भरनों को भांति भरता है, गीद गीटड़ काम कोशों पर बैठ बैठ मास खाते हैं, भी आपस में जहते जाते हैं।

इतनी कथा कह त्रो ग्रुकदेव जी बोले, कि सहाराज! जितने यह हाथी घोड़े भी राज्य उस खेत में रहे थे, तिन्हें पवन ने तो समेट इकट्टा किया, भी मान ने पक भर में सब को जनाय भक्त कर दिवा पांच तत्व, पंचतत्व में मिस्र गरी, उन्हें भाते तो सब ने देखा घर जाते किसी ने न देखा कि किथर गरी। ऐसे भस्तों को मार, भूमि का भार उतार त्री क्या वनगम, भक्त हितकारी, उपसेन को पास भाय द्यक्रवत कर हाथ जोड़ बोले, कि महाराज। भाप के पुख्य प्रताप से भमुर दस मार भागया, यब निर्भय राज कि जै, भी प्रजा को मुख दीजे। इतना बचन इन के अश्व से निकसते ही राजा उपसेन ने भति भानत्व मान बड़ी बधाई की, भी धर्मराज करने करी। इस में कि जन्द यक दिन पोक्टे फिर जरासंध उतनी ही सेना से चढ़ि भाया, भी श्रीकृष्य बसदेव जो ने पुनि स्थोही मार भगाया। ऐसे तेईस तेईस भाषी हियी से जरासन्य सबस वेर चढ़ि भाया, भीर प्रस ने मार हटाया।

दतनी कया कह जी ग्रुकट्रें सुनि ने राजा प्रीचित से कहा, कि महा-राज! इस नीच नारदसुनि जो के जो कुछ जी में काई तो यें एकाएकी उठकर कान्यवन के यहां मये चन्हें देखते ही वह समास्रीत एठ खड़ा हुचा, सीड्रफ के दंडवत कर, कर जोड़ प्रका कि महाराज, चाप का चाना यहां कैसे भया।

मुन के नारद करें विचार । मधुरा में क्यासद्र सुरानि । तो बिन तिक इते निश्चें कोई। जरायन्य की ककु निश्च कोई॥ न दे समर चीर स्नति ककी । बानक है बकदेव सी हरो॥ यों आह जिस नारद की कोते, कि जिसे नू मेख वरन, काम के नैन, चिति सुन्दर बदन, वितास्त्र पहिरे, पीतपट चीढ़े देखे, तिस का नू पीका किन मारे मत कोड़ियो। इतना कड़ नारद सुनि तो चले गये चीर काकयान चपना दक्त कोड़ने सगा, इस में कितने एक दिन कीच छप नृ तीन करोड़ महा मसेच्छ चितमयावने इकहे किये ऐसे कि जिन के मोटे सुन, गसे बड़े, दांत, में सिम्म, भूरे केश, नेन साम खंघंची से तिन्हें साथ से, डंका दे, मयुरापुरी घर चढ़ि घाया ची छसे चानी चीर से चिर किया। इस कान चीक चानद की ने छस का व्यवहार देख घपने की में विचारा कि चव यहां रहना मसा नहीं, क्योंकि चान यह चढ़ घाया है भी कम को करासंध भी चढ़ि घाये तो मसा दु:ख पावेगी कर से उत्तम यही है कि यहां न रहिये सब समेत चनत काय विचये महाराज! इरि ने विचार कर, विश्वकम्मों को बुकाय समकाय बुकाय की कहा कि नू चमी जाने समुद्र के बीच एक नगर बनाव, ऐसा किस में सब यह विचये सुकाय से सह में सब को वहां से यह में दे ने काने कि यह हमारे घर नहीं भी एक भर में सब को वहां से यह चान ।

इतनी बात के सुनते ही, जा विश्व कर्मा ने समुद्र के बीच सुदर्भन के कपर बारह योजन का नगर जैसा श्री क्राच्या की ने कहा या तैसा ही रात भर में बनाय, उस का नाम हारका रख था हिर से कहा, फिर प्रभु ने उसे भाषा दी, कि इसी समय तू सब यदुवंसियों की वहां ऐसे पहुंचा दे, कि कोई यह मेद न जाने को हम कहां धारी भी कीन सी भाषा।

इतना बचन प्रभु को सुख से जो निकाला, तो रातों रात को उग्रसेन वसु-देव समेत विकासका ने सब गदुवंसियों को से पहुंचाया, भी श्री लाखा वस-राम भी वकां प्रधारे। इस बीच ससुद्र की सकर का शब्द सुन सब गदुवंशो

[•] विश्वारी सतसई सटीक में देखी।--

दोडा-दुन्द दुराज प्रजान को, क्यों न बहै हुछ दुन्द !

स्वित संवेशे जग करत, मिलि मायस रिव चन्द ॥ ७१०॥ स्वैया-एक रजार्च समे प्रभु है सुतमो गुन को बसु भांति वहायत । स्रोत महा दुख हुंद प्रजान को सौर सबै सुभ काज बजावत ॥ स्वास को दिननाथ निसाकर एक हो मंडक में जब सावता । देखी प्रतस समावस को संधियारी वित्ती जग में सरसावता॥ ७१० स

चौं न पड़े जी जति पायरण कर यायस में अपने जने, कि संस्कृति वहार अपने चे जाया, यह नेद कुछ जाना नचीं जाता।

क्तनी जवा सुनाय की स्वदेव की ने राजा यरी जिल में समा कि एकी-भाव ! ऐसे सब यहुवं सियों की बारका में वसाय, की जाना पट जो ने बनाई क को से बाबा, कि भादे ! पन चल के मजा को रचा की जै, की काश्वयन का सब ! ब्रामा काब दोनी भादे वहां से चल मज मच्छल में मारी !

वर्षा ।

यक्तियों देखी तो वरवात नौसे धूम धाम से या पहुंची भीर मेघी के देखने बे कोगों का चित्र कीसा प्रसन्न को गया जैसा सज्जनों के सिलने से चित्र प्रसन्द कीता है से मेव निधन्दे इ सळान कें क्यों कि दानी है और भरे हैं तब भी सानो रहते हैं भीर जी बरसते हैं बह प्राय: नहीं गरजते। विजनी की सी चंचका है कि इधर चमका कारती है काशो स्थिर नहीं रहती इसी से जिस की व से क्सका संग को जाता है उस का बुराका कीता है। अस बढ़ने से नंदियों ने मधाटा छोड दी है इसी से मन्य सीग बाल बल दनका संग नहीं सरते बरन बनका जल तक नहीं पोते चीर नदियों की चात्रित कीय कैंचे चनाय को कर इधर बक्ते फिरते हैं जैसे खामी को मर्याद कोडने से सेवकी की दर्दमा द्वीय भीर सुद्र नदियां ती ऐसी उसद बद्दी है जैसे बाड़े धन वा बद क्रव वा योवन वा प्रधिकार से छोटे मनुष्य डमडा वहै। मखी ये सब चार दिन को चोचले हैं चाब वह काम को जो सटा निवह क्योंकि कोटी नटियां के सी अख्दी मृख जाती हैं जैसे कुचाच चलनें वाकी की धन यौवन सब चित्रवार जब्दी नाम की जांग। जब के प्रवाह से पुरा सब ट्र काते हैं। जैस मा-स्तिकों को बाद से जान भीर भिता को मार्न टूट जाते. हैं। जी नदिशों को ऐसे प्रवाची को मिनाने पर भी समुद्र नचीं बढ़ता लीसे जितेन्द्रियों की सम्बन्ध स विकार मधीं वैसेषी यक्षाकी पर इतनी पानी भारा प्रकला है। पर वे वाधित नहीं दोते जैसे साध्यों की व्ययन नहीं बाझा करते हरी हरी बास से साई मार्ग बागए हैं कहीं राष नहीं दिखाती कैसे पाखंडी कीम ईखर के प्रोम मार्ग ्मो पपने बादों से किया देते हैं, पशाहीं पर भी दूव जम गई है जैसे संमत से काश्वां के, मन में भी विकार की जाते हैं कर्ष दत्वादिक विवेश लोकों का कर

मध्त की गया के जैसे नुरे राजा के राज्य में उस भीर खक्ष कीम कड कांग्रं ! आके वर शिरे काते के जैसे कको चित को कीश कीकी सी धैम्पति विपत्ति में अब जाते हैं। पानी का देश दोने भी नहीं दकता जैसे जिन के चित्र तुरै व्यस्ती में फंस जाते हैं वे गोति नहीं मुनते। जिन विखंटियों ने घीषा में श्रम अरके खाने को वटोर रक्खा है वे सन्त से बरसात विताती हैं जैसे परि-बारी सीग जा गानी को उपार्जित धन की बढापे में सुख से खाते हैं जुगन बारी भीर वसकते हैं जैसे खुद्र कीग दधर दधर वसका करते हैं। भीर सरोड़ों जीव उस वर्षों में छतपन बोते हैं और सरोड़ों की नाम भी बोते हैं मानी ईम्बर ने इसे अपनी सृष्टि का नमना बनाया है। महाकों की अन्यास श्चिकार मिक जाता है जैसे घर के भीग कितर वितर ही जाने से खबा श्रीन वैषयाच चनकी मार सेते हैं। मच्छर भीर पतंग प्रसादि बहत से ट:खटाई जन्त बहुगए हैं जैसे इस जान में निन्द व सीलुप भीर बंचन बहुगए हैं पाछा। साली भगवान ने केवन इस नीमीं की शीखा देने की यह बदशात मनाई है जी अच्छे सीग है वह इसे यह सब ग्रीचा भी खते हैं पर जी सटीबात है भूत जर क्याटा इस महतु में भीर भी कहण्ड की आते हैं भीर आर्थ के सैद क्तमात्री में इसे विताले हैं।

प्रेमपथिक।

(मार्ग में यीषा-राम मीता)

राम-प्यारी मेरे हेत तुन्हें कैसे कष्ट मधने पड़ते हैं, कहां यह छोर बन जिस में बाध चोते रोक घरने मेंड़े इत्वादि भयादने बनैसी जोव दश्वर छश्वर फिरते हैं भीर कुम काटि कंक्षड़ पत्यन पड़ाड़ नासे नदी रेती भीर पड़ां की स्थन कतार से रस्ता नहीं चन्ना जाता, भीर कहां तुन्हारे कोमस चरन निन्हें मखन के विद्योग सो गड़ते थे। हा । प्यारी तुन ने दम दोन के कारस इतना दु:स क्यों सहा, पिता ने तुन्हें बनवास नहीं दिया था।

शीता—प्राननाय! रानी कैंकेयों ने मैरे को उपकार के हितु मकाशाल के यह माँगा कि बाद बन जांच चौर मेरे को भाग्य से बाद ने सुकी संग के बार के या वो के सुकी संग के बाद का या को है। मेरे भाग्य वाकों कि मैं बाद की वोद्धे चलूं। भीर की बादा को है। मेरे भाग्य वाकों कि में बाद की वोद्धे चलूं। भीर की बादा को तो के बादा की वोद्धे वाका की कि बादा की वाक्षे

र्म-मारी कुच पुर्वी का यह धर्म नहीं कि तुमं की क्रवीन क्रियी

को तिनक भी दुःख दें, इन वियक्तियों को भीकने की पृष्य का गरीर बना है, कियां सुख भीगर्ने की है। पुष्य बीग जो संसार के विषयों के जवार्जन में घने का परिश्रम करते हैं वह कैवन इसी हित कि वे कुछ वहां जो जा उस से परिश्रम करें चौर उस परिश्रम से उपार्जन किए हुए विषयों में कुछ वहुं जो की सुख को सब सामग्री सिंह करें न कि कुछ की श्रीभा स्वरूप बहुं भी की की गरें।

सीता—नाय! सुख किसे कहते हैं भीर परितीय किसका नाम है ? यह सब बातें चित्त से स्वान्ध रखती हैं, यदि कल्पहच के नोचे भीर खर्ग में भी बेठे हें भीर भवना चित्त नहीं प्रसन्न है वह किस काम का, भीर घून में भी कोटते हें भीर भवना चित्त प्रसन्न है तो वही खर्ग है। श्वानियों की भने क दु:ख भीगने पर भी क्यों नहीं कष्ट होता ? क्यों कि छन का सुख दु:ख का भीग कारनेवाना मन उधर प्रवर्त्त ही नहीं होता, वह भागन्द ही में तब्य यहता है। पिता जनक को अपड़े में एक बेर भाग क्या गई भीर इस से छनका मरीर जकने जगा, पर वह जिस काम में की ये छन्हों ने छघर से क्या फीर कार हथर तिक भी खच्च न दिया, भीर जब नौकरी ने प्रकार किया भीर बुनाया तब छन्हों ने जाना वरंच हसी से छन का नाम भी विदेह है।

राम—प्यारो! ये जान की वातें हैं स्त्रियों से इन बातों से क्या सम्बन्ध, ये विचारो तो निरो भवना दोतो हैं भीर घोड़े दुःख मुख में घवड़ा जाती है भक्षा ये ऐसे ऐसे कष्ट कैसे सह सकेंगे।

सीता—प्यारं ! यह ठीक है पर स्त्रियों का दुःख मुख तो पति के प्रधीन है, पति के विनास्त्रों की बैंकुंठ भी तुच्छ है भीर पति के संग निर्जन वन भी खजार बैंकुंठ से प्रधिक है।

राम-पर प्यारी दु: ख मुख सब की भवधि होती है इस कठोर धूप भीर इस कटोसे बन को योग्य तुन्हारा मुकामार तन नहीं है।

धीता—नाथ यह वन ती सुमि फूर्जी को सेज से अधिक कोमक भीर यह धूप सरद रितु को चांदनी से भी ठंडी मालूम होती है। मेरे भाग कहा कि आप की सेवा सुक्त हो। ये वन भौर पहाड़ सुमि जनकार भीर अयोध्या के महत्व भीर वगी को से बढ़कर मुहाने भीर प्यारे मालूम होते हैं, भीर ये वन को जोव सुमि भवने संगे सम्बक्ति से भी अधिक मुख देने वाले हैं। नाथ! सुमि तो वाहिये कि जहा भाग करें दहां में अपने नेन विद्याती चलूं, पर अब

सुभी निक्य है कि मेरे सब मनीरव सिंच चींगे, सब चूप में चकतेर पाप बक्त कर किसी घरें भरे पेड़ की ठंठी छाटा में विचाम करने की बैठ कांग्री तीं प्रसीने की बूंद से ग्रीभित पाप का सुख कमक देख कर पपने निचीं की में अतार्थ कक नी, चीर पपने पांचल से छसे पोंच कर छते पांचल की वहार से किस समय पाप का कम दूर कर सकूंगी छस समय पपना की वन कल छतार्थ समभू गी। बरसात में पानी के छर से हम पाप किसी पेड़ के नीचे वा भ्रीपड़ी में जब पास पास बैठें या केटे रहेंगे भीर घापस में एक दूसरे को पानी की टपक से बचावेंगे छस समय में उस छान की स्तर्ग से बढ़ कर समभू गी जीर इस कहावत की सत कर मान गी:

बरवा—टूट खाट घर टटिकरटटियौटूट। विश्व की बांक अधिकवां सुख की जूट। राम—म्यारो ! तुन्हारी कन बाती से मेरे नेत्र में कल भरा भाता है भीर

गका भी कत्या जाता है धन्य हो ! जिस कुन में तुन्हारे ऐसी वान्या कराय हो भीर जिस कुन में न्याही जाय वह दोनों कुन धन्य हैं, ऐसे ही उतिजताओं के सत पर प्रव्यों थेंं हैं, तुन्हारा श्रील और चरित्र दूपरी स्त्रियों के हैं तु हुए। तत और नशूना होगा और तुन्हारी रहन सहन से दूपरी स्त्रियों कि है तु हुए। तत और नशूना होगा और तुन्हारी रहन सहन से दूपरी स्त्रियां विचा पावेंगो, तुन्हारा नाम पतिजताओं की मचना में सूर्य चन्द्र की भांति साक्ष- त्यान्त पकाश्यित रहेगा। सच हैं पतिजता स्त्रों का यही धर्मा है कि पति से सुख में सुख मानना, तुन्हारी ऐसी गड़ियों से हमें कि भिमान है।

भीता—गाय वक्षत अर्थ भव वस करी । इसो शिष्य भीर पुत्र सरावने के योग्य को तो भी बुक्सिन सोग जन के गुंक के सामने जन की प्रशंका नकीं करते, दन वातों भी काने दी निएं इस प्रथ की शीमा देखिए ।

राम—प्यारी इस मूमि की की शीभा है वह तुन्हारे कारण है, जहां र तुम चन्नती ही वाठहर जाती ही वाबैठ जाती ही उतनी दूर की हुआ । सनाय सी दिखाने कारती हैं।

बीता— यस है जिस का सन्य ऐसा नाय हो वह छी निसंदेश हुकी की सनाथकर सकती है। देखिए घूप एस मझस केशी नाच रही है भीर मरभी से सब जीव कीने यक से हो हो हैं, पत्ती हुन्दी पर एक स्थान पर स्थिर हो कर की वीतियां नी कते हैं, की रश्त भीर रुख्ये प्यास से भूंड की से एक रह भी सना रहे हैं, यीच में कहनुहुन का मण्ड पेड़ों में नंबता ऐसा सनाई देता है मानी कहीं संमतराम कीन प्रस्त गढ़ते हैं।

राम-धन है, यह देखों छाट में तो कुले और वनों में मोर हरने कैसे जीम जिलासे हां पर हे हैं, और जहां लुक भी अब का मंत्री होता है वहां की सा जोटन जगते हैं, पीमरों की गिरे हुए पानों को चिहिया वर र पीती और सिर हटा बार इधर छवर देखती जाती हैं, वैन ऐसे बड़े जीव तो जहां कैठे हैं वहां से मानी दिन ही नहीं सकते। और जहां कीई मधन दृष्य वा किसी ग्रवार की छाया हो जाते हैं, वहां सब चन्नीवासे प्रथित विश्वाम के हित की एकत और विश्वाम कर कर के घपना परिचम शान्त करते हैं, कोई गडरों कीई बाह की तिनया बना कर होते हैं, कोई दुधर छवर को वातें करने स्वार्त हैं, छोटों छोटों छाया के नोचें की दूकानों से खुक मीस से कर काई जनर शरीर ठंटा सरते हैं।

नदियों भी दता लों के जन मूर्थ को चसक सिन कर यदापि भांखों को छुन्त हैं सामून होते हैं भीर ऊपर से गरम भां हो रहे हैं पर तो भी छन्ती में कोग नहां कर भीर पानों पो धर सन्दृष्ट होते हैं, भीर जह नभी हवा के कोने में छमी जन के काप सिन जाते हैं तो जैसे सखद हो जाते हैं कहीं वाही हवा से जन पेसा सिन सिन कारता हुया बहता है नि देखते हो दन भाता है।

सीता—सीर नाय इन यामकध्यों को चितवन घीर व्यवशार सब कैसे सीधे हैं, देखिए निष्कारण से इस से कैसा हित करती हैं, कोई हमें पंखा भावने सगतो हैं, कोई बैठने को स्थान संवारने सगतो हैं, कोई बड़े प्रेम से इसारे निकट या कर संकोच से इक २ पूछती हैं कि तुस कीन ही, ये तुम्हारे कीन हैं, सश्चां काषीगी, यपने कीसना शरीर को इस स्पूप में क्यां कट देती ही।

राम— एच हैं इन गंवाने के व्यश्वार सब ऐसे ही सहल चीर निम्छल हैं, इन के चित्त ख़च्छ घीर इन का प्रेम बहुत सचा है, नगर निवासियों में यह वातें तहां, उनने तो काम व्यवहार प्रीति सब में कुछ छनं रहता है, पर दी कोग ता छन का नाम नहीं जानते, चाचो इस बड़ को छाया में इस कक्षे चीतर पर बैठ के दी घड़ो इन को बातों से को बहकावें, जब तक ख़क्काच काशी से उंटा जब के चावेंगे तो इस कोग पो कर रास्ते का परिश्रम चीर ए। स. बुभावेंगे चीर फिर चक्कने का बक्ष चा जायगा तब तक यह का दो पहर भी दन जायगा।

कादम्बरी

एक दिन राजकुमार श्वनास के घर किसी काम के किये गए ती उन्हों ने कहा कि 'तुम ने सव प्रास्त्र पढ़ा भीर सम्पूर्ण विद्या अभ्यास किया भीर चन्यू च कवा भी खी पर्धात् संसार शं जन्म क्षेत्रर को २ वस्तु भी खना अवित या भी तुम ने भीकी भीर भव तुमको कुछ भी खना नशे है। भव तुम युवा कुए इससे महाराज ने तुमको श्रमिविक्ता कार्या धन सम्पत्ति का स्वामी बनाने की रच्छा को है। भव तुम यौवन धन भीर ममुख तोनों के चिवारी इये, • परम्तु योवन कान वड़ा विषम हैं। इस बन में पड़कर सोग वनैसे हो जाते हैं। युवा कीय काम, क्रीध, कीम इत्यदि पशुधर्म की सुखम्स जानते हैं भौर यौबन प्रभाव से को एक प्रकार का प्रस्थवार सन में का काता है उस की मोचनार्श्व उपाय नहीं करते। इस धवस्था की कारका में वड़ी निर्मेख बुद्धि भी पावन को नदी की भांति गडडिन ही जाती 🗣 और विषय कवी तृच्या खब दिन्द्रयों को दुख देने जगती है। इस समय दुष्कर्म भी मुकर्म जान पड़ता है भी। दुराचारण में बाज्जा नहीं होती ! इस समय मद्य पान न भी करने से घनघोर यौवन के सद से कोग चुर रहते हैं और हिताहित और घदासद का कुछ विचार नहीं करते। धन से गर्भ जत्यन्न होता है ' धौर चहुंकारी कोग मनुष्य को जीव नधीं समभति भीर उनका स्त्रभाव उस सम्य ऐसा दो जाता है कि अपने दिस की बात के छोड़ जर और बातों पर की धित धोते हैं। इस विष का कोई भीषध नधीं है। भपने सुख में किसी को दुख पौर सँतीष को कुछ सन्धावना नहीं होती दरन कीन प्रकारण भी "दहीने बांये" द्वीने सगते हैं। योवन, युवरान और ऐखर्य यह सब चय कानीन हैं। केवस बुडिमान साग इस प्रवस तरक में वचते हैं। यदि बुडि रूपी नौका न को तो यद प्रवाह विना सुवाय न कोड़े और एक वेर दुवने से फिर कीन वच सता है।

वध कोई प्रमाण नहीं है कि को वड़े क्षान में उत्पन्न होता है वह प्रच्छा स्त्रभाव और नम्ब होता है। क्या पच्छी भूमि में कांटे का वृच्छ नहीं उत्पन्न होता है? क्या चन्दन के सकड़ों में पन्नि निक्तातों है, वह क्या करातों नहीं? साप ऐसे बुद्धिमान पुरुष की उपदेश देना उदित है। मुखे की उपदेश

दीनी कानी में काले संघी का बाला, भीर हाथ में काले बद्राध्य की माला साका ली. स्गळाचा जास एक विधास वट हुन की जास तसे बैठ गरे। जस समय शीतल मन्द सगन्ध वाय चल रही थी. ऐसी कुछ समा बन्ध रही थी. जिस का वर्णन नहीं ही सकता, सनीहरता द्याप भाग श्री सहादेव जी की सेवनाई में खड़ी हो सब प्रकार की मनशाई सुधराई बड़ी घीनसी से दिखना रही थी उन समय जटा मुक्तर बांधे, पक्ष में श्रीत विभूती धारे, मस्तक में चन्द्रम्षण संवारे श्री सकादेव की ऐसी शीमा पाते श्री का मानी शान्तरस मृति धारण कर पाप बैठा घो। पानंद को वेसी समा भीर मुचित से बैठे शिव की की देख यी पार्वती की महारानी भी बहां हीं पा बैठों. और हाथ कीड सिरनाय मोठे बचन से यह कहने कगों कि है प्राचनाथ भना यह हो सकता है कि बोई नालो गंगा की सें सिखने पर भी भपवित्र रहे वा जिस के भांगन में कल्पहचा को वक्क भी दिरिद्र रहे या मूर्य के घर अधिकार रहे, को है कापा निधान यह छित नहीं कि पाप के चरण को इस दासी के मन में कोई शक्रान वा उदाशी रहे, हे नाथ मेरे मन में यह बड़ा संदेश है कि मैप सारदा बेंद पुरान भीर आप भी दिन रात राम नाम जपते हैं, वह राम कौन हैं क्या प्रवध के राजा जो राम हुए, बड़ी हैं, कि राम यह नाम प्रसुख धारन परव्रम्म का है।

चौपाई—शोयहराम भवध के राशा। तो इन के अप से क्या काशा। को प्रभुराम भाकाख को नामा। तो करिद्या करह भागामा॥

शो पार्वतो जी के सुख से इतना बचन मुन देवन की देव श्रो सहादेव कन ही मन श्रो रामचन्द्र की का भेर समक्त, मगन हो दो टण्ड तक कुछ ज बोले, घांखें बन्द खरिजये घंग पुनिवात हो गये छन छन पर कुछ डमग छमग के भूमने बगी मानो घानंद के समुद्र में डूब मारने बगी, शंभ शंभ कर बांबो साने खींचने बगी, घीर घोड घो: ऐसे शब्द मुख से बार बार निका-का कभी, निदान इस प्रकार कुछ काल घानंद रस चाख श्री महादेव की ने घांख खोलो, घौर घन्टत सनो सी मीठी बोली बोले, कि है. प्राण्यियारी गिरिराज कुमारी तुन्हारी यह बात मुन मुक्ते परम घानंद हुचा श्री रामचन्द्र के गुण घीर चरित घपार है वेद गाते गाते यक गये पर तो भी इस के एक खहसांस का भी मेद न पासा, तुन्हारा यह पूछना मुक्ते बहुत भासा, इस खारम में राम को दया से कुछ राम यस गाता हूं, सुनो, हे पार्वती की तुम ने कें हा कि की यह राम खब्ध की राजा का नाम है तो इस के जय से क्या फक्त केंबब इतना सुकी न सुधाया।

"मार्क विय न रासवेदेशो, तनिय ताहि कोटि वैरी समयवापि परम सने ही"

" काडडिं सुनडिं चस चथम नर यसे जी मीड पिसाच। पाखण्डो डिर पद विसुख जानडिं भूठ न संच"॥

है पार्वती राम यह नाम भवध ने राजा दमस्य ने पुत्र हो ना है निधी दूसरे ना नहीं, वे ही परव्रद्धा नगदी खर भूभार उतारने भीर निज भन्नी ने लिये पृथ्वी में मनुष्य कृप धर भवतरे थे।

सीरठा- चम निज हृद्य विचारि · तिज संभय भज्ञ राम पद ।
सुनु गिरि राज कुमारि · अस तम रिवकर बचन मम ॥
चौपाई- सब कर परम प्रकाणक जोई · राम चनादि सबिधपित सोई ।
जीकि श्रुति गाव धरहिं सुनिध्याना · दसरम तनयं सोई सगवाना ॥

च पार्वती तुम की दमरथ तनय राम भीर प्रवृद्ध शि कुछ भद न मानना चाहिये, जो तेजस्व रूप सचिदानन्द विन पद सब च सनेवालों से कहीं बढ़कार च लता हाय नहीं रखता पर ती भी सब हायवाली से कहीं बढ़कार काम करता, विन जीभ के सब रस चायता भीर भाचाता, भांच नहीं रखता तो भी दूर भीर पास का और भाग और पीके का सब देखता, इस प्रकार किस की सब महिमा ग्रपार है, भीर जिस की माया के वस यह सब भार चरावर संसार सब प्रकार सार पदार्थ मा देख पड़ता है, वही परमत्रद्धा दगरथ के नन्दन राम हुए, कि जिनकी मन मोहनी मुरति देख काम को भी काज भावे भीर जिनके हाथ पांच भादि भंगों की निकाई छपमा के सब पदार्थी को निचाई दिखातों है। जिन प्रभुते भक्तों के हित इस मुख्यों में सम्पूर्ण को का मनुष्यों की सी भीर पिता का बचन मान बन बास किया भीर कि भुवन के दिलिये रावन का नाश किया, वे की शब्दा के दुनारे जग के रखवारे कोई दुनरे नहीं, वेई मेरे प्राण पियारे जग से न्यारे भक्त गतिवारे मेरे पश्च में स्थाम किया।

''पुरुष प्रविद्य प्रकाश निधि ' प्रगट प्रश्वर नाथ । रष्ठकुश्वमनि प्रनमामि सोद ' कहि सिव नाएड साथ ॥'' भीर भांखें बंद कार सन की सन रष्ठेपति जी भिक्त रस चाखने की। न्त्री संशदिव की वे गुज में यह बचन चुन पार्वती की दाय कीड़ सिर नास पति विनतों कर वोनीं।

चीवाई-नाथ मुनत तर यथन खदारा, भयकं मुखी गयी संसथ भारा ।

दशरय मृत जी गांस सुमाना, सीई निर्मुत परत्रका सपाचा ह धव प्रसु यह मंमय जिय रहें क, किहि कारण तिनि नरतनु धरेका। मोंकि समुभाद करकृ यह भेदा, जाते दूर कोई मन खेदा ॥ श्वी पार्वती जो को शति रम मानी यह बानी मून, पश्म ज्ञानी त्री संचादेव जी यी वाडने जरी वि डे भवानी तुन्हारी भन मानी बात में कडता कूं चित्त दे के मुनी, पश्त्रक्षा के भवतार सीने का कारण वेडी पश्तक्षा काने द्सरे को क्या ग्राता कि इस बारे में जुळ ठोक उक्ति करे, पर कां सुनि जानी कीग कुछ प्रपने सन को पनुसानो क्यांनी इस विषय में यो करते हैं, कि जब काब इस संसार में धरम की दानि दोतो है चौर वाप के व्यवदार बढ़ते हैं भीर मी झाझाणीं को घटती भीर नीच इत्यारों की चढ़ती बढ़ती होती है. वैदिका धर्मा गृप्त भी काने कये नने धर्मा पाखण्डो कोग बना बना चनाते, यन दान ब्रत मन एठ जाते, देनताथीं की पूना भीर संदिर मिट जाते, साधु सकान नियम धर्म करनेवासे काशी रहने नहीं पाते, जहां कहीं जांय वहीं धक्के खाते, चीर पायो पधर्मी तीम घने या प्रवार के प्रत्याचार चीर प्रत्यारणन करने नामते तब पिश्तन हितकारी सरारी ग्रारेश्वारी की जगत में पाते हैं भीर पापाचार का नाग कर धर्म का प्रचार करते हैं भीर पपने सक्ती के इ: ख गाना प्रकार से चरते हैं। पोछि से भी प्रसु की वैशी करनी इस घरनी में गाय गाय कर भक्त जीग भवसागर पार उतरते हैं। इस प्रकार धनेक बार भवतार कोते हैं, उन में एक बार भवतार क्षेत्रे का यह ब्यौरा सुना है, कि नारद ऋणि ने क्षोध कर छन की याप दिया इस कारण प्रभू ने अग में भवतार निया। यी महादेश जी की मुख ने इतना वचन निकासते की पार्वतो की यस्म विधित की काय जोड़ बोली कि के माक्नाय नास्ट ऋषि तो पर-मिमार के परम धनुक्ता भन्न है, इरिभजन में तन सन से सबसीन रहते हैं भाठी जाम राम नाम जयते जगत से विचरते हैं में हाब जीहती और रीम रोम भाष की वर्त्तेया सेती हुं दयाकर किये, भीर मन का संदेश द्र की जिये, कि नारद अर्थ ने कव, कार्ड किस किये, भीर किस प्रकार की अववान

एक समय नारद मुनि नास नाम कपते २ विसायश नास अर्थत के शक धरम मुक्रावन मनभावन खान में का निकासे उम्र खान की निकार देख मनि दाय के चित्त में यह बात समाई, कि यहां बैठ, चपने शम की सेवकाई ककें. यर भीच स्वकाना डान, पाय में मासा से, अव द्व मौचन कमन सीचन में ऐनो गाडी समाधि कागाई कि कई प्रजाद वरस बीत गरी, घर टाठी का एक बाच भी न दिना भीर दूसरे पादार स्थवदार की कीन काई। इन का ऐना कठिन तप देख मन की नन पवरेख करू ने सीचा, कि कहाचित इंक तप के बना नारद परिव मेरा अन्द्राजन कीन सुक्ति राजकीन न कर दें, ची किसो क्य से दम का योग यस नाम की तो सचने की चास की, नहीं ती सद नाम भया, मेरा बना बनाया घर यों की गया, यों सन की सन सीच इन्द्र भेच ने कामदेव का चावाइन विधा, एस के साथ ही मोहनी सरति शहे चिश्वन के मोदनदार कामदेव वदां या पहुंचे दन के चाते दी दम्मदेव ने निशांमन पर से मुख उनुका सुनुकृता कर कथा, चार्य मेरे यास की बैठ आह-थे. महिये कुशम किम है मेट हुए बहुत दिन हुए चिल बहुत समा आ कुर्यो से बाव को पश्चिम दिया। इन्हरेव के संख से यह बात निवस्ति हो कामटेव निक्ताय काम जोड ककी सना कि चार ने जै स्की मुकाया वक सभा थर वहा चनुग्रह दिखमाया, यव में बैठने के प्रश्ते भाव को कीई आजा याब, भी। छते भाट कर साथ इस चाय के चतुवड को चयने वर भीर कहाने, चाहता भ' । बंद मन की कास क्यों प्याम बुमार्नवादी कामदेव वे बंदन क्या चक्रत की वृष्टि से श्रम् का कुल नाया मन कामक का विक कठा, चीर मै क्या क्या क्या को थे, कि है भाई बाम, सुम भेरे वड़ी संवाद की, संवादनी वकार करा शक कर सर्द्र क्रम करने की समार्च भववान ने तुन्हें दी है, पक्षी मारम सुनी जन कर ऐसा गाइ बढ़ता कि की दूपरे से सर्थी प्रथता देखा यहता तन तन में तुम्हें कोड़ चीर कियो दूसरे की पाह नहीं बनकता, औ हे आई इस सड़ी सुधा पर एक नहीं चढ़ी विपत था पड़ते है नारद अन्ति-

रायुं दिमास्य में साथ समाधि सगाय मेरा रम्हादन सैने की ठदशय बैठे हैं, भी तुम जाय तुम सन का प्राप्तन कर स्थापन करों तो मेरे मन का प्रखासन हो। टोशा—देवराल के स्थन सुन , बोस्यों काम रिसाय।

> आजुडिं में नारद मुनिडिं. अदहीं नाच नचाय ॥ स्नान ध्वान सब कोड़ के . यस जे हैं बीराय । कि बन के बनितान चनु . से हैं साज गंवास ॥

क्र देव से यह बचन कह का मदेव अस्तक नवाय पपने मित्र वसन्त ऋतु भो साथ से जिस स्थान पर नारद महान ध्यान बांध केंठे थे वहां का पहुंचा, जाते दी दर्श वसना करतु का गई, घीतन मन्द मुगन्ध बायु बदने नगी, मूखे काठ भी करिया गये, और पक्षव कुली से भर गये, मूतकी में भी भी सा चागया, और सब स्वानी में जानंद छा गया, जीवधारियों का कौन कहै जता मुकों का मन भी चक्रता देख पड़न कगा, कता सक्षक कहक पेड़ी चौर पेड़ सुना भाग बताची से निपटन बारी, कोयकों की जुड़क वियोगी जीमियों के हिय में भूकती सभी सब बेबस हो योग कोड़ सगोड़ हो। गरी, पर कामदेव ने इज़ार की एक भी नारदमुनि पर न चना, उन का आसन तनक भी न दिना तब काम द्वार मान भट उन के चरणों पर जा गिरा चीर मनुदार कारने सागा, सब समाचार कद चमा मागी, नारद सुनि ने बामदेव का अधन सुल सगन भी उस की विदा किया, भीर भपन सन में यह विचार किया कि इसी मामदेव ने चराचर संसार को वस किया, पर तौ भी इस का किया मेरा क्षक न कृषा, सुक्षेती इस का पाना धीर बान चनाना क्षक भी न भासम कुषा। जब इस ने पाप पाकर कहा तो मैं ने जाना, ऐसे सोच विचार नारद स्नि वडां से छठे, भीर चसे चले इन्द्र को सभा में जा अपना यह सब हतान्त वर्षन किया, नारद की के उम गुण को मृन उन्द्र ने उन को वहाई की धीर करा कि कि कामदेव ने भिव के पासन को डिगाया, उपेभी पापने पराया, धन्य को अन्य को, नारद सुनि क्लू जो सुव से बानो प्रयंना सुन ऐने फुले कि तन में नहीं समाते थे। इदिंगुन गाना भूज पाप का मूज्य इंकार का एक तून बांध विश्वभधारी विषुरांशी के पास लाय पपनी मन भाई बात मुनाई, भीर प्रभुतां ई सनाई। सी विक्ती ने उत्का बचत पुन मगन की सिताई को रोति से समभाया, कि हे मार्ड नारद तुमी मेरी दोहाई, मुमा से यह बात अधाई पर विभुवन नाथ के पास यह बात न कहियो नहीं तो चच्छा न होगा,

चर जिन की का उपदेश नारद सुनि के सन में न पाया, में नड़ां से उठ कहा में कुछ नान के पास प्रश्ना सुनि की पास से पहुंच ही नहीं और नेहां लास काम देन के जीतने को बात चकाय सिर उठाय में है। जी हर ने नानद सुनि की घिममान मानी बानी सुन जाना, कि नारद द्वानी घिममानी हो चनी, तो घन हस का यहा योच्न करना चाहिये, ऐसा मन ही मन विचार नारद जी का सतकार कर बिदा किया और उन की राह में यह की का ठानी, कि नारद मुनि को एक परम सुहानन नगर देख पड़ा जिस के पानी इन्द्रपुरी की घोमा घीकी पड़ जाय, वहां के राजा की चौदह बरम की एक जन्या को देख मोहत हुए, वह तो सपने घर चनी गई पर सुनि के घरीर में काम की चाम क्यापी, ध्यान जान सब मून गया जाम सुशंग का विघ नख शिख हो भवा, तब तो की उस नगर की गिलयों में घून छानने कभी रे चैत चाने तो समझी और कहें कि मेरे मन की क्या हो गया!

सवैया—जपनाप ननोरन सो नक छो जुनसी तज जसस ठानतु हैं।
गुरचान सहावत एड़ को चांकुस ताहू को चान न सामतु हैं।
भुक्षि भूमें भुकें जभको न दक्षे विद् चागिहि को पद धारतु हैं।
जिहा साम को छप विकोन विना सन मेरी सतंग हरावता हैं।

ऐशा बीच बैठ जाते भीर कड़ने जगते, कि काम की तो प्रथमण सनते थ पर यह बच्चवाण है, हा! इस में इतनी गर्मी कहां से भाई, हो न ही शिव जो की तीसरी भांख की भाग इसी में रह मई है, वही सुमी जकाए हाकती है, योतन बायु, कमन, भांद खस भादि से भीर दाह तो कुछ कम होली है, पर यह काम की दाह तो सी गुन भीर बढ़ती है हा! क्या कर कि से कहूं, कीन सने, दूसरा इस दुख को क्या जाने, जिम तन को सोई तन जाने। सवैया—जाय न मंत्र ते यंच ते मूरि ते, आंड कहीं नहीं जात विद्या है।

भुष्यो कहा तन मृख्यो पिछो, सन देखि कहें जन वीरों सहा है।। हाय दर्श जनु का हू को होय, कहे रिविनाध भयंदी व्यथा है। बोबों कहा चन बोब्यों मधी, यह कामकथा की कथा चवंदा है।

जिर करते हैं कि चय काम। मैंने तेरा क्या किणारा है की तूं सुमी देखाँ सताता है, मेरा सुनि मेघ देख सुमी विव शो नहीं कानता कि विक्का वैर चेत कावी से की डाकता है, क्या सब काच सुमोपर कुछा देगा ? प्रकाद भी ती उस राजकुमारी पर चका, कि उस का मन मेरी भीर चले, एक बार ती भार कर सुकी देखे, जो वह तेरा वाच खाय घवराय इस समय मेरे शों के आ आय तो तेरा सुकी वाच मारना हुनारना की जाय।

नारह की ऐसे बका भाका रहे थे कि इतने में यह बाम सुनी की राजा क्ष दाक्षक्रमाशी का स्वयस्वर करने वाका है, तुनत उक्टे पांव फिहे, करि के पाम थाये चौर चपने सन की सगन कर हिस यतन करने की पार्थना की भीर कथा कि है महाराज इस मेरे काज में, चाज महाय मृजिये, चाव चयना क्य मसे टीजिये जिम में, खयम्बर में व्याशी राजकुमारी मुक्ते कोड चौर चौर शोड न दे. यह वचन सुन प्रभू मगन को सुमक्षराय कर कीले, कि है नारद जिन्द ती तुन्हारा भना दीगा, में यह प्रवस्त्र कक्षांगा निसन्दे ह ममाज में जाची, तमारे कव देख अब राजाची का भेष नि:शेष की कायगा, तुमारे कद सा कद न किसी का इचा, न कीमा, ऐसा कक कीतुकी प्रभु में नारद की सब देश ती अपनी सरीखी और मंश बंदर का मा कर दिया । नारद मुनि की चयन मंत्र की क्या सुध थी देव को शोभा देख भाट डठ खयक्वर में अपां बड़ें र महाराज बैठे थे जा पकड़ के बैठे, रन को कुरूपता देख कोई न हंगा सनि सान नवीं ने प्रयान किया. कन्या का वाप चाप चा इन के पाची पर खना । इस मस्य समाज में शिव जी के दी गन बाह्यण का भेख धर केंद्रे थे. डमें क्रिव को ने नारद की का चरित्र जानने को सेआ था वे नारद के विचित्र क्ष की देख कट करने भीर कपने गरी, कि बाप बाप पस कि मारी दाजकारा दूसरे की भीर क्यों ता की गी, निख्य करें इन की बरे भी ऐसे कह जुक इसने भीर मुलि के मुख की बार २ लाकने करी पर नारद मिन के सन की सगर तो बन्धा में ऐशे मगर थी कि उन की पावने मं भी पावने महत की स्थित प्रदे, कत्या की भीर एक टक ऐस देखते थे कि सानों उसे भावीं ही बै बीब सेंगे वह बारी भोरो राजक्राशारी दन के बनावट चीर आंखों की खनावड भीर चासन में उचकावट देख ऐसी इसी, कि दूरही से दूसरी भीर फिरो, चीर साचात सच्चावित करो सैठे थे वकां का पड़ी चीर वकीं चड़ी चना को वड़ें चाव से खनीं को बना। उस घड़ो नारद मुनि पर ऐसी काड़ी पड़ो कि बड़ो इड़बड़ी में पड़ जल दीन मीन के ममान तड़पने सरी। की दशा देख शिव को के बे दोनों गन, जिन्हों ते इन की मिर्साको को को ले, मुनि जी। सवा अपना संइ शी विसी गड़ ही से सा के देखी, तव राजकाश

च्या हते की आंधी। यह बचन सुनं नारद सुनि ने पवना मुंह वाणी में देखी ती बानर मा देख परम कोश्वित इप छन्हों ने पश्ची ती शिव औं वे सन दोनी गनीं को प्राप दिया कि रे दृष्टी तुसन यह बात म्कि एडमे न अगारे, सभा में मिरी इसी कराई, इस जिये तुम दीनां जा कर द्वदाई राख्य कुल में क्षत्रा की आई थी. भीर कब तक रहाराई के बाध न अभी तब तक तुम्हारी गति म भी, इस प्रकार नारद जी छन दोनों की आप दे थाय वैक्रफ की ताक जगा चने, प्रभु इस राजवन्या को चिये जाते बाट की में भिने, हम की देखते की नारद स्नि का क्रोध भौर जगा, मानी वनती भाग में की पड़ा आया से बाहर हो गये, पांखें जान हो चाई, धरीर कांपने भीर घोठ फड़कने सगा: का की यह दशा देख, प्रभु न मन को मन अवरेख सुप्रक्तरा अब प्रका, ह नारद नो कचां चले, व्यों घरराये से छो। इतना यचन सन नारद सुनि प्रमु को घोर चाय उठा छुदर भौर छाट कर बोले, कि तेरा मंच आरने चकी, शकी मू राड में मिना, चब चपनी करनो से, मुक्ती दोव न दे, तू बड़ा अपटी चय-स्तार्थी के, समुद्र मध कर देवनाची ने वतन निकाल, तब तू ने छव अर असुरों को सद भीर सहादव को विष दे आय कक्सी को असे उनशारो करने धरक गया है, चच्छा भाज तू ने अले घर वायन दिया है, अब चयना किया कायो काम ऐसा पाता है, कि फिर किसी की ठगरें न जायगा, काल की से सदा हो के जिये में तेरी बान छोडाये देता हूं, मन्धरना, बस चुव खड़ा रह, तू ने मेरा जीवन पत्र भारी किया, मुक्ती ती विरच की पांग में जब तक जीना है जसना है, घव तू भी सी, तू ने मुक्ते मानुषीकच्या के किये उना, इस साहध तुमी भी मानुष जन्म यहण करना पड़ेगा, तूर्न मेरा सुन्त बानर सा कर दिया, को बायरों में की तरा साज मरेगा, और तूर्न छन कर मुझे पिकारी का विश्य मणाया, दम कारण मू भी पियानी के विश्व की चान में पड़ेशा और र्ज्ञंगन यक्षा हों में भटकता फिरेगा। नारद सुनि के क्ष्म शाय की अभवान ने भाव निर मार्थी पर निया भीर नरतम धर देवताची का साल किया। सब असु ने जारद मुनि पर से अपनी साया खोच जी, तब उन की आन पुचा नाय में चाते को चालां नोची कर कीं, सारे कर चीर काल के सक की अहै, कार्टिये तो कोडू नहीं. "काडि काडि एम् सामा निष्का । सम चयराथ समी भगवाना।" काद कट कव से प्रभु के चरनी पर गिर वहें। भौर निकृतिका विश्वचा र कर कड़ने करी, है एसु तेरा भाव आठां हो, हो समदान में मारह. की का बचन सन भडा।

भौपार-नरतन यहन हेतु मुनि मारी, पतिश्रय रच्छा रही हमारी।
सी तब श्राप सुनी मुनिराया, श्राप न है बद मी पर दाया ॥
नरतन यहन करव हम जाई, घरती भार हरव हरखाई।
मोहि समान शंकर जिय जानी, भजह तिनहि तुम सहित भवानी ॥
कोधित हो दीनेड जो श्रापा, मो तब पाप कृटि श्रिव जापा।
हापानिश्रान श्री भगवान। नारद मुनि को इस प्रकार समकाय बुकाय
समार ध्रान हए। तह नारद मुनि भी धित सिकात हो श्रपने ह्यान को गये।

इशी बीच ख्यंभमत भीर उस को स्त्री सतस्या जिन से इस जगत के सब सन्ध डत्यन इए हैं, बहुत कांच तक राज, भीर भीगकर विरक्ष ही, भपने अनुस प्रत को राज दे नैसिवारिमिश्रिक नाम स्थान में गये, भीर वहां दोनों स्त्री पुरुष प्रम चतुरित के साथ जगदीश्वर की भित्र करने स्त्री, तीथीं में खान किया. बाह्यणों को सब कुछ दान दिया और दिन रात भगवान का मुनगान किया । इतने में मन जो मधाराज के मन में एक बार यह बात समार्र, कि जो परव्रद्धा भवने भंग से शिव ब्रह्मा भीर विश्वा की बनाता है, की सब को देखता है पर किसी की देख नहीं पडता, उस का दर्शन हो तो जबा सफब मनोरय पूरा हो, नहीं ती सब क्षक घध्रा रहा। ऐसा विचार मन को धीर उन की स्त्री सत्य रुपा तप करने शरी, खान पान तज बहा के ध्यान में तन सन से सबसीन इए भीर ऐसा तप किया, कि शिव भीर ब्रह्मा चनेन बाद धन के पान चाए, वर मागने की बहुत लुआया, पर मनु की के मन में एक भी न समाया, उन्हों ने यही बाव बागायी, कि जब वही प्रभु दया करेगा, कि जिस को साया ने सब को लुभाया है, तभी काज सरेगा भीर सीचा कि यद्यपि बेद ने उसे पन ख पगीचर गाया है, ती भी भक्तों की वस बताया है, सी जो मेरी भिता पूरी छोगी तो वह प्रवस्य मेरा मनोरध पूरा करेगा, प्रान रहते रहे जाते जाय, हाय कव मेरे सहाय प्राय दर्शन देंगे भीर मनीर य पूरा करेंगे। कभी २ ध्यान छुटता तो कहते कि " हेरी कक्षा नैन ते कार्नोक गोविन्द। प्रभु पावन में पतित श्री, क्रमीं अवचा हन्द। क्रमीं प्रवृत्ता हन्द स्वामी सेवक के नाते, यह सम्बन्ध विचार देव में चाहत वातें। ती दीन चनाव वर्व विधि भी तब चेरी। पछी नाय पद में पास दास वपनां कर हेरी।"

"दाया घन के गगन है, गुन मन तब न गनाहि, सति चनुमान मुनिन के,

निवमन मार्डि जनार्डि। निवमन मार्ड जनाडि जनत ज्यी जननिषि जन जन। वनि वनि वहरि विचाय जाय जर्ड नर्डि बानीमन। दुर्गम दीन दयाना देव दावनि तव माया, मोर्ड सव सुर सिंड तंत्र सेवन सन दाया।"

इस प्रकार मन की के मन का सगन घीर तप का यतन देख प्रभु सगन इप, घाकाय वानी हुई कि बाद बाद मन तुमने मेरे पर सची कव जगाई घीर पूरो भित्त देखाई, मेरो दया तुम पर हुई, मांगी क्या मांगते हो, इस बचन को मुनते ही मारे घानन्द के मन जी का गका भर घाया, गद गद हो हाथ कोड़ बोले, हे भित्त हितकारी दुखदारी सुरारी यदि तुन्हारी दया मुभर-पर हुई तो घाय का को रूप सदा शिव मदा ध्यावते घीर वेद पुरुष निषे सगुन खरूप कह गावते, उस पपन रूप का दर्शन मुझे दीकिये घीर सतार्थ की जिये। घीषाई—मुनत बचन भक्तन हितकारी, प्रगटे राम इप प्रभु धारी।

खाम वरन समकत मृठि देश, जस बहु नीर भरा नवमेशा।
जाजत घरद चन्दमुख देखी, वर्रान सकी निष्ट क्य विश्वेषी।
कांबुयीव भूज दण्ड विद्याना॥ चर कीस्तुम मिन मुन्दर माना॥
पीत बसन विद्युत सम छाजे, मुजुट तेज किस सूरज जाने।
बाम भाग सीहें जगरानी, चादि शक्ति सीता सहरानी॥
प्रभु रच्छा सिर जे जग जोई, वर्णन ताम कर किसि कीई॥

हे पार्व तो प्रभु ने जो रूप घर मनु सत्य रूपा की दर्शन दिया इस आंको को वर्णन करने की सामर्थ्य मुक्ते नहीं, यह मन्द्र हास करती प्रभु की मूर्यत जब मूरत पातो है तब मुध बुध सब जाती रहती है, जी में यही पाता है, कि बस चुप मार सोचा हो करिये।

डम मूरित के वर्णन करने की सामय किस की है, डम समय ब्रह्म पादि सब देवता की ग वहां चा रहे थे, सब दर्धन रस चाखने में गुड़ चिंडिट में की थी, किसी का तन मन की ज़क मुध बुध न थी, डम समय ममु सतक्या जी की तो ऐसी दया हो रही थी कि जैसे कीई रंक बड़ा धम या बाबबा ही जाय, दोनों को हक बकी कम गयो थी। नयनों में प्रेम का आंमू डबड़वा रहा या, गला भर गया था घरोर पर का बस्त ज़ुक्क कंप रहा था चाहते थे कि कुछ बोलें पर कहां बोला जाता था, दोनों दंडवत करने की प्रभु की चरनो के चारी गिर पड़े। तब भक्त बक्त प्रभु ने च्यन निज कर कमक से मनु जी की उठाया, चादि प्रक्ति भवानी होता महरानो ने सत्यक्या की

बढाया, चौर प्रभु ने कवा कि के मनु की तुन्हारी सगन देख कम तन मन सै सनन पूर हैं, यब अपने मन की बाद वादो, ऐसी कोई बात नहीं जी मागने पर तुन्हें इस न दे सकीं, प्रभु का यह बचन चन मनु की सगन ही बीसे हे नाथ भावने १स भनाथ के साथ पर शांध दिया वक तीर मनाथ किया । मेरी सब बामना प्रो पुढ़े, पान क्या वच रही कि लागुंधर कां एक बात मन में है, मंद से बदतो नदीं बहुच पाती है कोटे मंद से बड़ी बात कीने कादूं मी इया निधान चाप घढ घट खापी चाप चन्तर्यामी खामी हैं, मेरे मन की चाह भाष से सीयो नहीं रह सकतो, यदि पूरी करने याग को तो पूरी करिय कत-ना बचन सुन प्रभु मुस्कुरा के सतद्याजी की भीर देख वीजे, हे सत्यक्याजी मन जो तो यह चाहते हैं कि मेरे समान गुन किय का निधान मन्तान उन की हों भव चाप कि विधे क्या चाहतीं हैं, यह बात सून मत्य द्वाजो बोलीं, कि हे प्रभु इस दाखी की भी यही कांका हैं, है भक्त दिनकारी मुरारी तुमारी वानिक शीवने से मुक्ति यह बात तनिका भी कठिन नहीं साज्य घोता। प्रत्यक्षा को से यद दचन मुन प्रभु ने सन में छन एक कुछ गुन सुमुखारा कर के काशा कि हे मनु जो, अपने समान प्रभाववान आन मन्तान वार्षा जोज्, और कर्षा पार्क, भी में चाप सतद्भवा के की खरी जन्म से चाप का पुत्र दोड़ ना चौर मर कीका कर गा।

सतनी कथा कर की याच क्का मुनि भरदाज जो में करने की, कि हें भरदाज से शिव जो की हम दोनों गर्भी का हतान्त मुनिये जिन्हें नारदे जो यह क्रांप दिया था, कि तुम दोनों राज्य हो पोगे। वे दोनों पुन क्का करि के बंध में स्वतार के राज्य हुए वे पुन क्का माज्य कहा जो के बेटे थे, रन के बंध चक्को का हाल यह है, कि ये महान नगर को मसोप एक क्षांन में सामन वांच तपत्था करने कैठे थे, वहां नगर को बड़ कियां खेल ने जातो थीं, धौर दन को वहुत सताती थीं य कितनाहूं कि कि कियां भीर सुड़ कियां देते थे सुद्ध भी न हरातो थीं, पर संगुनियां नचाय मुंद विराय छन्हें विदानों थीं, कामी महादो मांगन के मिस उन के पान जाय मुंद विराय चातो थीं, भीर कामी दोता मजारा ले उन के पान जाय मुंद विराय चातो थीं, कामी पाचचार गुईं या मिल हम के पान जा दाय दिखाने के वहाने बैठ मन वहणाती थीं, भीर विव खिल खिल इंगतो थीं पांच मिचीवल खिल में कोई हम की पीठ पोद वैठ गोदयों की दोठ बचाती थीं, भीर तब हन के कान में टू

कार के इंचती खुठवा कूने भाग जाती की। जब पुनंद्वा की की वहीं ने इस प्रकार बहुत ही सताया तब ती मुनि जी की ब्रीथ पावा, हाथ में जस किया चौर सब कम्बाचीं की सुनाय भाष दिया, कि ऐ राचौं ! खबरदार रिबयी, वाना से कोई वसां खिनाने न चारयो, जो कोई घन यसां आवेगी उसे पेट रह कादिगाः, फिर मेरा दीव न देना। यह ग्राप सुन सब कम्बा सुन की गई भीर पार कीन वकां ठकरती है धीरे ए सब के सब एक ए कर विसकत्त पूर्व, भीर फिर कभी वक्षांन गर्के पश्चनुतृष्य विन्दुराजाकी कन्या इस ग्राप का कास न कानती थी, वह एक दिन बाप से पूछ चाप से भाप पुत्तस्तार मुनि के तथी बन में एखियों के खोल में गई, पुलस्ता ऋषि के सना ख हुई, उन के सामने कोते की उस का रंग कीर का कीर की गया, देक शारी की गई, मूंक पीका हो गया करीना घराधवाने लगा, जाघी में कुछ पोड़ा सी मालूस दीने लगी, यह हास देख वह बारी भीरी राजदुकारी घनराई, छरी कार छकटे पांच फिर बाप के वास चार्ड, सब बात कह सुनाई, यह बात सुन खयबिंदु राजा मन में कुछ गुन उस कत्या को साथ से प्रमस्य मनि के पास चारी, साथ भीड बिर नाय सुनिराय को उस कत्या जा दाय पकड़ा गरे, कुछ दिनों के की तर एस करना की एक पुर हुया, सूनि की ने उस का नाम विश्वका बक्दा, यह बड़ा प्रताची तिकाकी परिष हुए इसी विश्ववा सूनि की के प्रश्न के प्र वा इए जिन को अवैर भी काइते हैं जिन्हों ने तप कर धनराज की पद्धी पाय प्रष्य विसान पाया भीर संका में राज करने सरी।

चव एक दिन धनराज की कानों में कुछ स दायों में कंगन एदने माथ पर मणि जहित ऐसे सुक्ताट दिये कि जिस की जीत से चारी रूथी देव की जीत कम पड़ गई थी, पुष्पक विमान में बैठे पाकाश मार्ग से पिता का दर्धन करने जाते थे, चौर दूर से छन के मूजपों की भागक ऐसी माजूम पड़ती थी कि कैसे दूर दूर्य देव दों। छसी समय सुमाकी नाम राच्य किस की पड़की राजधानी लंका थी चौर वदां से जब भगवान ने मार निकाका तो प्रतास में जा वसा था, प्रपनी वेटी कैस की को रथ पर विद्याय बर के खील में चला जाता था, उसकी बेटी का कप ऐसा था कि रित दार, मानती थी, मानी माज्यात सुक्ती दी थी। सुमाकी ने धनराज की की छम छाठ से जाते संयोगन देखा, देखते ही छम के की में यह बात समाई कि किसी दिस हो है से इस का का की सुगई ऐसी कमद करनी दी है किस में इस है की मुन्दि नाही है

वह भी देशों सम्पत पार्व जैशी कि धनराज ने पाई है। . ऐसा भी व घर औट गया चीर संजीच कोड अपनी कचा से यी कड़ा-कि है बेटो तेरी भवसा थव विवाह योग हुई, चान तक राइ देखता रहा पर किसी योग वर का डियाव न पक्षा कि चाकर सभा से तभी मांगे। घव मैंने तेरे व्याप्ट के किये एक बेंदत खनाया है, है बेटा तू चाव का धनराज के बाप विश्ववा सुनि की बर, मन में खुक न हर, में भी तरे माय साथ चलता हुं पर में दबर घो रहूं-गा, तु मुनि जी के पास जाना भीर भपना रूपदिखा छन्दें सुभाना । ऐना कार कैंबारी को रथ पर, विठाय विश्ववा सुनि के चात्रम के पास जा ; उतार दिया। तन ती वह मूनि व तवीदन की चनी दमी समय विश्वदा भी यन्न कार रहे थे, वह सम्या चपने विता का वचन मान उसी स्थान विश्वा के मनमुख जाय पैर के नखीं में भूमि की खोदती नीचे की ताकती खड़ी पूर्व ! यञ्चमामा में पैठतेशे उस केइप की जीत की चांदनी क्रिटक गई, धरमना फारि सुगल का मह मोट छा गया, सब चचको में चा गरी चौर उस कच्छो भी कम्या की देखने करी। तव विश्ववा की ने पूका भाई तुम औन हो, देव-कम्या वा चएमरा हो, यहां किस किये पाई हो, यह बात सुन कैकसी कुछ समकराई और चुव खड़ी रधी।

दोशा—किश्व म सकत ककु कात्र ते, चक्रण पापनी वात । क्यों क्यों सुनि वनियात है, स्वीस्त्री तिव घवरात॥

काविस—काव स्रांत मृति माद ये ककी यो मुख्यन्द वाकी कन्छ कान्द्रनी की मुख मन्द्र सी करत जात ! कही गुन नागर स्थी सक्ष्म समझ को में पुंचन कान कांच में भरत कात ॥ धरत जकांके जकां पग के पियारी तकां मंजुन सजीठ की के सांठ से उरत जात । वारन ते कोरा सेत सारी की किनारन ते कारन ते मुकता कजारन भरत जात ॥

यह कह जब मत को ने बहुत पूछा तो बोको कि है महाराज चाप चाप हो सर्वेच है, मेरे बाने का कारण मुक्त में क्यों पूछते हैं। तब तो मुन्त की ते नाम गाम चौर चाने का काम सब चपने ध्यान से जान किया, चीर कहा है म्यारो में वन पास खानेहारा मुनि हूं चौर तू दैत्य राजदुनारी मेरा तरा जोड़ कैसे पढेगा पर तूं मेरे पास चास सगाकर चार्ड है हु का त्या में तुक्त से मुंह नहीं मोर सकता, मुक्त में दो पुत्र तुने होंगे, वे होने की तो बड़े नामी बामी चौर जगत विजयो होंगे, पर इस के साथ हो वड़े पापो छत्यातो राखम चीती। यह बात सन मन में कुछ गुन कै जभी ने हाथ कोड़ मर जहां, महां-राज चाप ऐसे मुनि पति से में ऐसे पुत्र नहीं चाहती तथ सुनि ने कहां विल्ला मत कर तरा तीमरा पुत्र को होगा वह परम गुणी योग्य धीर रहुं-नाथ की का भक्त होगा, वह दोनों कुछ तारेगा घीर चमर होगा। यह चुन कै जभी मगन हुई घोर मुनि जी को सेवा में रहने अभी। कुछ जाल बीतने पर हम को गर्भ रहा दस महीने पर उसे एक पहिकोठा पुत्र हुमा, वह हन शिव को कं गर्नों में से एक हा जिन को नारद जी ने शाप दिया या और जिन की कथा पहले कह चुने हैं।

जनमतं ही इस को दम मुंह बीस शुज थे, यही परम हिराबन लग में
प्रमिश्व राजन नाम तिशुवन विकयो राच्यस राजा हुआ, इस के जनम के
समय साजाम में कासी मेच चिर पाये थे, बहुत मयान जा गरकने भीर क्षिर
बरसाने तमे थे, सब पृथ्वी हमसमाने लगो थी, भीर साधु सन्तों का जी पाप
से साथ हराने भीर घबराने जमा था, जिस घर में हसका जम हुआ था हस
ते चारो भीर सियारिनियां बहुत फीकरने लगी थीं, बहे जीर से भांधी चाई
थीं, बवंहर हठने तमी थे, देवतालोग कांपने लगे थे, भीर दुष्ट राच्यलों के सन्त
में मानन्द हमन पाया था। इस के थोड़े भी दिनों के मन्तर कींबासी की
दूषरा पुत्र कुभावर्ण नाम हुआ, इस के जन्म नाम में सियारिनियां का
फिन्नरना भीर हवा का चलना सब रावन के जन्म नमय सा चनचीर भीर
हरावन हुआ था।

अम के भन्तर सुपनखा नाम कन्या पूर्व, इत गुन भीर भी ख में यह भी भाइयों में बदन ही पूर्व तब ती खरें पुत्र विभी षण उत्पन्न पूरी दन के कन्म काक में देनताओं ने पुन्दुभी बजा कर फूक बरसाया जगत में भागन्द का गया, प्रथ्वी में कुछ जान ती भा गई भीर सक्जन साधुभी के जी में भानन्द समझ भाषा।

चव तोनों भाई दिन दूने चौर रात चीगुने बढ़ने स्ती, रावन कुमाकरण ज्यों रे बढ़े त्यों र इन का उतपात भी बढ़ा। ऋषियों के बासकों को कीन चसावें बड़े र तपसियों को भी डिराने चौर सताने स्ती, तपीबन के सृत पश्चियों का गसा सुरेर मरार कर देर अगा दें चौर दोनों भाई बैठ मिठाई सा देर का देर सफाचट कर कार्वे को दाव पार्वे तो सुनि खोग का भी गशां इतार्वे, सभी खेसते र यद्मवेदी निरावें सभी सुनिश्वों की कुटियां बड़ेरिक

खींच से याभी तिवानन के हंची परचढ़ ऐना दुमावें कि छन के फन फून चर्च निर पड़े कभी चक्क और देनी ऐना चकावें कि कितने ; सृति, जांच कान खो बैठें, केवन विभीवन दन दोनों से दूरर हैं "उपनें एक संग नक मादीं। नक्त जीवा जिसि तुन विनगा हैं " के समान दन की रहन और गहन भादीं से विनग थी।

एक दिन से तीनी भाई जैकमी के घाम गये. वह इन्हें देख ऐसी इक्सित क्षृष्ट कि जैसे क्ष्मिको चेनु देख पेन्हा जाती है, जन तीनी की पारी विठा निया, सुख चूंव खाड़ प्यार किया भीर सीख दो कि है वेटे भव तुम स्याने भी चती, ऐसी चान चनी जिन में भपने भाई धने खर के ममान बढ़ाई पाभी माई की यह सुखदाई सीख तीनों भाइयों ने कान दे सनी डन के मन में छेत्री तथा बान बाई कि इन तीनों ने इसी खान प्रतिचा की कि इस की ग धनराज से भो कर को होंगे और उसी छन बनमें जा तप में मन दिया। फिर ती ऐसा तप किया कि कुछ कड़ा नहीं जाता कई इजार बरम निराहार म्य्यं को साम्हने पैर को एक शंगुठेको बना खड़े गई, उच्छ काचा में बराबर णानी में पड़े रहे, और गरमी में पश्चानि तापा किये। इन का ऐसा तप देख देवता सब दंग की गर्दे। रावन अपने एक र हजार बरस का लए एक की ले पर चीम करता भीर पुर्णा इति के समय अपने दाय अपना एक माथ काढ चिन्त कुराइ में पाष्ट्रति देता। ऐसे जब अपने नव माध अपने श्राष्ट्र जात में चाइति किये केवल एक साथ रह गया, चन्त को उनको भी काटने को हाथ लगाया, तो बच्चा नो उस स्थान योन पमट हुए थीर रावन के पास भाकर की ले कि बाह बहा, यब तुझारा तपपूर्णहुना, भीरक्षी गमत करी तुम ने की मस्तक थांग में पाषुति किये वे सब तुद्धारे फिर ही जावें, इतना ब्रह्मा जो के बीक-ते ही उस में बाटे सब मांच फिर भाट निकल पाए, तक ब्रह्मा कीने कहा कि बर मागो क्या चावते ची, जस ने कांचा वावा को सुकी चमर की किये तब मञ्चाको ने कहा ऐ बेटा यह क्या बरदान मांगा, प्रमर होना क्या बड़ी बात है भीर पच्छे २ वर मांगो तब उपने कथा कि पच्छा जो बगर होनेका बरदान नहीं देते तो ऐसा पामोर्वाद दीजिए कि सभी देव दानव बासस मंधर्यं नाग कोई नृंसार सके भौर सनुष्य वानर भादि दूपरे जीवी के किये तो में चाप को बहुत कूं। तब जो बहा को यह मुंह सांगा वरदान करे दे चस के आई कुका कर्ष के याला गरी भीर छस से भी वर सांगने को काला। अख्या जो के उन्स को घोर फिरते हो देवताओं के पेट में घोर भी हरिन सूदने कता घरना गरी उन कोगों ने कोचा कि इस के मारे शोकी कमत कवार कोना तिसपर को बंरदान पाया तो सांभा की विकान कुचा कैसे बचेंगे ऐसा कीच सरस्वती जी की उस पीच के जीभ पर विठाया तब ती वश्र सरस्वती का बी-रायां ज्ञा की से बोना है वावा की मैं तप भीर ज्ञा क्ये करने में बहत दिन कीया नहीं चब दया कर यही बरदान दी जिये की जब तक जीक क: महीना घोजं भीर एक दिन जागं ब्रह्मा की ने यह सुन की में कथा कि "अस सहाय सरस्रति इस जाना " चीर प्रसन्न को मुंक मांगा वर दिया, चीर कस के वास ये दवे पांव विसक गये। ब्रह्मा को के काते की सरस्रती की उस के कीश पर से खिसकी तब तो वह अपनी सुध बुध में आध्या, बहुत प्रकताया भीर हाय मारा कि इाय मैंने यह क्या किया मुक्ते क्या को गाय अपने शंव में कुल्डाड़ा मारा बद्धा जी का वर तो घव भूठ डोने को नडीं, घव क्या करूं चपना शारा किस से कहं यह देवता थीं का काम नाग पड़ता है छन्हीं दुष्टीं ने मेरी मित फिर सुभा में यह वर मंगवाया, भी चच्छा जी में एक का हूंगा, ती इसे बदमा संगा। इसी बीच त्रीत्रद्धा की बिभीवन के पास का पहुंचे चौर वर सांगन को कहा विभीषन जी ने जी बच्चा जी की धन मान चीर कहा है प्रभू क्षवा कर इस दीन की यह बरदान दीलिये कि मेरी घटक भिता श्री रामचंद्र में को वस " जिक्कि योनि जन्मी कर्म वस तक राम वद अनुरागक" यह सुन त्री ब्रह्मा की गदगद हो गये, धन धन कहते वीसे एवमस्तु, इसी चाप चाकाच से देवता भी ने धन्य र कड़ श्री विभीषन की पर प्रूम बरसाया भीर दुन्दुभी बजाई॥

रामचरित मानस।

चौपाई

बंदौं रामनाम रघुवर को . हेतु कुसानु भानु हिम कर को ॥ १ ॥ विधिहरिहरमय बेदप्रान सो . अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥ २ ॥ महामंत्र बोइ बपत महेसू . कासी मुकुति हेतु उपदेसू ॥ ३ ॥ महिमा जासु जान गनराऊ । प्रथम पूजिञ्जत नाम प्रभाक ॥ ४ ॥ कान आदिकवि नाम प्रताप् सहस्रमाम सम सुनि मिनकानी इरवे हेतु होरे इस ही को नामप्रभाउ जान सिव नीको दोहा-नरवा रितु खुपातिभगति,

बरनयुग, वर रामनाम अभवर मधुर मनोहर दोज सुनिरत सुलभ सुषद सब काह् कहत सुमत सुमिरत सुठि नीके बरनत बरन प्रीति बिलगाती नर नारायन सारिस सुम्राता भगति कुति भ कक करना वेभूपन स्नाद तोप सम सुगति सुधा के बनमन मंजु कंज मधुकर से दोहा-- एक छत्र एक मुकुटमनि,

रघुबरनाम तुलसी समुद्धत सरिस नाम अरु नामी नाम रूप दुइ ईस उपाधी को बढ छोट कहत अपराध् देंषिअहि इप नामभाधीना रूप विसेष नामु विनु जाने सुमिरिअ नामु रूप विनु देवें नामकपगात अन्तथ कहानी अगुन सगुन बिच नाम सुसाषी दोहा-रामनाम मनिदीप घर, जीह

नाम नीहं जिप जानहिं जोगी . महासुषाँहं अनुभवाँहे अनूपा .

काककूट फर्क दीन्ह अमी की ॥ ८॥ तुलसी साकि सुदास । भादव मास ॥ १९॥ सावन बरन विकोचन जन जियं बोऊ ॥ १॥ कोककाहु परकोक निबाइ ॥ २ ॥ राम लबन सम प्रिय तुइसी के ॥ ३ ॥ ह्र की व सम सहक संघाती ॥ ४ ॥ मगपालक विसेषि जनत्राता ॥ ९॥ नगहितहेतु विमक विधु पूषन ॥ ६ ॥ कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥ ७ ॥ जीह नसोमति हरि हकधर से ॥ ८॥

भयउ सुद करि उक्टा जापू ॥ ९ ॥

व्यपि नेई पिय संग भवानी ॥ १॥

किये भूषनु तिय भूवन सी को ॥ ७ ॥

सब बरनि पर नोउ । के, बरन बिराजित दोऊ ॥ २०॥ प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥ १॥ अकथ अनादि सुम्नामुझि साधी ॥ र ॥ सुनि गुनभेद समुझिहंहि साधू ॥ ३ ॥ कपद्भान नहिं नाम बिहीना ॥ ४॥ करतलगत न परिह पहिचाने ॥ ९ ॥ आवत हृद्यं सनेह बिसेषे ॥ ६ ॥ समुझत सुषद न परित बषानी ॥ ७ ॥ सभयप्रबोधक चतुर दुभाषी ॥ ८॥ देहरी दार।

तुकसी भीतर बाहर हु, जों चाहसि उजियार ॥ २१॥ बिरति बिरंचि प्रपंच वियोगी ॥ १ ॥ अक्य अनामय नाम न रूपा ॥ २ ॥

साधक नाम नपहि कय काएं जपहि नामु जन आरत भारी रामभगत जग चारि प्रकारा चहू चतुर कहुं नाम अधारा चहुं युग चहुं श्रुति नामप्रभाज दोहा---सक कामनाहीन

पेमपीयुषहद, नाम अगुन सगुन दुइ ब्रह्मसङ्गा मोरे मत बड नामु दुहूं ते प्रौढि सुजन जाने जानाई जन की एक् दारुगत देषिअ एक् उभय अगम युग सुगम नाम तें ष्यापकु एकु अबिनासी नस अस प्रभु इदयं अछत अविकाश नाम निरूपन नाम जतन तें दोहा-निरगुन तें इहि भांति बड

काहउं नामु बढ राम तें राम भगत हित नर तनुधारी नाम् सप्रेम जपत अनयासा तापस तिय राम एक तारी हित राम सुकेतुमुताकी सहित दोष दुष दास दुरासं भंजेड राम आपु भवचापू दंडक बन प्रमु कीन्ह सुहावन निर्सिचरनिकर दले रघुनंदन दोहा-सबरी गीध सुसेविकानि नाम उधारे अमित षक

मानी चाहरि गृढ गति जेऊ . नाम जीह लिप जानहु तेऊ ।। ३ 🛱 होहि सिद्ध अनिमादिक पाएं ॥ ४ ॥ मिटहिं कुलंकट होहिं सुवारी ॥ ९ ॥ मुक्ति चारिउ अनघ उदारा ॥ १ ॥ ज्ञानी प्रभुद्धि विलेषि पिआरा ॥ ७ ॥ किल बिस्नेषि निर्दे आन उपाऊ ॥ ८॥ रामभगतिरस्कीन

> तिन्हडुं किये मन मीन ॥ २२ ॥ अकथ अगाध अनादि अनुपा ॥१॥ किय नेहि युग निजयस निजयूते ॥२॥ कहउं प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥३॥ पायक सम जुग ब्रह्मविवेक् ॥॥॥ कहेउ नामुबड ब्रह्म राम से ॥१॥ सत चेतन घन आनंदरासी ॥६॥ सक्क जीव जग दीन दुषारी ॥७॥ सोउ प्रगटत जिमि मोक रतन तें ॥८॥ मासप्रभाउ अपार निजाबिचारअनुसार सहि संकट किय साधुं सुवारी ॥१॥ भगत होहि मुद्रमंगकवासा ॥ २ ॥ नाम कोटि पक कुमति सुधारी ॥६॥ सहित सेन सुत कीन्डि बिबाकी ॥॥॥ दकइ नाम जिमि रिव निश्चि नासा ॥९॥ नामव्रताप् ॥६॥ -भवसयमंजन जनमन अमित नाम किये पावन ॥७॥ मामु सकलकिक कुषनिकंदम ॥ ८॥ सुगीत दीन्हि रघुनाथ वेदविदित गुनगाथ

11,58 11

राषे सरन जान सब कोऊ ॥ १॥ सुकंढ विभीषन दोऊ राम लोक बेद बर बिरद बिराजे ॥ २ ॥ मेवाजे 🕝 अनेक गरीव नाम सेतु हेतु श्रम कीन्ह न थोरा ॥ ३ ॥ बटोरा भालुकापिकढकु राम कारहु विचार सुजन मन माही ॥ ४ ॥ सुषाही भवासिधु नेत नाम सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥९॥ राम सक्षुल रम राबनु भारा गावंत गुन सर मुनि बर बानी ॥६॥ रजधानी अवध राम् राजा बिनु श्रमु प्रबन्न मोह दलु नीती ॥७॥ सुमिरत नामु सप्रीती सेवक नाम प्रसाद सोच नहिं सपनें ॥८॥ फिरत सनेहंमगन सुष अपने बरदायक बरदानी दोहा-अहा राम तें नामु बड, लिये महेस जिय जानि ॥ २५ ॥ रामचरित सत कोटि साजु अमंगल मंगकरासी ॥ १॥ अबिनासी संभ नामप्रसाद नाम प्रसाद ब्रह्मसुष भोगी ॥ २ ॥ मुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी जगप्रिय हरि हरिहराप्रिय आपू ॥ ३ ॥ नामप्रतापू **अ**ने उं नारद भगत सिरोमनि भे प्रहलादू ॥ १ ॥ नाम जपत प्रभु की ह प्रसाद् पायेष्ठ अचल अनूपम ठाउँ॥ ९॥ ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाऊँ अपने बस कारि राषे रामू॥ ६॥ सुमिरि पवनसुत पावन नामू भये मुकुत इरिनामप्रभाउ ।। ७ ॥ अफ्र अजाभिलु गजु गनिकांक रामु न सकहि नामगुन माई ॥ ८॥ न(मबडाई कहुउं कहां लगि क्लि कल्याननिवासु । दोहा नाम राम को कलपतर, तुलसी तुलसीदासु ॥ २१ ॥ जो सुभिरत भयो भांग तें, भये नाम जापे जीव विसोका ॥१॥ चहु युग तीमि कारू तिहुं लेका सकलमुक्कतफल रामसनेहू ॥ २ ॥ बेद पुरान संत मत द्वापर परितोषत प्रभु पूर्ने ॥ ३ ॥ च्यानु प्रथम युग मण बिधि दूर्जे पापपयोनिधि जनमन मीना ।। ४॥ कालि केवल मलमूल मलीना सुमिरत समन सक्तल जगजाका ॥९॥ नाम कामतर कोल कराला हित परलोक लोक पितु माता ॥६॥ रामनाम किल अभिमतद् । ता एक् ॥ ७॥ र। मनामअवलंबन नहि कालि करम न भगतिविवेक् नाम सुर्भात समरब इनुमान् ॥८॥ काल कपटनिधानू कालमेमि

नाम नरकेसंरी, कनककासिपु कलिकाल। दोहा--राम नापक जन प्रहळाद जिमि, पालिह दलि सुरसाल ॥ २७ ॥ भाय कुभाय अनव आलम हूं

सुमिरि सो नाम रामगनगाथा मोरि सधारहि सो सब भाती राम सस्वामि कुसेवक मोमा कोकहं बेद मुसाहिब रीती

गनी गरीब ग्राम नर नागर

स्कबि क्कबि निजमतिअन्हारी साधु सुजान सुपील नृपाला

सुनि सनमानहिं सबहि सबानी प्राकृतमहिपालसुभाज यह

निसोतें रामसनेह

दोहा-सठ सेवक की प्रीति रुचि, रिषहि राम कृपाल । उपल किये जलजान जेहि. हों ह कहावत सबु कहत, साहित्र सीतानाथ सा.

अतिबांड मोरि ढिठाई षोरी समृश्चि सहम मोहि अपडर अपने . स्नि अवलोकि सचित चष चाही

कहत नसाइ होइडि अतिनीकी . रहति न प्रभाचित चुक किये की .

जेहि अघ बधेष्ठ स्याध जिमि बाली .

सोइ कारतृति विभीषन केरी ते भरतिह भेंटत सनमानें

दोहा- प्रभू तरुतर कपि डार पर, तुलसी कहं न राम से, साहिब सीलनिधान ॥ निकाई राबरी, राम

नाम जपत मंगल दिसि दस हूं ॥ १ ॥ कर्गे नाइ रघुनायहि माथा ॥ १।॥

जासु कृपा नि कृपां अघांती ॥ ६॥

. निज दिसि देषि दय।निधि पोसी ॥ ४॥

. बिनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥ ९ ॥

पंडित मुढ मलीन उजागर ॥ ६ ॥

. त्रपहि सराहत सब नर नारी ॥ ७ ॥

. ईसअंसभव प्रम कृपाला ॥ ८॥

. भनिति भगति मति गति पहिचानी ॥ ९॥

जानि सिरोमनि कोसल राज ।। १०॥

को जग मंद मिलन मित मो तें ॥ ११॥

सिचव सुमति कपि भालु ॥ राम सहत उपहास ।

सेवक तुकसीदास ॥ २८॥ सुनि अघ नरकहुँ नाक संकोरी ॥ १ ॥

सो साधि राम कीन्हि नाहि संपने ॥ २ ॥

भगति मोरिर्मात खामि सराही । ३॥

रीझत राम जानि जन जी की ॥ ४ ॥

करत सरित सय बार हिए की 11 9 11

किरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली ॥ ६ ॥

सपनेह सो न राम हियं हेरी ॥ ७ ॥

राम सभा रबुवीर बषाने ॥ ८॥

ते किये आपु समान । है सबही को नीका।

जीं यह सांची है सदा, तो नीको तुष्टसीक ।। एहिं विधिनिज गुन दोष कहि, सबहि बहुरि सिरु नाइ ।

बरनउं रघुवर विसद नसु, सुनि किकलुष नसाइ ॥ २९ ॥ नागवित्रक नो कथा सुहाई . भरद्वाल मुनिवरिह सुनाई ॥ १ ॥ कहिटी सोट संबाट बषानी . सनह सकल सजन सुषु मानी ॥ २ ॥

कहिंहीं सोइ संबाद बचानी . सुनह सकल सजन सुजु नाना ।। र ।। संमुकीन्ट यह चरित सुहावा . बहुरि कृपा कारि उमिह सुनावा ॥ र ॥

सोइ सिन कागमुसुंडिहि दीन्हा . रामभगत अधिकारी चीन्हा ॥ ४ ॥

तोहे सन जागबिकक पुनि पावा . तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥ ९ ॥

ते श्रोता बकता समसीका . सबदरसी कानहि इरिलीका ॥ ६॥

जानींह तिनि काल निज ज्ञाना . कारतलगत आमलक समाना ॥ • ॥

सीरी ने हरि भगत सुजाना . कहाई सुनाह समझाँह विधि नाना।। ८।।

दोहा—मैं पुनि निज गुरु सन सुनै।, कथा सो सूकरषेत । समझा निह तिस बालपन, तब अति रहेल अचेत ॥ स्रोता बकता ज्ञानिनिधि, कथा राम की गूढ ।

किमि समुद्धे यह जीव जड, काकिमलग्रसित विमृद्ध ॥ ६०॥

तदिप कही गुर बारिह बारा . समुझि पर्श कछु मित अनुसारा ॥ १॥

मानाबद करिव में सोई . मारे मन प्रबोध नेहि होई ॥ २ ॥

सस कछ बुधिबिबेकवल गेरें . तस काहेडा हिय डार क प्रर ॥ ३ ॥ किन्द्रियोक्स्यात्रवाचित्रवाचा स्था भवसरितातरनी ॥ ४ ॥

निजर्सदेहमोहभ्रमहरनी . सरी कथा भनसरितातरनी !! ४ !!

बुधिबिश्राम सक्तलजनरंजनि . रामक्षणा काल कलुध विभाग ॥ १॥ ।

रामकथा कि कामद गाई . सुजन सजीवनमूदि सुहाई ॥ ७॥

सोइ बसुधातल सुधातरंगिनी . भयभंजनि अमभेक मुंजीगिनि ॥ ८॥

अपुरसेन सम नरकानिकंदिनि . माधुविबुधकुलहित गिरिनंदिनि ॥ ९ ॥

संतसमाजपयोधि रमासी . विस्तभार भर अचल छमासी ॥ १०॥

जगगन मुद्द मिस जग नमुनासी . जीवन मुक्ति हेतु जनु कासी ॥ ११ ॥

रामहि प्रिय पावाने तुळसी सी . तुछ।सिदास हित हिय हुछसी सी ॥१२॥

सिवप्रिय मेक्कसेकसुता सी . सक्कसिद्धिसुषसंपतिरासी ॥ १३ H

सदगुन सुरगन और आदिति सी . रघुवर भगति प्रेम प्रसमिति सी ॥१४॥ दोहा—रामकण मंदािकान, वित्रकूट चित चार !

तुलसी सुभग सनेह बन, रघुबीर बिहार ॥ ६१ ॥ सिय संतसुमितितिअ सुभग सिगारू ॥ १ ॥ रामचरित चिंतामान दानि मुक्ति धन धरम धाम के ॥ २ ॥ अगमंगल गुनवाम राम के विवुध बैद सब भीम रोग के ॥ ६॥ सदगुर ज्ञान विराग जोग के बीज सकल इत धरम नेम के ॥ ४ ॥ जननि जनक सिअरामपेम के प्रिय पालक परलोक लोक के ॥ ९ ॥ समन पाप संताप सोक के सिचव सुभट भूपतिविचार के कुंभन कोम उद्धि अपार के ॥ ६ ॥ कामकोह कलिमल करिगन के केहरिसात्रक जनमनबन के ॥ ७ ॥ . कामद धन दारिद दवारि के ॥ ८॥ अतिथि पुज्य प्रियतम पुरारि के मंत्रमहामनि बिषयव्याल के मेटत कठिन कुअंक भाक के ॥ ९॥ सेवक साळि पाल जलधर से ॥ १०॥ हरन मोहतम दिनकरकर से सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥११॥ आभिमतदानि देवतरुवर से सुकाबि सरदनभ मन उडगन से रामभगत जन जीवनधन से ॥१२॥ सकलमुक्तनफल भीर भीग से जग हित निरुपाधि साधु लोग से ॥ १३॥ सेवकमनमानम भराल पावन गंग तरगमाळ से ॥१४ म

दोहा—ं कुपथ क्तरक कुचालि कालि, कपट दंभ पाषंड । दहन रामगुनग्राम जिमि, इंधन अगल प्रचंड ॥ रामचरित राकेसकर, सरिस सुषद सब काहु ।

सजन कुमुद चकोर चित, हित विसेषि बड लाहु 113511 कीन्ह प्रश्न बेहि भाति भवानी जेहिं विधि संकर कहा बपानी 11 9 11 सो सब हेतु कहब मैं गाई कथा प्रबंध बिचित्र बनाई 11 7 11 जेहि यह कथा सुनी नहि होई जाने आधरज करे सुनि सोई कथा अलौकिक सुनहि ने ज्ञानी नाई आचरज कराई अस जानी ॥ ४॥ . असि प्रतीति तिन्ह के मन माही ॥ ९ ॥ रामकथा के मिति जग नाही रामायन सत कोटि अपारा ॥ ६॥ भाति रामअवतारा भांति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥ ७॥ कळपभेर हरिषरित सुद्दाए .

करिय न संसय अस डर माली . मुनिय क्या सादर रैति माना ॥ ८ ॥ कमितं कथा विस्तार । दोहा-राम अनंत अनंत गुन सुनि आचरबुन मानिइहि . जिन के विकार बेहि बिधि सब संसव करि दूरी . सिर धरि गुरपदपंकक ध्रिः ।। रहा करत कथा जेहि लाग न पोरी पुनि सबही विनवीं कर जोरी . बरनी बिसद रामगुनगाथा सादर सिषित नाइ अब माथा . करीं कथा डरिपदः घरि सीसा 11841 संबत सोरह से इकतीसा भवध पुरा यह चरित प्रकासा 11911 नीमी भीमनार मधुमासा . तीरथ सकल तहां चिक्त आवाह 11611 नेहि दिन रामजन्म श्रुतिगावहि रधुनायकसेवा 11011 क्रशहि असुर नाग षग नर मुनि देवा करहिराम कल कीरतिगाना 11411 जन्म महोत्सवं रचाहे सुजाना पावन सरज् नीर दोहा-मजाह सजान बृन्दबहु . सुंदर स्याम सरीर 11 38 11 जपहि रामधरि ध्यानउर हरे पाप कह बेद पुराना ॥ १॥ दरस परम मजन अरुपाना . काहिन सकी सारदा विमलमात ॥ २ ॥ नदी पुनीत अमित महिमाजति लोकसमस्त बिदित जग पावनि ॥ १ ॥ रामं धामदा पुरी सुहाबनि अवध तजेतनु नहिं संसारा ॥ ॥ बारि खानि जग जीव अपारा सकल सिद्धिप्रद मंगलवानी ॥ ९॥ सब विधि पुरी मनोहर जानी . सुनतनसाहि काम मद दंभा ॥ करकीन्ह अरंभा विमल कथा पाइय विश्रामा ॥ नामा . सुनत अवन एहि मानस . होइ सुषी जों यहि सर परई ॥ मनकारे विषय अनलवन जरई . बिरचेड, संभु सुहावन पावन ॥ मुनिभावन मानस किकुचार्ककार्ठकलुपनसावन त्रिविध दोष दुषदारिद दावन रिष महेस निज मानस राषा . पाइसुसमछ सिवासन भाषा ॥ १३॥ ताते राम रिचत मानस बर . धरेउनाम हिमहेरि हरिषहर ॥ १३॥ कहीं कथा सोड सुषद सुहाई ... सादर सुनह सुजन मनलाई ा। १४ ॥ दोहा- जस मीन जोड़े बिधि भये इ, जग प्रचार जेहि हेत् अब सोइ कहीं प्रसंग सब, सुमिरि उमा बृषकेत् 112411

संभुप्रसाद सुमति हिअंहुल्सी .

सरइ मने हर मित अनुहारी .

सुमति भूमि थल हृदय अगायू .

सरपिंह राम सुजम बर बारी .

लौलासगुन जो कहिंह बयानी .

प्रेनं भगति जो बरान न जाई .

सो जल सुकृत सालि हित होईं .

सेधा महिगत मो जल पावन .

भेग सुमानस सुथल थिराना .

दोहा—सुठि सुंदर संबाद बर,

तेइ एडि पावन सुभग सर, सप्त प्रबंध सुभग सीपाना रचुपति महिमा अगुन अवाधा रामसीअ जस सिंठल सुधासम पुरुषि सघन चारु चौपाई छंद सोरठा मुंदर दोहा अरथ अनूप सुभाव सुभासा मुक्त पुंज मंजुरु अलिमारा धुनि अबरेब कबित मुन जाती अरथ धरम कामादिका चारी नब रस जप तप जोग बिरागा सुक्रती साधु नाम गुन गाना संत सभा चहु दिसि अंवराई भगति निरूपन विविध विधाना समजम नियम फूछ फल ज्ञाना ओरी कथा अनेक प्रसंगा दोहा-पुकक बाटिका नाग बन,

माला मुमन सनह जरु,

सीचत

सोइ खच्छता करे मळ हानी ॥ १.॥ सोइ मधुरता सुसीतकताई.. ॥ ६ ॥ रामभगत जन जीवन सोई ॥ ७॥ सिकिलि श्रवन गग चलेड मुहावन ॥८॥ मुपद सीत रुचि चारु चिराना ॥ ९॥ बिरचे बुद्धि बिचारि मनोहर चारि 11 38 11 घाट ज्ञान नयन निरयत मन माना ॥ १ ॥ बरनब सोइ बर बारि अगाधा ॥ २ ॥ उपमा बीच बिलास मनोरम ॥ ३ ॥ जुगुनि मंजु मानि सीप सुहाई ॥ ४ ॥ सोइ बहुरंग कमल कुक सोहा ॥ ९ ॥ मोइ पराग मकरंद सुबासा ।। ६ । ज्ञान बिराग बिचार मराला 🛭 🤊 🛚 मीन मनोहर ते बहु भांती ॥ ८॥ कहव ज्ञान विज्ञाम विचारी ॥ ९ ॥ ते सब जलचर चारु तडागा ।। १०॥ ते बिचित्र जल बिह्य समाना ॥११॥ स्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥१९॥ छमा दया दम लता बिताना ॥१३ हरिपद रस बर बेद बवाना ॥१४॥ तेइ सुकापक बहुबरन बिहंगा ११९॥ सुप सुविहंग निहाक ।

लाचन बार ॥३७॥

रामचरित मागस कवितुल्सी ा। १३।

सुजन सुचित् सुनि लेहुं सुधारी म रुगा।

बेद पुरान उदधि घन साधू ॥ ३॥

मधुर मनोहर मंगल कारी ॥ 🗞 ॥

के गावहि यह चरित संमारे . 'तेइ येहि तांक चतुर रचयारे ॥ १ ॥ सदा सुनि ६ सादर नर नारी तेइ सुरवर गानस अधिकारी ॥ २ ॥ अति बक से बिपई बग कांगा एहिसर निकटन जाहि अभागा 11 ३ ॥ संबुक भेक सेवार समाना इहां न विषय कथा रस नाना ॥ ४ ॥ तेहि कारन आवत हिअं हारे कामी कांक बलाक विचार ॥ ९ ॥ भावत एहि सर अति कठिनाई रामकपा विन आई न जाई ॥ ६ ॥ कठिन कुसंग कुपंथ कराला तिन्हके बचन बाघ हरि न्याला ॥ ७ ॥ गृहकारंज नाना नंत्राला तेइ अतिदर्गम सैल विसाका ॥ ८॥ बन बंहु बिपर्य मोह मद माना नदी कृतर्क भयंकर नाना ॥ ९ ॥ रहित, नहिं संतन्ह कर साथ। दोहा-ने श्रंहा संवरु

तिन कहुं मानम अगम अति, जिनहिं म प्रिय रघुनाथ ॥ ३८॥ मों करि कष्ट जाइ पुनि कोई नातिह मींद नुडाई होई ॥ १॥ जदता जाद विपम सर लागा गएहं न मजन पाव अभागा ॥ २॥ कारिन जाई सर मजन पाना . फिरि आवे सगेत अभिमांना ॥ ३ ॥ नी बहोरि को उपुछन आवा सर्गनदा करि ताहि बुझावा ॥ ॥ ॥ . राम सुक्रुगा विकोकाहि नेही ॥ ९ ॥ सक्छ विश व्यापाहि नहि तेही सोइ सादर सर मजन करई महाबोर त्रयताप न गरई ॥ ६ ॥ ते नर यह सर तर्जी इन काऊं .' जिन्ह के रामचरन भरू भाऊ ॥ 🔊 ॥ नो नहाई चह एहि सर माई . मां सतसंग करी मन काई ॥ ८ ॥ भइ कवि बुद्धि बिमल अबगाही ॥ ९ ॥ अस मानसं मानन चष चाही भवेत इदये आनंद 'उछाह . उमगेउ प्रेम प्रभीद प्रबाह् । । १० ॥ चली सुभग कात्रिता सरिता सो राम विमल जस जल भरिता सी 📲 🤻 ॥ सरजु ें नाम **सुमंगलम्**ला छोकबेदमत मंजुल क्ला । १२॥ कालिमलित्रनतरुम्लिनकंदिाने ॥ १६॥ नदी पुनीत सुमानस नंदिनि दोहा-श्राता त्रिविध समाज पुर, प्राम नगर दुहु कुछ ।

संतसभा अनुपम अवध, रामभगीत मुरस्रिरितीह जाई . सानुवरामसमर्वन पावन .

सकलसुगंगलमूल ।। १९॥ मिकी सुकीरति संस्तु सुहाई ॥ १॥ मिकेड बहानदु सीम सुहावन ॥ २॥ **उमामहेस्बिबाह** दोहा-बालचरित चंतु बंधु के, बनज विपुल बहुरंग ।

मुग विच भगति देवजुनिधारा . 'सोहति सहित संविरति विचाराः।। १॥ त्रिविधतापत्रासकं तिमुहानी . रामसरूप सिंधु समुहाँनी ॥ छेला मामस मूल मिली, सुरंसरिही . 'सुनत सुजनमंन 'पायन करही 'ग्रा 4 ॥ विच विच कथा विचित्र विभागा . जनु सरिसीर सीरवंगु कागा ॥ ६ १। बराती . ते जलचर आगनित बहु भौती है 😼 🗓 रघुवरमनम अनंद बधाई . भवर सरंग मसोहरसाई ॥ ८ ॥

मृप रानी परिजन सुक्रत, मधुकार बारिविहंग ॥ ४ ।। सियस्त्रयंतर कथा सुहाई . मरित सुहायनि सी छवि छाई ॥ १॥ नदी नाव पटु प्रश्न अनेका . केनट कुप्तल जिल्हर सिविधेका ॥ २ ॥ सुनि अनुकथन प्रस्पर होई . पथिकसमाज सोह सुर सोई ॥ ३ ॥ धोर धार भृगुपाय रिसानी . धाट सुंबद राम बर बानी ॥ ३ ॥ मानुजरामिबवाहउछाह् . सी सुभ उमग सुपद सब काह् ॥ २ ॥ कहत सुनत हरषि पुलकाही . ते सुकृती मन मुदित नहाही ॥ १ ॥ रामतिङक हित मंगल्याजा . परव जोग जनु जुरे समाना ।। ७ ।। काई कुमति केर्राई केरी . परी नासु फल विपति घनेरी ॥ ८॥

दोहा—समन अमित उत्तपात सब, भरतचरित अपजाम । कालअब बलअवगुन कथन, ते जलमक बग काम ॥ ४१ ॥ बरवा घार निसाचररारी .

कीराते सरित छहूं ऋतू रूरी . समय सुहावानी पावान मूरी ॥ ९॥ हिमं हिमसैलसुता सिन्नव्याह् . सिसिर सुखद प्रभुजनमउछाहू ॥ है॥ बरनव , रामिश्रवाहसमाजू . सो मुदमगक्तमयं रितुराज् ॥ ३ ॥ मीषन दुसह रामवनगमनू . पंथ कथा पर आतंप पवनू ॥ है।। सुरकुल सालि सुर्मगलकारी ॥ वैा। राम राजसुख बिनय बडाई . बिसद सुखद सींह सरद सुहाँई ॥ ६ ॥ सर्वासिरोमान सिय्गुनगाथा . सोइ गुनअमल अनूपम पाथा ॥ ७ ॥ भरतसुभाव सुसीतलताई . सदा एकरस बरान न नाई ।। ८।। दोहा—अवलेकान बोलिन मिलीन, प्रीति परस्परहीरा । भाषप मोल चंडू बंधु की, जल माधुरी सुबास ॥ ४२ ॥

अपराति विनय दीवता मोरी लथता रुकित सुवारि न पोसी ॥ १॥ अद्भूत मिलल चुनत सुवकारी . मनोमकहारी ॥ २ ॥ आम पिआस राम सुप्रेमिक्ट त्योक्त पावी इरत सकल कलिकलुष गलानी ॥ ३ ॥ भी सम सोपक तोषक तोषा .. समन दुरित दुश दारिद दोपा ॥ ४॥ . बिमल त्रिबेकः बिराग बढायन ॥ ९ ॥ काम कोथ मद्रमोह नस्थन साहर मंजन पान किये ते मिटिंड पाप परिताप हिए ते ॥ ६ ॥ ते कायर किकाल बिगीए । ७॥ जेन्ह येहि बारिन मानस धोए फिरिहर्हि मृग जिमि जीव दुखारी ॥ ८॥ त्रिषित निर्पि राधिकर भव बारी दोहा-मित अनुहारि सुवारि गुन, गन गनि मन अन्द्रवाइ । मुमिरि भवानी संकरिंद, वाह कवि कथा सुदाइ ॥ ४३ ॥

. श्रीयुत ग्वाल कवि कृत कविता।

बिधि की बनावट को देखिये तमासी यह फेरते कृया के अन निखरा औ सखरा ! ऐमेई जगत बीच रचना रची है देखो मुखकर पग अंग अंगन के अखरा ॥ व्वाल कि सुन्दर सभी हैं अरु हैं न को उरीति ही बिसेप यह सांचे कहे अखरा। एक नूर आदमी हजार नूर कपड़ा है लाख नूर गहना करोड़ नूर नखरा ॥१॥ एक चित है कर कबित्त करें कबितिन्हें केतक सुनैया कहें याहि कौन लीखें हैं। आगे के सुनेया रिझवैया औ दिवैया दान रहेना घरा पे याते मीन मित सीखे हैं। ग्वाल कवि गुन ध्वनि व्यंग्व रस लच्छना जे सज्जन को ईपे ओ असज्जन को बीखेंहै ॥ दावादार दोणले दुसह दुरजन जिन्हें दूषनहीं दीखें ज्यों उलूके रैन दिखेहें ।।२॥ चाहिये जरूर इनसानियत मानुप को नौबत बने पै फेर भेर बजनो कहा । नात औं अजात कहा हिंदू औ मुसलमान जातेकियोनेह फेरताते भजनोकहा ॥ ग्वाल कि जाके लिए सीस पै बुराई लई लाजहू गंबाई कही फेर लजनो कहा । या तो रंग काह्के न रंगिये सुजान प्यारे रंगोसी रंगेई रहे फेर तजनी कहा ॥३॥ जाकी खूब खूबी खूब ख्बन के खूबी यहां ताकी खूब खूबी खूब ख्बी नभ गाहना । जाकी बदजाती बदजाती यहां पांचन में ताकी बदजाती- बदजाती हुांउराहना ।। ग्वारु क्रांब येई एरसिद्ध सिद्ध रेहे प्रांसिद्ध वही ताकी है यहां वहां सराहना । जाकी यहांचाहनाहै ताकी वहांचाहनाहै जाकी यहांचाहनाहै ताकी वहांचाहना ॥४॥

सुंदरीतिलक ।

सर्वेशा ।

छहरें सिर पें छिब मोरपला उन की नथ के मुक्ति ता थहरें। फहरें पियरो पट बेनी इते उनकी चुनरी के झवा झहरें॥ रसरंग भिरे अभिर हैं तमाल दोऊ रस स्याल चहें लहरें। नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम हमारे हिये में सदां ठहरें॥ १॥

सराहें सुरासुर सिद्ध समाज जिन्हें ढाँखें लाजत हैं रित मार। महा मुद मंगल संग दसें बिल्में भव भार निवारन वार॥ बिराजें त्रिलोक निकाई के ओक सुदेव मनो भव रूप अपार। सदां दुलही छषभानुसुता दिन दूलह श्रीबंजराज-कृमार॥ २ ।

नाल कुटी कर कामीरेया हित राज तिहुँपूर की तिज डारों। आठहूँ सिहि नवी निधि के मुख नंद की गाय चराय बिसारों। रसखान कर्ने इस नेनन तें जल के बन बाग तहाय निहारों। कीटिन हैं कल्कीत के धाम करील के कुल हा जपर बारों। ३॥

बिहसे दुति दामिन सी दरसे तन जोती जुन्हाई उईसी परे। लखि पायन की अरुनाई अनूप ललाई जपा की जुईसी परे। निखरें भी निकाई निहारें नई रित रूप लुभाई तुई सी परे। सुकुमारता मंजु मनोहरता मुख चारता चारु चुइसी परे॥ ४॥

विद्रम और वैधूक जपा गुललाला गुलाब की आभा लजाबित । देव जू कंज खिले टटके हटके भटके खटके गिरा गावित ॥ पाव धरे अलि ठोर जहाँ तेहिं ओरतें रंग की धारसी धावित । मानो मजीठ की माठ दुरी एक ओरतें चादनी बोरित आवती ॥ ५॥

राधिका कान्ह बिरंचि रची सब लोकन की सुखमा सब ले हैं।। अंग के रंगन के दिग जात है जात है संभु सबे रंग मैले।। लालन सों पर-बालन सों बंधी लालन जानिपरे बहि गेले। पाँचेंधे जितहीं वह बाल तही रँग लाल गुलाल सो फैले।। ६॥

कोहर कोंल जपा दल बिद्धम का इतनी जो बँधूक में कोति है। रोचन रोरी रची महदी नपसंभु कहें मंकता तम पोति हैं॥ पांच घरें हरे ईशुर सो तिम में मिन पायल की घनी जोति है। हाथ है तीन लों चारिह ओरतें चौरनी चूनरी के रंग होति हैं॥ ७॥

पांइ तिहारेन कों गिरिधारी लगाय के भ्यान करें बहु जापन। तापर जीव कलावति की छिबि तावती हो नहीं मानो सिखापन ॥ आंगन में चलती जब राधे भने नृप संभु हरे तन तापन। हैं घरी देक लों आभा रहे मनो छीट रंगी हैं मजीठ के छापन॥ ८॥

सकीया।

जाहिरे जागाति सी जमुना जब बूढे बहे उम-है वह बेनी। त्यों पदमाकर हीर के हारन गंग तरंगन की सुख देनी॥ पायन के रंग सीं रंग-जाति सी भाँति हीं भाँति सरस्वती सेनी। पेरे जहाँ इं जहां वह बाल तहाँ तहां ताल में होत त्रिबेनी॥ ९॥

मानुष हों तो वहीं रसखान बसों मिछि गोबुल गांव के ग्वारन । जो पसु हों तो कहा बसें मेरी चरों निस नंद की धेनु मझारन ॥ पहिन हों तो वही गिरि की जो कियो बल छत्र पुरंदक बारती जी खग हों तो बसेरो करें। वहि काठिंदी कूछ कदंब की डारन ॥ १० ॥

चािल सो आई नई दुल्ही लिख को सबे कोऊ चाव बढावित । सूही सजी सिर सारी जबे तन नाइन आपने हाथ ओढावित ॥ भीतर मोन तं बाहिर लों डिजदेव जुन्होंई की धार सी धावित । साँझ समें सिस की सी कला उदयाचल तें मनो घरति आवित ॥ ११ ॥

छित सामुहि हास छपाये रहे ननदी छित्व ज्यो उपजावत भीत हि । सौतिन सों सतरोत चितौति जेठानिन सों निज ठानित प्रीतिह ॥ दासिनहूँ सों उदास न देव बढावित प्यारे सों प्रीति प्रतीतिह । धाय सों पूछित बातें विने की सखीन सों सीखें सुहाग की रीतिह ॥ १२॥

निज चाल सों और जे बाल तिन्हें कुल की कुलकानि सिखावित हैं। ननदी ओं जेठानी हसाँ- वें तक हैंसी ओठनहीं छों बितावती हैं।। हनु-मान न नेकों निहारें कहूँ हम निचे किये पुख पावती हैं। बडमागिनी पिके मुहाग भरीं कबों आंगन हूँ छों न आवती हैं। १३॥

जाने न बोल कुनोल भटू चित ठाने सदा पति प्रीति सुहाई। केतो करे उपचार सखी सत-रायन नाह पे भोंह चढाई।। क्यों नहि होय सुमेर हरी हिर कें हिय आनद की अधिकाई। जाहि। बिलोकतहीं पुर की तिय सीख गई पिय की सिवकाई॥ १४॥

रसिक विनोद् ।

नित सासु के सासन ही में रहे ननदीन सों प्रीति बढ़ावती हैं। सदा मूंदि झरोखे किवा-रन दें निसिबासर बेठि वितावती हैं।। कहूं आरसी छै जों सिगार करें प्रतिबिम्ब तें दीठ दुरावती हैं।। बढ़भाग सुहागभरी मुखचन्द चकोरनहूं सों चुरावती हैं।। १॥

विष्णुपद जुवराज विनय।

त्रभु में सब पतितन को राजा। सभ पति-तन की नीति रीति छक्ति करत राज को साजा॥ मंत्री छोभ काम किङ्कर मन सम विपरीति समाजा। सेनापति मति बन्द हन्दरत कोह अछोह बिराजां ॥ उखरत् जात विवेक नगर सविवेक बसावत खेरो। तब हों धाइ पुकारत आरत सरन गर्यो प्रभु तेरो ॥ राजराज कुछ तिलक मुकुट मनि राम राज महाराजा । अविनेब्यसन विचारि जानि जिय करह प्रेम जुबराजा ॥ १ ॥

प्रभु में सब पिततन में नामी। अबिवेकी आलमी मन्द मित कुटिल कुगति खल कामी॥ क्रोध बिवस विपया रस लंपट करन बिषे अनुगामी। कहं लों कहों कुचालि कृपानिधि तुम सभ अन्तर जामी॥ दीनबंधु सुनि अधम उधारन कीरित लिलेट ललामी। अब आयो में सरन जानि जिय की जे किङ्कर धामी॥ देह गेह को नेह छाड़िके चाहत करन गुलामी। यह बिनती जुन-राज निलंज की सुनिए श्रीपित स्वामी॥ २॥

प्रभु में सब पतितन को नायक । लायक कर्म सकल जग के तिज करत अकर्म अलायक॥ अबलों करि अबिवेक बनिज बहु जहं तहं मूर गंवायो। समुझि बिचारि हारि हिंग लाजत मार्जि सरनागत आयो॥ लादन चहत रामरस टांडो जो प्रभु सासन पाऊं। और सकल ब्यापार बानज तिज है जह तह पहुंचाओं। तुम अमु सभ लायक अपने कर कृपापत्र लिखे दीजे। जाते सुबस लदंगे ठांडो मूर ब्याज नहि छोजे॥ सौदा सुलभ नफे को नीको गुम दावक सबही को। तब लागो जुबराज रामरस जाहि बिमा सभ फीको॥ ३॥

त्रभु में सम पतितन को चौर । सम पतिक की रासि चौराया तबलों हैं गयो मोर ॥ दसन नयन कर चरन श्रवन मिलि रसना जुत सम साथी ॥ पल्लव त्वचा झारि कर मागे पहिले परम प्रमाथी । निज बासना बरारिन दृढ़ करि टाँगि दियों करि नागो ॥ उलटो नाथ रुधिर करदम में रह्यों मास दस टांगो । तब प्रभु कृपा पवन प्रेरित इत नीति निपुन सुनि धायो ॥ आरत प्रभु हि पुकारत सभ तजि सरन सरन तिक आयो । बर तत्र रतन जतन को बागो मोहि नांगो लिख दीनों। कृपासिध जुबराज पतित को दास आपनी कीनो ॥॥॥ धृद्धि बिहंगिनि मन बिहंग सो बार बार समु-झावे । सुनि पिय चरन कम्म मानस तिज विषय मोर्ड निहंगिनि मन बिहंग सो बार बार समु- में नित प्रति कुथा सतावे। मृसित बदन रसना
रस सूर्वी अब मुख बचन न आवे। उडिचलु
अजहु चरन मानस दिग सुखनवास श्रुति गावै।
चित्र चखु नाम बिमल मुकुताफल प्रेम अमल जल
चित्र में । उडत सचान काल सिर ऊपर जिन कहु
तोहि गहि खावे। ऐसिहु दसा विचारि हारि हिय
अजहुं विराग न आवे।। यहि सर वहु हरि विमुख
भेक बक नित प्रति सोर मचावे। जन जुबराज
दयाल दया विनु के। इां लगि पहुंचावे।। ५।
दोहा—आनन्दित श्रीयुत रहो, निसि दिन जोति अमन्द।
हरिश्चन्द्र जुत चन्द्रिका, निज कुल केरव चन्द।।१॥

कवितावली।

धनाचरी ।

जननी समान जिन्ह जानि है पराई नारि पर अपबाद पर वित्त सो न रित है। सत्य प्रिय भाषी साधु संग अभिलाषी सदा वित्र पद प्रीति नीच संगति विरित है। संपित विपित मध्य एकरस रहे सुधी सबही सुखद हरिहर की भग-ति है। बदति गुलामसम भरत प्रवेशे राम लोक मो सुजस परलोक हू सुमति है। १॥ दीन पर दया औं समान सन मैत्री करें गुरजन देखि के बिसेषि सुखपावहीं। खळतें उदास भाववर्त्तमान बर्ते सदा भावी भूतभव्य को न सोच उर ल्यावहीं॥ देव हिज भक्ति वेद बिद्या को बिबेक जिन्हें मानमद हीन के गोबिन्द गुन गावहीं। बदति गुलामराम भरत प्रबोधे राम ऐसे साधु सज्जन सुजान मोहि भावहीं॥ २॥

उर्दू की कविता।

देखा उस रोज दिल सोज़ गोश पेच बांधे सुरुख लपेटा सिर फेंटा खुला खूब था। पेन्हें कोर दार आहू चश्म खुमारी भरे तोषिनिधि प्यारा कज अबरू अजूब था॥ गरे बनमाला हंस मुख पें दुशाला पड़ा गड़ा जी ज़रद दुपंटा रंग डूब था। जज़ब हुआ दिल अजब गज़ब से लखा कुंजन में सांवरा सलोना महबूब था॥ १॥

तअसुफ तअजुब तगाफुल करनहारा देख के ज़माना पदोमाना मजज़ूब था। संदली दाहानी सजे पोदिादा सुमेर सिंह आदिाफ़ कृतल करने का मतलूब था॥ कोई मरा मरैगा मरन लागा कोई ऐसा देखा में तमाशा आफताब मग़रूब था। अजब अंदाज़ नाज़ ग़मज़ से भरा वही शाहज़ादा नंद का गोबिन्द महबूब था॥ २॥

भाषा का लाभ।

(गोल्डसिय कौ लेकीं से)

पाय: सोय को शाषा के साम पर कोई विषय कि खना चाहते हैं पह की यो पारका करते हैं, " भाषा मनुष्य को इस कि ये दो गई है कि वह पपना प्रयोजन भीर पावध्यवाता को पगट करे जिस में उस को लेगों के भोग उसे पूरा कर मर्जा। जो कुछ हम पाहते हैं या जिस बस्तु को इच्छा करते हैं उस के कताने या पाप्त करने के किये हम पपनो इच्छा को प्रष्ट का बस्त पहनाते हैं तो इस से सिंह है कि मुख्य काम भाषा का यह है कि हमारो इच्छाभों को प्रकट करें जिस में वह तुरंत पूरों हो लायं। मेरो कान ऐसो युक्ति निरे पंडिता धोर मोसवियों के सन्तोव के निये पूरों हो तो हो परन्तु जिन को मेरो राय में यह थोड़ी बहुत बुद्ध के धनुसार भो है, कि को मनुष्य पपनी पावध्यकता भीर इच्छाभों को उक्तम प्रकार से छिपाना जानता है छसो को धावध्यकता बहुत योच्च दूर हो जातो है भीर बोकों का मुख्य काम इतना हमारों घावध्यकता को प्रवट हर हो जातो है भीर बोकों का मुख्य काम इतना हमारों घावध्यकता को प्रवट हर हो जातो है भीर बोकों का मुख्य काम इतना हमारों घावध्यकता को प्रवट हर हो जातो है भीर बोकों का मुख्य काम इतना

जब इस इस बात पर विचार करते हैं कि प्रायः मनुष्य किस प्रकार से मनुष्य के साथ वस्तेता है तो यही देखने में चाता है कि जिन खोगों को देखने में बाता है कि जिन खोगों को देखने में किसो बस्तु की कुछ भी भावख्यकता नहीं होती उन्हों के पक्षे में बहु भाविकतर पड़ती है। सच तो यो है कि भन में कुछ ऐती प्रक्ति है कि बड़ा डिर कोट डिर से बढ़ता है चीर दरिद्र मनुष्य को उस के बढ़ाने में वैसे हो प्रव-खता होती है जेसी कि उस के कंजू म स्थामी को धपना धन की उसति देख करा। परन्तु इस में कोई बात नियम के विवह भी नहीं प्रतित होती क्यों कि इसोम सेनेका ने स्वयं इस बात की नियत रख्या है सीगात सदा उस मनुष्य की

धवस्थातुसार होनी चाहिये जिस को दियो जाये। चतः धनवान को बढ़ों बढ़ों मेंट दी जाती हैं भौर स्त्रोकार करने पर उन का धन्यवाद दिया जाता है, मध्यम ऋषों के कोगों को उस से कुछ घट कर मिनता है, पर भिखंसंगै को जिस के सापेश्व होने में किसी को सन्देह नहीं यदि सहसों बार चिधिं-याने भौर मांगने पर एक पैना मिना तो मानों बहुत कुछ मिना।

जिस जिसी ने संसार की स्थिति देखी होगी घीर जीवन के गोतीचा का अनुभव किया होगा उसे पाय: इस सिहान्त को मचाई का अनुभव हुणा होगा भीर वह भनी भांति जानकार घोगा कि प्रधिक घन गाप्त करने के दी ही उपाय है' चर्यात या तो मनुष्य सचमुच धन रखता हो या की गीं को उस का भरम बना हो। कितनी बार टेखने में बाया है कि किसी मनुष्य की सैकड़ी मन्य ऋग टेने पर उपस्थित होते हैं जब कि उन को इस को कोई सावध्य-कता नहीं होती। यदि कोई पंपने मित्र से सहस्र मुद्रा ऋण मांगे तो सभाव है कि पश्चिम सांगने के कारण से दो सी कपये एसकी मिल जांय परमत् यदि वह विविधा कर के बहुत थोड़े से ऋण को प्रार्थना करें तो मेरी जाने इस शात का प्रधिक संभव है कि कोई उस का विष्वास हो पैसे का भी न करे। में एक मनुष्य को जानता हं जो यदि कभी भवन किमी मित्र से दस क्येंसे सेना चाइता तो ऐसो भूमिका बांधता कि मानी उस को दो से वपरे चाहिए भीर बड़ी रक्तमीं का इस धड़कों को साथ वर्णन करता जिस से कभी किसी को ध्यान भी न होता कि हमें यांहे को धावध्यकता है। वही महाशय जब कभी दर्जी से कोई कपड़ा उधार बनवाना चाहते थे तो साथ सैस टंका इचा पाच्छा जोडा पहन कर उस से लेन देन की बात चीत करते थे क्यों कि उन्हों ने चनुभव से यह बात सालूम कार को थो कि जब कभी किसी ऐसे प्रवसरी पर वह साधारण सादा ५स्त यहन कर जाते थे तो दर्जी उन का विम्हास नहीं करता था और कोई न कोई बडाना कर के टाल देता था।

पपनी बांच्छा प्रवाट करने को इस के विश कोई प्रावश्यकता मासूम नहीं होतो कि दूसरे मनुष्य के वित्त में द्या उत्पन्न ही भीर इस हारा खपना मनोरय पूरा ही जावे परन्तु पहिले इस के कि कंगान ऐसी खब्खा में घपने वित्त का मेट कहे यह सोच से कि वह एस मनुष्य के पारी जिस से मांगना पाहता है पपनो योग्यता खोनी भीर उस की मिणता द्या के साथ बदकता उचित समभाता है या नहीं। मनुष्य को स्थाद में से द्या भीर मिनता दी एसे श्र हैं को कभी एक दूमरे से मेज नहीं खाते श्रीरयह नात श्रम्भन है कि दौनों एक साथ किसी के चित्त में थोड़ी देर तक भी बिना एक दूसरे की श्रानि पहुंचाए ठहर सकें। सिलता प्रतिष्ठा भीर प्रमचता बनी है भीर दयर खिट भीर छुवासे। सम्भव है कि कुछ देर तक चित्त दोनों के बीच में टंगा इन्हें परन्तु किसी हाल में वह दोनों को एक साथ इक्षा नहीं कर सकता।

की कह में ने कपर कहा है उस से मेरा यह अभिवाय नहीं है कि मनुष्य का चिल दया रहित है। संमार में बदाचित कोई मनुष्य ऐना होगा जिस में यह कवि कर नस्तता थोडी बहुत न पाई काती हो पर यह थोड़ी ही सो देर तक स्थित रक्ती है भीर इस में निर्धनियों को कुछ ऐसी की वैसी सहायता शिवती है। प्राय: कोई २ कोगों में यह आवेश अपना पहला प्रभाव उत्पद आरते के समय से लेकर जीव में दाय डाजने के समय पर्यात कठिनता से स्थिर रहता है, कुछ मनुष्यों में इस के दूने काल तक उदरता है, भीर बहुत कम अनुकी में जिन की चित्त हा दि दी प्रत्यन्त सदु है पाध घंटे तक रह सकता है। परम्तु यदापि यह कितनी ही देर तक बना रहे इस का फल केवल भी छ हैने का सा होता है भीर कहां हम इस विचार से एक पैसा खर्च करते है वहां इसरे विचारी से कवयों की नीवत पहुंचती। माना कि यदि कोई मनुष्य बिसी बड़ी पापत्ति में फंबजाता है तो उसे देख कर इसे बहुत ही दया याती है पर जब वही मनुष्य फिर्ट्सरी बार हमारे पाने हाथ फेकाता है शी पहले को अपेका उस पर कुछ कम द्या पाती है भीर इसी भांति गृज्जु की प्रतिध्वनि की भांति हर बार उस का बस घटता जाता है यहां तक कि चन्त्र में इमारे चित्त पर खेद का चिन्ह तक नहीं रहता घीर दया छूपा के साथ बदस जाती है।

मेरी चांख की देखी बात है कि एक मनुष्य जाक खिंड ज नामी मेरी जान पंचनानवाओं में ये जिन की सम्पन्नता के समय में प्रायः खोग जो धनी के छन्तें करण देने को चीर जिनके पास कड़िक्यां थीं दामादी में खेने को प्रस्तुत के परस्तु जब उन पर विपत्ति चाई तो कोई मनुष्य उन की चीर चांख उठा कर न देखता था। चतः में उन खोगों को जो दिरद्र हैं बह समाति देता खं कि चपनो चावश्यकता की किसी पर प्रकट न होने दें चीर दया के सिकाय किसी चीर उपाय से चपना पूर्व मनोर्थ होने का यह करें। जो चिनाय किसी की चंग पर चढ़ा देने या उस की श्री सहार्थ वा हणा के विचार इत्यक्त

कारने से निकासता है वहदया से कादावि सकाव नहीं। निर्धन की मोठी बात भी कड़वी जान पड़ती है भीर जीडी खन ने 'सुबूबा की बात' भारका की साध ही यह मन में भाता है कि भन्त में वह मनुष्य सुक्र न कुछ मांगेगा।

भतः यदि तम को यह स्रीकार को कि दारियु के चंगुक से दर रकी ती तम को चाहिये कि उस से अपरिचित बन जाव तभी वह तुन्हारा क्रक ध्यान करेगा। यदि कोई सन्छ तम को जी की रोटी और साम खाते इए टेख से तो उस से बाड़ो कि यह खाना पहेंज़ी है फबाने हकोम ने (किसो नामी इकीम का नाम लेकर) सभी इस के खाने की चाक्रा की है। उसी के साथ संकेत में यह भी कह दो कि मैं उन सोगों में नहीं जो पेट की प्रकाको प्रव्या सम-भाते हैं। यदि तम सामर्थं न रखने के बारस काड़े में भिर्मिर कपड़े परने को तो कोगों से पाप हो जता दो कि वैसे कपड़े सखनक में प्राय: व्यसनी पहनते हैं या यदि उस में इतने पैवन्द सारी ही जिन्हें तुम घटने या कि भी बाब बैठने से किया न सकते को तो यों कही कि सभी घीर फ़लाने सनुष्य को (बिसी रईस का नाम बीकर) कपड़े का व्यसन नहीं भीर यदि तन्हें फिला-सीफ़ी में कुछ चन्यास भी तो यह पगट करो कि में कपड़ा पश्नने में फफ़ का-तून भीर सेनेका की सादगी पसंद करता हूं। सारांग्र यह कि यदापि तुम की शी हो बुरी अवस्था में पाए जाव परन्तु कदापि न का जित हो बिल्ला जितने दीव देखने में तुम में भी सब के कारण अपने चित्त हत्ति की संकोचता वर्णन करी भीर कटावि घपनी दरिद्रता किसी पर खुक्तने न दी प्रशीत् कंजूस बनी घर दरिद्र न वनी।

मनुष्य दिरिद्र कोने या दिरिद्र मालूम कोने से कभी प्रतिष्ठा की नकीं पहुंच सवाता। बड़े कोगी को दून के खेते देख कर घृणा कोती है और बुक्षिमानों को डोंग मुन कर इंसो भातों है परन्तु दिरिद्री यदि भिमान करें तो नेरी कान स्वमा की योग्य हैं।

मित्रता।

(स्पेक्टेटर से)

" खुदा मिळे तो मिळे आशना नहीं मिळता ''
देव मिळेंतो मिळसकें, मिळे सुद्धद नहि मीत ।
कोऊ काहू को नहीं, यद्यपि कहत सममीत ॥ १॥

भोई २ सीन यह सीवते होंगे कि जितने पधिक सीग किसी मंगति में सिसते हो जतने ही पिधन भांति २ के विचार घीर कथनीयकथन बीच में आएं ग्रे पश्चतु इस को विद्व यह प्रायः देखने में शाया है कि वड़े समानी में बातचित बहुत तुकी हुई भीर बड़ो बनावट ले साथ होती है। जब बहुत से कींग ऐका स्थान में इकड़ा क्षीबर विसी बात की चरचा करते हैं तो उस समय बड़ केवन चावस की व्रचिकत मर्यादा भीर साधारण नियमों पर बात करते हैं परम्तु जब इस से और घोड़ी संगति में मिलिए तो ऋतु, रीति समाचारी भीर इसी प्रकार की दूसरी बातों का वर्णन मुनने में भाता है। यदि जुक भीर घट कर मिचों की संगति भीर उत्तवीं में नाइए तो वड़ां मुख्य २ वातों का वर्णन प्रधिकतर पाइयेगा बल्कि प्रत्येक मनुष्य स्पष्ट चित्र खोनकर वार्ते करता दृष्टि पाएगा परम्तु की बात चीत दी ऐसे मित्री में होती है की पापस में दिली मिले रहते हैं भीर एक प्राण दो देह होते हैं उस का क्या पूछना है, वह सब से प्रधिक स्वच्छ एक दूसरे के काभ की घीर निम्नांकीय होती है क्यों कि ऐसे स्थानी पर मनुष्य अपनी पर एक पुष्का भीर अभिकाष की जी उस के जी में सब विचारी पर शिरोधार्थ दोतो है तुरम्त उगन देता है, जो कुछ उसकी बाय अपने समययकों अथवा किसी पदार्थ के विषय में होती है विधड़का प्रकट कर देता है, चपनी समभ भीर भग्नति को उत्तमता भीर हट्ता की परीचा करता है, चौर जी की सब बातें चपने मित्र के भागे परीचा के लिये खोस कर रख देता है।

टको पहला मनुष्य एँ जिस का सिदान्त या कि मित्रता प्रस्वता को पश्चित चौर खेद की कम करती है क्यों कि उससे इम को दर्भ का दूना चानन्द उठता है चौर दु: ख का बोम घाधी चाध बढ़ जाता है। उस के कहने का

थीर सीगी ने भी चनुमीदन किया है जिन्दों ने उस के समय से सैकर पननव विवता पर सेख किसे हैं। इस के चतिरिक्त पर फ्रान्सिय वेसन में सिवता के चीर चीर साम जिलें वह उसका पत्र कहते हैं चलात्रम शीत से वर्णन किरो हैं। यस तो शों है कि समाजिक विचा में ऐसे विषय कम निकासेंगे किस पर कोगों ने इतना प्रधिक किया हो। सिवता की को प्रशंमाएं की गई कें छन में से कुछ में इस स्थान पर एक पुराने समय के विद्यान की 9 स्तक से से कर वर्षन करता दूं पर्यात् एक ऐमी पुस्तक से जिसे इस समय के सुधी सीग चत्यु सम समभते यदि वह किसी यूनानी हकीम के नाम से प्रसिद्ध हुई होती भीर जिसका नाम "सराच के बेटे की दिकात की बातें" है। एस के जिन्हों ने वाले ने किस उत्तमता के साथ सधीकता चीर मिलनसारी के द्वारा की शिका भावना मित्र वना सेने का उपाय वर्णन किया है भीर उस निशाना की नेव डाली है जिस की डाल में एक मनुष्य ने पपना ठडराया या कि "डर मन्छ को चा दिये कि पपन ग्रमचिन्तक बहुत भीर मिन थोड़े बक्ते "। उस ने शिखा है नि "यदि निसी ना बचन मीठा हो तो उस के मिल दिन दिन चिवा कोते जायंगे चौर उत्तम बात से कर मनुष्य दी इ कर मिस्रेगा चतः चारिये कि पर एक से दिन मिल कर रहे परम्तु सदसों परिचितों के बीच चपने चित्र का भेद कदने भीर समाति खेने के सिये एक दी शनुष्य की निस्य करे।

खस ने केंगे कुछ वृद्धिमानी घीर चानाकी खर्च कर के धम.की मिल चुनने के उपाय नतलाय हैं घीर केंगे ठीक रीति पर निष्का घोड़ो दिवानी के नाथ विद्यास्थाती घीर स्वार्थी मिन की पण्णान कियी है। एम का विद्यान्त है कि "यदि तुम कियी को सपना मिल बनाघों तो नुरस्त विद्याद्ध म करने कमो निष्का पण्णे भन्नो भाति परीचा कर को क्योंकि प्राय: कोम घपने स्वार्थ के मिल होते हैं घीर तुन्हारे गाढ़े समय में कदापि काम न घाएंगे। कोई किया ऐसे होते हैं कि विगाड़ घो जाने या घापस में कुछ मैं क घानाने को घावस्था में तुन्हारी अपकोत्ति पर कमर वांधिंग। बहुतरे कोग केवच भोग विद्यास के साथी होते हैं घीर दु: एक को साथी नहीं घीत। ऐसे मनुष्य तुन्हारे विभाव को समय में भाई घारे का दम भरते हैं, तुन्हारे नोकरी पर सुमसे कड़का घातंक चनाने को तथार रहते हैं परन्तु ईक्षर न करे कि तुम पर दिस्ता आजाय तो यह मुंह किया कर कितारे ही कार्यंग"। उस का सिद्धान्त है कि

चपन सम् श्री से दूर रही परस्तु सित्रों का सदा ध्यान रक्ती'। इस की खपरान्त वह सिन के खन दो फक्षी में से जिन का वर्णन टक्की भीर विकान ने खहुत करवी चीड़ी शिल पर किया है सुख्य कर के एक का वर्णन करता है खीर भन्त में सिन्नता की प्रशंसा पर आसुकता है भत्रपन इस विषय में उस की विचार वहुत सन्चे भीर छ चे हैं। वह किखता है कि "सन्चा सित्र एक बहुत वड़ी आड़ होता है। किस की यह सिन्ना छ से हाथ सानी कुनिर का संडार चाया। कोई वस्तु सन्चे सित्र के पद को पहूंच नहीं सकती, सित्रता का यह रक्ष भन्मी के है। सन्चा सित्र जीवन का धवसका है, यह धन्नश्च पदार्थ उन्हों सोगों को सिन्नतो है को ईग्लर का भय करते हैं को सनुष्य ईग्लर से डरता है वह धपनी सिन्नता को सन्चाई भीर भन्नी के साथ निवाहिगा कि जीसा क्यों कि नह धाप है वैसा ही छस का सित्र भी सिन्नगा"।

अकां तका सुकी सारण है मैं काइ सकता हूं कि घान तक कोई वा का पढ़ कार में ऐसा प्रमुख नहीं हुआ जैसा इम को कि "सिष जीवन का चवक्त वहें" यह मिचता का साम दुख भीर क्लेश के दूर करने में को मनुष्य के कीवन की माथ लगे इए हैं भन्नी भांति प्रकट करता है। इस के निवा में इस वाक्य की यह कार भीर भी प्रमन्न इपा कि पच्छे पाटमी की उम्र की सुजनता के बदली म देखार की घोर से एक मनुष्य वैसा घी सुलन मिल जाता है। इसी मनुष्य का एक निदास्त और भी है जो मेरी समाति में उतना ही पशंसनीय है जैमा कि उस के भीर बचन हैं। उस की शिक्षा है कि "भपने पुराने सिच के समागम की कदापि न कोड़ी क्योंकि नदा मिच पहली पहल उस के कराबर महीं हो सकता है। इस का हदाहरण ऐसा है जैसी नई प्रशाबकी, जब वह पुगानी हो बायगी तो तुम उमे भी प्रमुद्धतापूर्वक पियोगे"। जहां मिस्रता का क्ट जाना भीर उम की दोणों का वर्णन है वसां उस को उदाहरणों की उत्तमता को ध्यान को जिये भीर उस को चित्त को बीरता देखिये। यह निखता है " जिस ने चिड़ियीं की भीर पत्थर फींका उस ने उस की भड़काकर छड़ा दिया उन्नी भांति जिस ने चपने मित्र को ताना मिन्ना दिया उस ने उस की मित्रता से डाथ धोया। यदि तुमने अपने सित्र पर तनवार भी खींच सी डी ती कदापि इताश सत को क्यों कि समाव है कि फिर वह सुभा से प्रसन की जाय या यदि बुरा भी कहा को तीसी मत हरो क्यों कि क्या पायर्थ है कि वह फिर तुम से भेश कर की परन्तु यदि तुम ने इस घर ताना मारा हो बांड व से श्रमिमान के साथ वर्ले हो या उस का मेद खोन दिया हो या विका-सकात किया हो तो फिर उस से मिसने की पाणा मत रक्वो क्यों कि इन वाती से इर मनुष्य तुम से दूर रहना चाहिगा"। इस खान पर भौर दूसरी मिचा की बातों के साथ जो इस मनुष्य की पुस्तक में मिसती है उस ने बहुत सी विश्वी कोटो कोटी प्रति दिन उदाधरण और सहसता निखी है जिन को कोग दारेस भीर दिवाटेटस की पुस्तकों में प्रशंसा के योग्य समभाते हैं। बहुत से खदापरण इसी प्रकार के नीचे के वाक्यों में पार्थ जाते हैं जो उसी विषय पर निखे गये हैं। "जो मनुष्य किसी का भेद पकट कर देता है वह भवना विश्वास खोता है पत: कभी वह पपनी प्रक्रत्यमुसार मित्र न पावेगा। तुम को चाडिये कि अपने मित्र से प्रेम रक्खों भीर उस की सचाई का दम भरो पर यदि तुम ने उस का भेद को भी से कई दिया हो तो फिर कदापि उस का पीकान करी क्यों कि जैसे कोई शत्रु की बध करता है उसी प्रकार तू ने भी पपने मित्र को फांसी दो भीर जैसे कोई पपने चाय की विदिएं एड जाने देता है तूने भी पपने मिल को दाय से गंवाया और फिर उसे न पाएगा। भव उस की पिंड पड़ना व्यर्थ है क्योंकि वह तुमा से की सो हट गया। उस की वह दथा है जैसी हिरन की कि तरे फंदे से जान खेवार निकल भागा। यदि चाव सगा दो तो पच्छा दो समता है या बुरा कदा दो तो यह प्रवराध चमा को सकता है परन्तु भेद खोख देन को तो कोई भीषधि की नहीं है"।

चौर बहुत से गुणों में जिन का सक्चे सिच में होना एक पावश्य क बात है इस बुहिसान ने बहुत हो ठीक तौर पर हड़ता चौर मचाई को मुख्य मुख्य समक्षकर चुन किया है। इन गुणों में चौर खोगों ने भकाई विद्या विवेक प्रवस्था चौर भन में बराबर होना चौर (सेसिशों के कहने के प्रनुपार) उत्तम स्वभाव प्रत्यादि सिका दिये हैं। यदि कोई मनुष्य मेरी राय इस विषय में पूर्छ किस पर खोगों ने खूब किखा है तो में केवल इतना हो कहूंगा कि इन के साथ चान चनन चौर चित्त का घट्ट होना भी प्रवश्य है। कोई कोग किसी ऐसे मनुष्य में सिव्रता हत्यन कर लेते हैं जिस का हान उन्हें दिनों के प्रनन्तर मालूम होता है चौर यकायक उस से ऐसो बुरी प्रकृति प्रकट हो जाती है जिस का पहले उन्हें ध्यान भी नहीं होता। बहुतेरें कोग संसार में ऐसे हैं को प्रयोग जीवन का से किसी समय ऐसे होते हैं कि हर मनुष्य उन को बातीं को पसंद करता है चौर काभी उन्हों चौगों में ऐसी प्रकृतियां पाई जाती है कि

हर मनुषा श्रवा वारता है। मेरी जान वह मनुषा वहा ही श्रभागा है जिस को ऐसे मनुषा, में पाना पड़ जाय जो किसो समय में जर्ग भीर किसी समय विश्वाच हो। जो कोग संवार में ऐसे हैं जिन का स्वभाव किसी समय भक्का वहता उन्हें छचित है कि सदा भ्रपने स्वभाव का ढंग एक ही सारखने की चेशा करें भीर कभी उन भवस्था की न कोई जिसे हर मनुषा पसंद करता है क्यींकि यह एक बड़ी बुहिमता की नात है।

चतुराई और चाळाकी।

में ने प्रायः विचार किया है कि यदि सब मनुष्यों के चित्त खोन दिये जायं तो बुद्धिमान भीर मुखे नांगों के चित्तों में बहुत कम भन्तर दृष्टि भाण्या क्यों कि जितनो भानुमानिक व्यर्थ भीर भद्दों बातें एक के मन में भातों हैं उतनी ही दूमरें के चित्त में परन्तु मुख्य भेद हतना है कि बुह्मिन जानता है कि उम्र के चित्ता में से कीन बातचीत में नाने के योग्य हैं भीर कीन नहीं भीर हम के भाना को है । मूर्ख को इस का निकार की प्रकट करता है भीर कुछ को किया बखता है। मूर्ख को इस का निकार विवेक नहीं होता हम निये वह निस्तां कोच मन की मारी बातें मुझ में कह डाजता है। तीभी हम प्रकार की चतुराई को मचे भीर पके मिल्लों की बातचीत में प्रवेश नहीं हो सकता भीर ऐसे भवमरी पर वह बहे चतुर लोग प्रायः निर्दे मूर्ख की भांति काम करते हैं। इस का वारण यह कि मिल्लों से बातें करना ऐसा है जैमा कि प्रकट विचार करना।

इम विचार में मेरी समक्त में टकी ने अच्छा कहा कि इस कहावन का दीय जिम का वर्णन प्राय: पुराने जिखने वाकी ने किया है प्रकट कर दिया। उन की गां का अधन है कि मनुष्म की चाहिये कि अपने शत्रु के माय इस बीत से वर्स कि आगे किमी प्रमय में उम को अपना मित्र बना की ने का ख़ान बचा रहे और मित्र के माथ ऐसा बरताव करे कि यदि वह कभी उमका शत्रु हो जाय तो उम को दु: ख न दे मके। इम कहावत का पहना अंश को शत्रु के माथ वर्सने मे सम्बन्ध रखता है बस्तुत: उत्तम और उचित है परन्तु दूमरे अंश में जिम में मित्र का वर्णन है बुढि को अपेन्ना चानाको अधिक पाई कातो है चर यह सिद्धान्त सनुष्म को जीवन की उन बड़े अवस्थाता विभि बिच्चत रखता है को केवस पन्तिरकसित्र के साथ मन खोसकर वातें करने से पाप्त होती हैं। इसके निवा यदि सित्र प्रत्नु होताय तो संसार ख्यं न्याय कर्सा है भीर विचार कर सेती है कि उन में से किस यनुष्य पर भपने मन का मेद प्रकट कर देने के कारण मखेता का दोख कराया जां मकता है भीर किम पर विख्वात का।

स्मरण रखना चादिये कि चतुराई कैवन बातों ही से प्रकट नहीं होती कि स्का पर एक काम में पार्ड जाती है चौर वह मानी ईस्वर की चीर से एक मुमाक्ष्त के ग्रहग इसी नियंत है कि जीवन के साधारण कामों में इस कोगों का राह बतनावे।

विदित है कि मनुष्य के चित्त में शोर वहुत से उत्तम गुण हैं परम्तु चतु-राई के वरावर कोइ माम टायक नहीं है क्यों कि सच पृक्षिये तो इसी के कारण भीगें का गीरव है, यही उन को उन के उचित समय भीर अवसरीं पर काम में मातो है भीर इसी के कारण उन के स्वामी को उन का पूरा साम होता है। इस के बिना विद्या प्रसिमान हो माती है, तोवता छुटता हो जातो है, मनाई दोष प्रतीत होतो है, सच्छा अच्छा गुण मनुष्य से भूम करात हैं भोर हर काम में वह हानि उठाता है।

चतुर मनुष्य नेवन प्रयने हो चित्त पर प्रधिकार नहीं रखता बिल्का प्रोशे के प्रचरणां पर स्वत्वप्राप्त कर सता है। वह अस मनुष्य मे बातं करता है इस की योग्यता को जान सेता है भीर इमे इचित रीति पर काम में काना कानता है। यब यदि हम सुख्य मुख्य ममाजों भीर ममुदायों पर विचार करें तो उस समाज को बातचीत का प्रगुपा न तो बुद्धिमान, न पण्डित प्रीर न बीर मनुष्य बिल्का चतुर मनुष्य दृष्टि प्राएगा भीर इस के कारण समाज का एक गौरव मानूम होगा। वास्तव में जिस मनुष्य में योग्यता कूट कूट कर भरी हो पर चतुराई नेक न हो उस को द्या पाकी फ़ेमम की सी है जिस का हाल किसी में निखा है कि वह बड़ा ही बबवान था परन्तु प्रभाषा भीर इस कारण से इस का वस व्यर्थ था।

सेरो ममाति से यदि सनुष्य में भौर चमत्कार को भीर चतुराई न को तो कंगर में उस का कोई गोरव न कोगा परन्तु यदि उस में यह गुण गूर्णता को पहुंचा को और भीर सब बातें साधारण को की तो वह अपने निज के व्यवकार में की कुक चाहि कर सकता है।

अब जैसा या में मनुष्य के शिये चतुराई का होना वहत उपयोगी सम

भाता इंवैसा को चाकाको को छोटी नीच चौर निकमा चिल के कीगों का भाग चीचता हूं चतुराई इस की उत्तम उत्तम बातें बताती है चीर हत के म्राप्त करने के जिये छन छपायों को काम में काती है को प्रचलित और प्रयं-मा शीख हैं। इस को विरुद्ध चासाकी कैवल घपने निज मनीरह के बाभी की देखती है और जिस रीति पर सन्धव होता है जन के प्राप्त करने का यक्ष कारता है चतुराई को विचार बड़े और दर्तक पष्ठ चे होते हैं भीर वश्र असी चंगी चांखों की भांति जहां तक हिए जाती है हर एक बस्त को देखती रहती है। चानाकी पास की वस्तृण टेखनेवाकी घांख की भाति है औ पास की कोटो सी छोटो बस्तभी को देख सकतो है परन्तु दर की वस्तुएं उस को नेक दृष्टि नहीं चातीं। चतुराई को को कोगी पर प्रकट दोतो जाती है उतना दी इस समुद्रा का जिस में यह गुण होता है समात में प्रधिकार प्रधिक होता काता है। चानाको कहां एक बार प्रकट हो गई फिर उस का गुण काता रहा है भीर मन्त्रा के चाय से वच बातें भी निकल जाती हैं किन्हें वच सीधा बन भार कर सकता है। चतुराई में बुद्धि की हटता चाभीष्ट है चीर वह जीवन को सब काभी में मनुष्य की नियोजना बारतो है। चालाकी एक प्रकार की धश्रभी की भी वृद्धि है की कोवन भवने हान के बाभ भीर भशाई की देखती है। चातरी केवन हट बुढि भीर उनम समभा के कोगों में पाई जाती है परन्त चाताकी प्राय: पश्चभी में शीर उन मनुषयों में कुछ २ उन्हीं की भांति हैं मिनती है। सारांम यह कि चानाको केवन चतुराई को नज़न है भीर निर्वेत कोगों के समीप ऐसी हो समभी ना सकती है जैसे कि प्राय: ससखरापन, सेधा और गमारित बुबिमानी समस्ती जाती है।

चतुराई मनुषा के चित्त का स्थामादिक ढंग ऐसा है कि वह भित्र को सोचता भीर विचार करता है कि चान के इज़ार या दो इज़ार वरस की धनन्तर इस को क्या देशा होगो भीर प्रय क्या है। वह भन्नो भांति जानता है कि इस को मरणान्तर को मुख मिलेगा चौर दु:ख़ सहने पड़ेगे उन में इतनो दूरो पर होने से कोई चन्तर नहीं हो सकता चौर यह वस्तुएं दूर होने के कारण इस को छोटो नहीं मालूम होतीं। वह विचार करता है कि यह मुख भीर दु:ख को इस के ग्रास्थ में घन्त में कि खे हैं। इर पक्ष इस के समीप चारी जाते हैं चौर इस के पाम इसी रीति पर पूरे पूरे चाएंगे के से का सह मुख चौर दु:ख को इस के पाम इसी रीति पर पूरे पूरे चाएंगे के से का सह मुख चौर दु:ख को इस इस समय प्रतीत होते हैं। इसी विचार से वह चयन

निशे छन वस्तुभी प्राप्त करने में चतुराई खूर्च करता है जिस से उस के चित्त को प्रस्ताता होती है भीर जो छन के उत्पन्न करने वाले की इच्छा के चतु-सार है। वह हर एक काम का चमता मोच सेता है भीर उस के पादि भीर भन्त के लाभ को विचार सेता है। वह चपने नाभ की हर एक छोटी छोटो प्राथाभी को यदि वह उस के भविष्य की विचारों के विद्य होती हैं छोड़ देता है।

स्मरण रखना चारिये कि मैं ने इस विषय में चत्राई को एक चमतार चौर अभी के साथ एक भकाई भी विचार किया है चौर इसी कारण से अस का वर्षन दोनी प्रकार से प्रा प्रा किया है। मेरी समक्त में चतुराई सके है संसार के कामों से नहीं बल्कि हमारे कुन सत्ता से प्रम्यन्य रखती है भीर वह केवल एक नाम होने वाली कीव को नियोजना करनेवाली बस्त नहीं है बल्कि एक चानो जीव को राष बताने वाकी है बुदिमान कीम भी चतुराई को यही गुण कहते हैं भीर एस को कभी चतुराई भीर कभी बुडिमानी के नाम से पुतारते हैं। सब पूक्तिये तो यह निस्तन्दे ह सब से बड़ी बुदिमानी है परन्तु भागन्द यद है कि इर मनुष्य छ है प्राप्त कर सकता है। इस के लाभ भनन्त हैं परन्तु इस का प्राप्त करना सड़क है भीर जैसा कि एक विश्व का सिडान्त है " बुडिमानी एक प्रति छत्तम वस्तु है जो कभी नहीं सुरक्षाती भीर को कोग इस से मीति कारते हैं वह उस से सहक में देखा सकते हैं चौर को उस को खोन करते हैं उन्हें वह सहन में मिल कातो है। को श्रीग उस की इच्छा करते इं उन्हें वह पहली पहला दृष्टि नहीं भातो परन्तु की सनुवार छस को ढूंढ़ता हे उमे दूर जाना नहीं पड़ता क्योंकि वह उस की उस की दर्वाज़े पर बैठी मिनती है। इसकिये उस का विचार करना बड़ी बुडिमानी की बात है भीर को मनुषा उस पर दृष्टि रखता है उसे इस की बहुत चिला करनी नहीं पड़ती क्योंकि वह भाप उन सोगी की खोन में रहती है जो अस के योग्य दोते हैं, मार्ग में छन से बड़े प्रेम से मिसतो हैं भीर अब बह विचार करते है तो साथ ही उपस्थित होतो है "।

ईषां (डाह)।

(स्पेक्टेटर से)

बहुत को गों का विचार है कि ईवी जाटू का इका रखता है चीर ईवी की टीन वाकी टिए ने कितने सम्पन्न को गों के सुख चौर चैन को नए कर दिया. है। सरफ़ान्सिस वेकन कि खते हैं कि कोई र मनुष्य ऐसे बहुमी देखने में चार्य हैं कि उन्हों ने वह करनु चौर समय नियत कर रक्खे हैं अब कि ईवी की टिएयों का बुरा फल पूरा पूरा होता है चौर उन का सिद्दा न्त है कि यह स्मा तभी उत्पन्न होतो है जब कि ईवी किमी बड़ी प्रमन्नता चौर चिभाना, की देशा में रहता है। उम ममय उस मनुष्य का चिन्त मानो मेर के किये बाहर निकलता है चौर तभी उन की बिन्न का घिन्त मानो मेर के किये बाहर निकलता है चौर तभी उन की बिन्न का घिन्त मानो मेर के किये बाहर निकलता है चौर तभी उन की बिन्न का घिन्त मानो मेर के किये बाहर निकलता है चौर तभी उन की बिन्न का घिन्त मानो मेर के किये बाहर निकलता है चौर तभी उन की बिन्न का घिन्त में देशों उत्तम बातों को चौन पुस्तकों से इस दुए च्यम्याम के विचय हकाड़ो को जा सकती हैं दुर-वार्ज गा बल्कि संसार के प्रतिदन के कार्यों के विचार से ईवी मनुष्य को खबस्था पर तीन बातों की विचय विचार कर्फ गा चर्यात् पहले उस के दु:ख दूमरे उस का घाव्यासन चौर तीसरे उस की प्रसन्तता !

र्हिया की दुःख की सामग्री हर भवनर पर जब कि उसे प्रमन्न होना भाहिये प्रस्तृत रहती है। उसकी जीने का सुख उनटा भिजता है भर्यात् जिन बातों से उन जीगी जो जो इस दोष से रहित हैं बहुत वड़ी प्रसन्ता प्राप्त होती है वही उस मनुष्य के जिये जो इस भ्रम्यास के भाषीन है दुःख का कारण हो जाती हैं। उस के सहवत्तियों सब गुण उस के चित्त पर कांटे की तरह चुमते हैं। जवानी, सन्दरता बीरता भीर वृद्धि यह सब उस की भ्रम्य कता उत्पन्न करती हैं। खेदयह कैसी निक्षष्ट भीर बुरो द्या है। गुण से रूप होना भीर दूसरों से केवल इसी किये बुरा मानना कि भीर कीग उन्हें भक्छा समभाते हैं। यद हैं ईपां का जीवन तुक्क है। वह केवल दूमरी की योग्यता या क्षातकार्यसा हो पर नहीं जुद्धता बल्जि ऐसे संसार में रहता है जिस के सब मनुष्य भपने सुख भीर खाम के यक्ष करने से सदा उस के चैन में विम्न उसकी के जिये मानो सहायता किया करते हैं। विचार एका पक्षा दूत ऐसे चित्त के मनुष्यों से भदा बात तो सगा रह कर बगनी घूने का काम करता है।

कह कि ही छन्दर युवा का पता देकर उन के कान में कहता है कि वह मनुष्य कि ही दिन वेकर की जोड़ी पर सवार परेड के मैदान के कि वा फाता हुणा हिए जाएगा। जब यह कोग उस की बात में ग्रंजा करते हैं तो वह अपनी वात की सवाई का प्रमाण देता है और जन्त को यह बतणा कर कि उस का एक बढ़ा नाना है जो सिवाय उम के भीर कोई उत्तराधिकारी नहीं रखता उन के मन के द: ख को दना कर देता है। इस प्रकार के गर्भ गर्म पुटक के ऐसे खभाव के मनुष्यी का जी जजान के किये विचार के पाम प्राय: उपस्थित रहते हैं भीर जब वह देखता है कि इस ममाचार के सुनते ही उन के विहर का रंग तो उड़ गया परन्तु का जा के मारे धीरे से कहते हैं '' भगवान इस समाचार को सुन के सुन कर कर यहा पर समाचार को सुन के कि हर ममाचार को सुन के कि इस समाचार को सुन के के कि इस समाचार को सुन के सुवान के इस समाचार को सुन के सुन के सुवान के इस समाचार को सुन के कि इस समाचार को सुन के सुन के सुवान के इस समाचार को सुन के सुन के कि इस समाचार को सुन के सुन के सुन के सुवान के इस समाचार को सुन के सुन के

ईर्षा कोगी का प्रबोध का हत वह कोटे कोटे दोष धीर धव गुण होते हैं की किसी प्रसिद्ध मन्वर्री में पाए जाते हैं। यदि किसी प्रसिद्ध प्रमाणिक मनुष में कोई काम उस की योग्यता के विकड़ हो गया हो या किमी भारी काम हैं जिम के उत्तम रीति में पूरे होने का यश एक मनुष्य की प्राप्त हुचा है चन्त में पक्के तीर पर मालूम को कि उन कार्य्यदलता में बहुत में को ग मिले थे भीर इम क्रिये वह प्रशंमा या यथ बहुत सं कोशों के बीच बट जाना चाहिये ती इंघेक कांगी को को को बहुत कुछ संतीष होता है। उन्हें इस बात की एक कियी हुई प्रस्वता होती है कि वह मनुष्य जिसे वह सपने की में बड़ा सम-भने नं निये वाधित हो चुके थे उन की प्रयंना के बहुत से भागवासी खड़े को नाने से वह घोड़ा बहुत उन को (ई प्रकों को) तुल्य के पद पहुंच गया। सुभी स्मरण है कि कई बरस हुचा एक पुस्तव विना रचयिता के नाम के छ्यी थी। इस पर अल्प योग्यता के कोगों ने जिनहें खयं उस के किखने की योग्यता न थी उस मनुष्य की प्रवक्तीर्त्त करना प्रारम्भ किया निस की कीग उस पुस्तक का बनाने वाका समभति थे। जब इस से कोई परिणामन इत्पन्न न इपा तो उन्हों ने यह सीचं। कि सीशों के चित्त से यह विचार दूर कार दें कि वह पुस्तवा उसी मनुष्य ने लिखी। जब यों भी विके तो यह बात निकासी कि उसे ती प्रमुख मनुष्य देखता जाता या और प्रमुख ने उसकी एडि की पृष्टियां तैयार किये हैं। तब तो एक प्रामाणिक मनुष्य से को उप समाज को साथ इस बाद में मिला था न रहा गया और इतना बीस की उठा कि म शाहिकी जब आप जीन यह जूब जानते हैं कि आप में से किसी शाहिक ने हस के क्यने में सहायता नहीं दो तो आप को जिये सब बरावर है चाहि किसी ने जिला हो "। परन्तु ऐसी योग्यता के कामों में जिन में किसी का नाम प्रकाट नहीं होता प्रायः ई प्रका जोगी का बीच का यह है कि कहां तक संभव होता है वह किसी को हम का माजिक नहीं बताते और इस हारा हम की ज्याति किसी मुख्य मनुष्य के हिन्सों में नहीं जाने देते। प्रायः देखने में प्राया है कि ई प्रका का चिहरा दूसरे को प्रसन्ता का हाल सुन कर एक बारगों मूख गया है परन्तु हमी के साम जब किसी मुख्य बात में हम की प्रभाग्यता का हाल बयान किया गया ती सामही जिला गया। यह कोई हम की प्रभाग्यता का हाल बड़ा भनी है तो देखियगा कि हम के मुंह पर पियराई दी ह गई पर यह हमी के साथ यह भी माजूम हुषा कि हम का बहुत सा कुन्बा, खाने वाला भी है तो हमी समय मुख के की रंगत पर पूर्वत हो जायगी।

चव यदि ईर्जाकी प्रमुखताकी देखिये तो वह उतनी घधिक होती हैं जित ना ईर्जा किये गये का बढ़ता है यदि किसी मनुष्य ने एक कठिन दुःख काम के करने पर उत्साह बांधा हो चीर इस में चनुतीर्ण हुचा हो या ऐसी बात के निये यह किया हो को पूरी उतरने की हाकत में सर्वमाधारण के काम की चीर प्रशंसा के योग्य होती परन्तु चव क्षतकार्यता न प्राप्त होने के कारच कींग उस पर हंबते या छुणा को दृष्टि से देखते हैं तो ईर्जा इस के व्यर्थ के उत्साह से छिणा करने के बहाने मन हो मन में इस बात से बहुत प्रमुख होता है कि चांगे उस मनुष्य को ऐसे बड़े कामों में हाथ डाज़ने की फिर

उपदेश करना।

(स्ये क्टेटर से)

मंगर में कोई बात ऐसी नहीं है जिस के मुनने में इस सीग उतने दिख-कात हैं जितना कि उपदेश के मुनने में। इस सीग उपदेशक के विषय विचार करते हैं कि वह इसागे बुद्धि के साथ भ्रष्टता कर रहा है भीर इस की वश्चा या मूर्ख समभाता है। इस उस को शिका को भएनी मुराई समभाते हैं और

कितना वह दमारी भवाई के किये उत्साद प्रकट करता है उतना की दम बन की मूर्ख़ भीर गंबार समभाते हैं। सच पूक्तिये तो को सनुष्य क्यदेश करने का बाना बांधता है वह इस भांति से इस पर चपनी बढाई प्रकट बरता है जिस का कारच केवल यह है कि वह चयनी चीर हमारी समता करने में या ती इमारे काम को बुरा समझता है वा इमारी समझ को बुरा विचार करता 🗣। इस विचार से उपदेश करने की कता जिस से दूसरे सोगों की इमारी बात कड़वी न जान गडे घत्यना कठिन है भीर इन्हीं कारणों से डास के भीर चगली समय के चन्यकारों में से निम मनुष्य ने इस विषय में जितना गीरव प्राप्त किया उतना की वह प्रविद्व हथा। उन में से किस की टेबिये उस ने एक एक ज़दा ढंग खीकार किया है जिम में सोगों को उस को शिक्षा क्षि कर हो। किसी ने शिका को उत्तम शब्दों का वस्त्र बनाया है, किसी ने उसे पद्म में गाया है, किसी ने दास्य के साथ गिला की हैं और किसी ने दस तात्पर्य से कोटी कोटी कारावतें लिखी हैं। पर मेरी मसाति में मब में समाम रीति उपदेश की कड़ानी है चाडे उस का दंग कैसा हो क्यों न हो। इस का कारण यह है कि इमरोति से इमारे मन को चोट नहीं सगती चीर न उस के विषय इस उस मकार की ग्रङ्का कर सकते हैं जिन का जपर वर्णन हो चका है।

विचार करने से यह वात सिह होगी कि कथा के पढ़ने से हम की विकास होता है कि मानी हम जाप ही जपने को छपदेश कर रहे हैं। प्रकट में हम स्वतिया की पुस्तक की मन यह लाने के जिम्माय से पढ़ते हैं जीर इस कारण से इस की शिक्षाची की जपने मन के उत्पन्न किये हुए परिमाण सोचते हैं। यद्यपि छन का प्रभाव हम पर धीरे धीरे होता जाता है परन्तु हम को इस को नेक भी ख़बर नहीं होती। हम कोग घोखे में बीखते हैं जीर जमावधानता की दशा में चतुर जीर बुहिमान होते जाते हैं। तात्पर्य यह कि इस प्रकार से मनुष्य का नेक विदित नहीं होता कि वह दूपरे का यह कर रहा है बिल्क यहा समस्ता है कि वह जपनी जाप करता है। जतः उस को उन बातों का जिन से मनुष्य को शिक्षा बुरी मालम हुना करती है का की धान नहीं होता।

एक दूसरी बात सोचने के योग्य यह है कि यदि हम मनुष्य को चित्त हित्त को जांचें तो यह दृष्टि चाएगा कि उसे का मन जितना किसी ऐने काम के कारने से प्रसन्त होता है जिस से उस को अपनी योग्यता भीर पूर्णता का यशिमाय विदित को सके जतना दूमरे से नहीं कीता। यक मनुष्य के जिल सा यह स्नाभाविक मीरव जीर करा। इ काकानी के पढ़ने में भक्ती भांति पूरा कीता है क्यों कि इस प्रकार की पुरतकों में पढ़ने वाका मानो आधा काम स्वयं करता है, उस की हर एक बात उसे ऐसी प्रतीत कोतो है जैसे उस ने धाप जाना हो, वह हर समय उस की सब बस्तुभों को एक दूसरे से मिसाता रहता है और इस कारण से धाप स्वयं पुरतक का पढ़ने वाका और किस्ते वाका हो जाता है। इस किये यह कोई बाद्य की बात नहीं है यदि ऐसे अवसरी पर जब कि मन भवने से भाग वहत प्रवन्न रहता है भीर अपनी समभा पर प्रसन्न होता है कोई मनुष्य इस प्रकार की पुरतकों को जिन से वह आनन्द मिसता है भक्ता समभी।

खपदेश नारने का यह नियम निस ने धनुसार सीधी पास की राह की कोड़ कर एक टेढ़ी चीर दूर की राह पकड़नी पड़ती है एतना विश्व रहित है कि पूर्वकाल के बुद्धिमान कीग वादशाही की कहानी के हारा शिक्षा करते थे। यद्यपि इस प्रकार की सैकड़ी कहानिया है परन्तु में इस स्थान पर तुर्की भावा की एक कथा वर्षन करता हूं।

बादत हैं कि सुन्तान सहसूद गुज़नवी ने दूनरे देशों से सह दा शा की स्थान देश में अत्यादार कर के अपने राज्य को नष्ट आप कर दिया शा और अपने देश में अत्यादार कर के अपने राज्य को नष्ट आप कर दिया शा और आधा हैरान एका इ हो गया था। इस बाद बाह के एक मंत्री था जिस की दावा थ। कि मुक्ते एक फ़क़ोर ने सब पिचायों की भाषा का समक्त हीना कता दिया है। एक दिन का हाल है कि बाद याह मंत्री समेत जंगल को शिकार खें कने के लिसे गया था और सायं काल के निकट वहां से खें में की भीर कीटा। राह में उस ने देखा कि दो एका एक पढ़ एक पढ़ पर को एक खंडहर घर को एका पुरानी भीति के पास था बैठे बोल रहे हैं। बाद बाह ने मंत्री से कहा कि में जानना चाहता हूं कि यह दोनों पत्रो आपस में क्या बात कर रहे हैं तुम भनी भांति विचार कर के सुम्म से कही। मंत्री ने पेड़ के पास जा कर एस को बातम्बीत को ध्यानपूर्वक छना। थोड़ी देर में वह वहां से कीट पाया और एस ने बाद बाह से कहा कि मैंने दोनों की बातों को सुना है पर खाप से निवेदन नहीं कर सकता। बाद बाह को इस एकर से और भी अधिक एका पढ़ा हुई और एस ने मंत्री को एन की बातचीत का एक एक प्रचर कर्णन करने के कि बिरो साला दी। एस समय मत्री ने यो कहना चार मा क्या

" बाद्याइ सनामत यह दोनों पिखयां चायस में बेटा बेटी के विवाद को बात चीत संद रहे थे। बेटे वासे ने कहा कि में चयने बेटे का खाड तुन्हारी बेटो के साथ इस घीत पर कफ मा कि तुम उस की प्रचान उनाइ गांव कन्धा-दान में देना स्त्रीकार करो। बेटो वासे ने उत्तर दिया कि तुम प्रचास को अंकते हो में पांच सो दंगा। ईख्वर सुल्तान सहमूद की घायु घिषक करे अब तक वह इस देश का बाद्याइ है इस की उत्तर गांव की क्या कमी है "। सुनते हैं कि सुल्तान सहमूद का चित्त पर इस बात का इतना घिक प्रभाव हुए। कि उस ने सारे नगरीं चौर गांवों को को उसी के कारण उनाइ हो गए थे फिर से बनवा कर बना दिया चौर जब तक कीता रहा सदा प्रभा को अखाई का ध्यान रखता था।

त्रशंसा ।

(बेशन से)

प्रशं मा भनाई की पर्काई है परम्तु वह हर्पण या उस वस्तु के सहय है।
जिस में पर्काई हिए भातों है। यदि प्रशं मा करनेवाले साधारम स्रोग हों तो
प्रशं मा कोई विख्वास नहीं हो मकता भीर वह अधिकतर ऐसे समुख्यों
की होती है जो केवल टेखने में भले होते हैं। इस कारण यह है कि
माधारण कींग वहतेरे कच्छो २ भनाइयों को नहीं जानते। इन है छोटी,
भनाई मनुष्य की प्रशं मा कराती हैं, माधारण भनाइयों को देख कर वह
पाश्चर्य करते हैं, चीर उत्तम भनाइयों के ममभने को बुधि नहीं रखते
निदान कि उन से दिखावट से खूब काम निकलता है। सब तो यह है कि
प्रमिद्द नहीं महग्र है जो हल्लो बस्तु मों को कुपर रखती है चीर भारी
बस्तु मों को दुवा देती है। परम्तु यदि योग्य भीर बुधिमान खोग एक मुंह
होकर किमो की प्रशंमा करें तो वह कस्तू में को सगन्य के सहग्र है की खारों
भोर भर कार्ता है चीर फून की सगन्य को भांति उसी चला जाती नहीं रखती।

प्रयंसा में रतनी स्थित भूठो वातें होती हैं कि यदि मनुष्य उस ने विषय कुछ सन्देश करे तो समुचित नहीं है जैसे कोई वर्षसा सम्बूषा की राह से होतो हैं। सब यदि प्रयंसा सरने वाका निरा प्रयंसक है तो वह साल मातें येसी कानता होगा को हर सनुव्य के विषय कही का सकती हैं। यदि वह चालाक है तो सनुव्य की गक्कति का ध्वान रक्केगा घोर कि सं वात में देखेगा कि वह सपने की वहुत कुछ समस्ता है छसी में उपकी प्रशंसा करेगा परन्तु यदि वह मूर्छ है तो किसी सनुव्यं को ऐसी बात, की प्रशंसा करेगा किस में वह धवने को निर्धे कानता है धौर इस प्रकार एस की दु: ख पहुंचाएगा। कोई प्रशंसा ग्रम चिन्तकता घौर गीरव की दृष्ट से की काती हैं भौर राजाचों घौर वहें परिकार के कोगों के किये पवस्य हैं क्योंकि यह कह कर कि वह ऐसे हैं उन की स्ताया काता हैं कि उन्हें ऐसा होना चाहिये। इसी मांति किसी र सनुव्यों की प्रशंसा सन्ता की राह से की जाती है जिस में कोग उन से खाह करें भीर एन की हानि पहुंचाएं। परन्तु मेरी दृष्टि में साधारका प्रशंसा सदि यथार्थ रीती की काय चौर साधारका की न हो अच्छी होती है। इज़रत सुलैमान का कथन है कि को मनुव्य धपने मित्र की प्रशंसा चिक्र भीर धम्मय करता है वह मानो उस की बुराई करता है क्योंकि किसी मनुव्य या बस्तु की सीमा से घिक्र वहाई करने से दूसरे कोगों की कक्षन पैदा होती है चौर वह उस के खंडन करने की चिन्ता में होते हैं।

भपनी प्रशंसा भाप करनी सिवाय ऐसे की किसी छवित भवसर के भच्छी नहीं होती परन्तु भपने घद या कार्य्य की प्रशंसा मनुष्य वस्तूबी कर मकता है। इस की पादरी की बड़े दड़े थोग्य कींग कीते हैं भीर भीर पदाधिकारी सैसे कर्ज, कासक्टर, राज दूत इत्यादि की व्यादे कका करते हैं जिस के यक भर्ष हैं कि स्वयं उस का उन का पद भर्यन्त प्रतिष्ठित है यद्यपि प्राय: भी लास इन त्यादी की भीन से पहंचता है वह उन से शासिक वहीं होता।

परिश्रम।

भला संसार लोई ऐथा ननुष्य भी शोगा की. विना परिश्रम चलना की बन व्यतीत कर सकता शे। मनुष्य की शहर परिश्र से सहग खाता, वापड़ा धोर रहने का खान वे लपाय किये नहीं मिल सकता इस की यह सब मुख्य घणने परिश्रम से शाम करना धीर बनाना पड़ता है। भगवान ने जिस भौति यह सब बस्तुएं इस के किये बाद श्यक बनाई हैं छसी क्रकार इस को धन को मात करने के शिये बुद्धि धीर बस भी दिया है। एस ने मनुष्य के

चित्त को ऐसा बनाया है कि उप से वे परिश्रम किये कभी रहा नहीं का सकता। यदि निश्चय कर के देखी भीर परिश्रम के भर्थ भक्षी भंकि सम्भी तो ऐसा एक मनुष्य भी न पाद्मीरी किसे किसी न किसी प्रकार का श्रम करना पड़ता हो। परिश्रम के भर्थ केवल बीक्ता उठाने या मिटी खोदने के नहीं हैं जैसा कि कितने की ग समभते हैं भीर हतो कारण से हम भूव्य को छूचा के साथ बीकते हैं जैसे यदि कीई कहि कि यह को ग तो परिश्रम उद्यम करके भपना पेट मर सेते हैं या यह वेचारे तो परिश्रमी हैं तो तुरन्त सननेवानी का ध्यान मीट छोने वाकों या मिटी खोदनेवानों या किसी भीर हमी प्रकार के को गों की भीर दी होगा। बहुतेरे श्रम करना केवल दुःख का कारण समभते हैं (मुख्य कर हिन्दुस्तान के धनिक) पर यह छन की समभ का फिर है। श्रम का परिणाम सदा भव्छा है।

अम दी प्रकार का होता है. एक ती वह निस में हाथ पांच हिसाना षर्धात् अरीर की श्रति खुर्च करनी पड़ती है भीर जिसे शारीरक अस करते हैं, दसरा वह किस में हाथ पांव के हिमाने का कुछ काम नहीं पहला बिस्क केवल बृद्धि के टीडाने भीर खर्च करने की भवध्यकता होती है भीर प्रभी किये इस की प्रचायम कहते हैं। यह वहें वहें सुन्दर, विशास राजग्रह. बागोचे, तालाव, जपाल, रेस, तार, प्रस्तवानय, पाठणानाएं प्रसादि सम ही के फल हैं। इन में से कितने ती शारीरवा अस ने भीर कितने बुहि अस भीर बहतेरे होनी को एक बाथ काम में काने से वने हैं। ऐसा भी नहीं है कि अस का परिचाम इर अवस्था में अस पूर्ण डोने ही पर मिकता हो, बहुतेरे काम ऐसे हैं जिस में जान का सुख साथ साथ मिलता है जैसे कश्यत (नियुद्ध) कारने के साथ साथ दी ग्रीर में कुरती भारी जाती है। बदन के दिसाने चमाने से क्या घाराम मिलता इस की सुख्य कर छोटे सहके खब जानते हैं जो दम मिनिट भी एक स्थान पर निचने नहीं बैठ सकते - चनना, फिश्ना, दौड़ना, कूदना यही उन की प्रस्ता का हित है। की कीम प्रनम्तर सात चाठ चंटे प्रतिदिन प्रारीश्क अम करते हैं उन की क्षक किये बिना एक दिन भी बिताना कठिन को जाता है कीर कदाचित कई दिन दशी प्रकार काटने पहें तो वह निस्नान्देह रोग अधित हो लायं। जिन कोगी की मारिरक अम करने का भवसर नहीं मिसता उन की खाकटर सीन शरीर की पुर्तो वनो रहने के लिये कम्रत करने इवा खाने, विकार खेलने की समाति

देते हैं। जैसे प्रशेर वे ज्यम के ख़राव को खाता है ठीक कसी मांति बुद्धि भी दिना काम में काये मंद को खाती है। बुद्धि का खेल ठीक तरवार का सा है कि जितना उस को मांकते और साफ़ करते रही उतनो ही ती क्या बनी रहती है परन्तु जहां प्रसावधान हुए मीचें ने उसे घा चैरा भीर उस की ती क्याता को नष्ट कर दिया फिर कहीं प्रावश्यकता पड़ी तो घोखा खाया। इस जिये मनुष्य को चाहिये कि दोनी ज्यमी को बरावर करता रहे भीर सदा इन के बढ़ाने का यह कर जिस से उस की इसति हो भीर संसार में नाम मात्र हो।

बद्ला लेना।

(बेकन से)

बदना सेना एक प्रकार का समस्य न्याय है जिस की रोक न्याय को उतनी ही करनी चाहिये जितनी की सनुष्य के चित्त उस को भीर फिरे क्यों कि जो। सनुष्य पहले सपराध करता है वह केवल न्याय के विश्व करता है परन्तु को बदना सेता है वह न्याय की सपतिष्ठा करता है। सच तो यह है कि बदना सेने से सनुष्य सपने यह के बरावर हो जाता है परन्तु ऐमा न करने से उस से कई त्रेणी बढ़ जाता है क्यों कि चमा करना बादगाहों का काम है। सुलैमान पैग़ब्बर को सपने समय में बुहिमानी के लिये परम प्रसिद्ध थे उन का सिहान्त है कि सपराध चमा करना मनुष्य के किये एक समिमान की बात है। हर मनुष्य को चाहिये कि गई बीती बातों का ध्यान न करे क्यों कि जो बात हो जाती है वह पक्त नहीं सकती सतः को कोग बुहिमान हैं वह वर्त्तमान भीर मविष्य की बातों की भीर ध्यान क्रते हैं पर की मूर्स हैं वह पिक्की बातों को भोकते रहते हैं।

संगार में ऐसे कम की ग हैं जिन्हें व्यर्थ किसी की हानि करने में धानन्द प्राप्त होना है बल्कि हर मनुष्य अपने किसी सुख्य काम या प्रस्ताता या हसी प्रकार की दूसरी बातों के किये दूसरों की दु:ख पहुंचता है अत: यदिं कोई मनुष्य अपने काम को देखे तो हम की उस से साष्ट्र होनान चाहिये। की कोंग व्यर्ध कि हो की डानि करते हैं उन को दया कांटों की ही है को दिवाय घाव करने के भीर कुछ नहीं कर सकते।

इमारी जान उनी बात का बदका लैना उत्तित है जिस की रीक न्याय में न हो परन्तु बदका लेने में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि बदका ऐसा को निस को न्याय को प्रमुनार दण्ड न मिक सको नहीं तो सन्नु को खुब बन पाएगो भीर उत्तटो भांतें गले यहाँगी।

कोई जोग मनु को जारा कर बदला लेते हैं। यह उपाय बहुत उचित है क्वीं कि इस से यह प्रकट है कि बदला लेने वाले का यह सिम्प्राय नहीं है कि दूनरे को हानि पहुंचे विल्का उन का यह सिम्प्रेष्ट है कि वह मनुष्य अपने किये पर पक्षताएं और पागे के किये ऐसा काम करने से दक्षे लिस का पिरामाण उन के लिये तुरा है। परन्तु बहुत को भी का चित्त इतना निक्तमा होता है कि वह धोखे में बदला लेते हैं जिस का प्रभाव तोर के भाति है। निदंधों और घातक मिनों के विषय भो एक मिन्छ मनुष्य की यही राय है। एस का कथन है कि धमी पुस्तकों में यह लिखा है कि शक्र भों का स्पराध खमा करों परन्तु मिन्नों के शिये ऐसी साझा नहीं है घरन्तु एक दूसरे मनुष्य की यह समाति स्थित उत्तम है कि यदि मनुष्य ईखर से भन्नाई को साधा रखता है तो उसे ब्राई से भी बचाव करना चाहिये।

विचार करने से एक बात ठोक मालूम होती है कि को मनुष्य बदका खेने पर छधार खाए रहता है वह मानी पपने घाव को नया रखता है की दूसरी | पबस्था में मुख जाता और उसे साम पहुंचता।

को सोग साधारण के साम के निमित बदना सैते हैं वह सब से पच्छे रहते हैं क्यों कि उन्हें हर मनुष्य प्रपगा स्तरंत्र करने वासा समभाता है जैसे कैंसर रूम पीर फ्रान्स के यहनसाह तोसरे हिनरों के मारने वासे समभी साते थे परंतु को सोग निस्त साम को सिये बदसा सैते हैं उन को विषय ऐसा स्थान नहीं होता बह्नि उन से हर एक छ्या करता है।

[92]

राजनीति।

भोड़ी नर के पेट में ने जैसे बात समाय बिनु मुवरन के पात के । बाखिन दुध नसाय ॥१॥ भास पापनी चारिये । पत्रक नैन की नार्ड तनक भीक चया पर परें विशेषनक सहि जाहिं प्रजापालियो तृपन की • धर्म जनत को बीच इया भाव को नीर सीं • सीत बहुत धन सीच ॥ ३॥ सिंड नाग गजमत्त सव · वधी होत किन मार्डि । देखे मुने न जग विषें • तृपति मीत कहं नाहिं गुप्त गंच जा ऋपति को · रहे सदा मति धीर ताके छर परि परन की · कक नहीं है पीर ॥ ५॥ मृति पास सञ्च नरन को छिनक न चाहिये वास यसत राष्ट्र भव चन्ट कीं । दीत तीन की नाम नीच नरन के सँग मीं · राज्य नष्ट की जाय उपजत कंड्वा • खेती सक्च नपाय ॥ ७॥ गोहिल गुरु गिरिराल कों . घटा राखियो तन मन धन प्रकृ पान भी . करे न्यति न्याव करें नित नीति सीं . निज नैनन सीं टेखि भनी बुरी सब कानि कर - दंड दीनिये पेखि ॥ ८॥ कडी सनी नर क्राटिस की . नडीं मानिबी जीग जिमि कुप्त के को जिये · बढ़ नित प्रति रोग न्हपति जो मंत्री दीन है . कीन राज है जाय विना नीम कांचे सदन . जिमि किन मांचि गिराय॥ ११॥ नर कुकीन नीयति मसी . तार्षि सौंपिये काम नहा गुनाम की साखि है । निसदिन करत हराम सरा पान पानस स्मन - पति को भन्नो न प्रोत ये सव नासत राज को . कन्द्रों कविन की गीत

ाक्रिक्ताः।

नेकरा राह रोह को नीको। इत ती श्राम जाते हैं तुव बितुं तुम ने लखत दुख जीकी ॥ ध्योधेष्टुं बेग नाथ करीना कार करह मान मते की की विशे हरीचन्द्र अठलानि 'पने को दियो' तुमहि बिधि टीको ॥ १॥

खुटाई पोरिहि पोर मरी'। हमेहि छां दि मधुंबन में बेटे बरी कूर कूबरी। ह्यारंथ छोओं मुंह देखें की हमें बी प्रीति बरी। हरीचन्द यूजेन के हैं के हाई। हम निदर्श । २॥

जना एकि किन भाषत कावत किसहि अवारे॥ मानी हम सब भाति पतिस अति तुम हयाक ती प्यारे। हरीचन्द ऐसिहि करनी ही तीं क्यों अर्थम उधारे॥ ३॥

प्रभु हो ऐसी तो न निसारों। कहत पुकारि माथ तुब रूठें कहुं न निवाह हमारे। जो हम बुरे होद नहिं चूकत नितहीं करत बुसई। तो फिर भले होई तुम छांदत काहें नाथ भलाई।। मी बालक असझाइ बेल में जनकी सुधि बिस- रावै। तो कहा माता ताहि कृपित है तादिन दूध
न प्याने ॥ मात पिता गुरु स्वामी आज नो न
जमा उर लावें। तो सिसु सेवक प्रजा न को ब विश्व जग में निवह न पावें॥ दयानिधान कृमा-निश्व केशव करुण मक्त भय हारी। नाथ न्यान तजतें ही बनि है हरीचन्द की बारी,॥ ४॥

नाथ तुम अपनी ओर निहारों। हसरी ओर ने हेखह, प्यारे किल मुन गनन विचारों। ॥ जो करते अब को जन ओरान अपने गुस बिसपर्ध। तो तरते किमि अजामेल से पापी हेह महार्ष्ध। अब को तो कबहूं निह देखों। अम के ओष्ट्रन प्यारे । तो अब नाथ नई क्यों किन आहह बार हमारे ॥ तुव पुन छमा दया सो बरे अब महि बड़े करहाई। तासों तारि छेह मन्दरण्दन हरीचन्द को धाई॥ ५॥

भेरी देखन नाथ कुमाली । लोक बेद क्रेडन सो न्यारी हम निज रीति निकाली श जेसो करम करे जग में जो सो तैसो फल पाने । यह मर जाद मिटावन की नित मेरे मम में आवेश न्याय सहल मुन तुमरी जग के सब मसवारे मानें नाम विठाई लबह ताहि हम निहम्म कूछे जाने ॥ पुन्पहि हेम हम्मक की समझस तासी महि विदेवासा ना द्वयानिधान नाम की केवेल प्रक हरिचरदहि आसा ।। ६ ॥

लाल यह नई निकाली चाल । तुम तो ऐसे निहुर रहे निह के कहें पिया नंदलाल ॥ हमरिहि बारी और अप कह तुम तो सहज द्याक । हरी। चन्द ऐसी निह की जे सरनागत प्रति पाछ ॥ आ अनीतें कहीं कहां हों सिहए । जग ब्योहारन देखि देखि के कब लों यह जिय दहिए ॥ तुम कछु ध्यानहि में निह लावत तो अब कासों कहिए ॥ दश्चंद कहवाइ तुम्हारे मोन कहां छों रहिए ॥ ८॥

आहें इतं बहुत मोह भुलायो । क्यह जात के बाहुं स्वर्ध के स्वादन मोह लक्ष्मायो ॥ मर्छे होत कि लेक होम की पुल्म पाप होउ केरी । होस मूझ प्रकारण स्वारण नामहिं में कछ मेरी ॥ इस में भूकि कृपानिक तुमरो चरन कमल बिस-रामो । तोहि सो भटकत कियो जगत में माहक जनम गंगमो ॥ हाय हाय करि मोह लंडि के क्ष्यं न भीरजं आन्यों। या जग जगती जोर जिमिन में आवसु दिम सब जान्यों। करतु कृपा करुनानिधि केशव जग के जाल छुड़ाई । दीन हीन हरिचंद दाम को वेग छेह अपनाई ॥ ९॥ दीन पें काहें छाल खिस्याने । अपनी दिसि देखहु करुनानिधि हम यें कहा रिसाने ॥ महा तुच्छ हरिचन्द हीन सो नाहक में हिहि ताने॥ १०॥ हमहू कवहूं सुखानों रहते । छांड़ जाल सब निसि दिन मुख सो केवल कृष्णहि कहते॥ सदा मगन लीला अनुभव में हम दोष्ठ अविचल बहते। हरीचन्द्र धनस्याम बिरह इक जग दुख तृन सम दहते॥ १९॥

कहो किमि छूटै नाथ सुभाव। माम मौध आभि-मान मोह संग तन को बन्यो बनाम साह में तुव माया सिर पें औरह करन कुळ्डा । हरीकद बिमु नाथ कृपा के नाहिंम और उपाम भान्य ॥ बेदन उल्टी सबहि कहीं । स्वर्ग लोग दें जगहि मुलायो दुनियां मूलि रही ॥ सुद्ध प्रेम सुव कहुं नहिंगायो जो खति सार सही। हरीचन्द इन के फन्दन परि तुच छनि जिय न गही।। १३।।
सूरता अपुनी समें बुबाई।। हम से महा हीन
किंकर सों करि के नाथ छराई। द्यानियान
छमा सागर प्रभु विदित नाम कहवाई।। हमरे
अघिह देखि तुम प्यारे कीरति तीन मिटाई॥
कबहु न नाथ कृपा सीं मेरे अघि हैं आधिकाई।
तीं किन तारि हीन हरिचन्दिह मेटत जनन
हंसाई॥ १४॥

कुद्रत हम देखि देखि तुव रीतें। सम में इकसी दया न राखत नई निकाली नीतें।। अजामेल पापी पें कीनी जोंन कृपा करि प्रीतें। सो हरि-चन्द हमारी बारी कहां विसारी जी तें। १९६॥ बड़े की होत बड़ी सब बात। बड़ो क्रोध पुनि बड़ी दया हू तुम में नाथ लखात।। मोसे दीन हीन पें नीह तो काहें कुपति जनात। पें हरिकद दखा रस उमड़े दरतेहि बनिहें तात॥ १६॥ हमारे जिय बह सालत बात। दयामिधान नाम सुन जोछत हम ऐसेहि रहिजात॥ जीरे अधी तो तरत पाप करि यह स्नृति कया सुनात। जनात ॥ जहं लों सोचे सुने क्रिये अंघ मदि बदि संशा जात । तउ न तस्न कों कारन दूजो हरि-चन्द्रि न छखात ॥ १७॥

अहो हरि अपने बिरदहि देखें । जीवन की करनी करनानिधि सपनेहं जाने अवरेखें ।। कहं न निवाह हमारों जो तुम सम दोसन कहं पेखें । अवगुन अमित अपार तुम्हारे गोह सकत नहिं सेखें।। करि करुना करुनामय माधव हरह हुख-हि खिले भेखों। हरीचन्द मम अवगुन तुव गुन दोडन को नहिं छेखों।। १८॥

मही न सकत जगत दाव तुरत दया कीजिए।
सहि न सकत जगत दाव तुरत दया कीजिए।
हमरे अबगुनहिं नाथ सपनेहं जिनि देखी। अपुनी
दिसि माननाथ प्यारे अवरेखी। हम तो सब
भांति हीन कुटिल कूर कामी। करत रहत प्रव जन के चरन की युलामी। महा पाप पुष्ट हुष्ट भरमहि तहिं जानों। साभन नहिं करत प्रक तुमहिं सहन मानों॥ जैसे हैं तैसे तुब हुमहीं पहिंदू प्यारे। कोज निध सहिंद लेह हम तो सहिंद हारे।।
हुषदसुता अनामेल मज की सुभि कीने। दीन जान हरीचंद बाहं पकरि छोजे॥ १९॥ जोड़ को स्वोज छाछ लरिये। हम जक्कन पें बिना बातही रोस नहीं करिये॥ मजुसूदक हरि कंस निकंदन रावन हरम मुसारि। इन जांवक की सुरत करो क्यों ठानत हमसो राशि ॥ मिन्छन कों बिध जस नहिं पहीं सांची वहत हुपाल । हरीचन्द बजहीं पें इनने कहा खिरपाने लाल २०॥

पियारे बहु बिधि नाच नचायो । यह महि जानि परी केहि सुख के बदछे इतो दुसायो ॥ बज बसि के सब ठाज गंबाई घर घर चर चास चळायो । हम कुछ बधुन कलंकिनि कुल्छा कारे डगर कहायो ॥ हम जानी बदनामी दे हरि करि हें सब मन भायो । ताको फल बों उल्हों दिन्से मलो निवाह निभायो ॥ ऐसी नहिं आसाहि नुम सों जो तुम करि दिखरायो । हरीयंद बोहि मीत कहाँ। सोई निठुर बेरि बनि आयो ॥ २६ ॥ जिनके देव गुवरधनधारा ते और हि बयों मार्ने हो । निरभय संदा रहत इनके वरु जनताहि तृन कृति जानें हो ॥ देवी देव माम मह मुनि वह तिनहिं नहिं उर आने हो । हरिमंद मरजह बियो

रक नित कृष्ण कृपा बल सान हो ॥ २२ ॥ हमारे बज के सरवस माधो । किन बत जोग नेम जप संजम ख्या ग्रोरि, तन साधो ॥ अप्ट सिक्रिव्यय निधि को सब फर्क यहें न और असमों। हरीचन्द इनहीं के पद जुग पंकज मन को बीध जम ताह पर ा। ६५ ॥ धिक छीए . पिय तोहि राखोंगी हिय में छिपास कि देखन देहीं काहु पियारे रहींगी कंठ निज ठायं ॥ पल की ओट होन नहिं देहीं लूटेंगी सुख समुदाय । हरीचन्द्र निधरक पाओंगी अधरामृतहि अघाय२४॥ भ्तुम सम कोन गरीव नेवाज। तुम सांचे साहेब करुनानिधि पूरन ज़न मन काज ॥ सहिन सकत सन्दे दुखी दीन स्जन उठि धावत वजराज हैं बिहवल होइ संवार्त निज कर निज भक्तन के कोज । स्वामी ठाकुर देव सांच तुम बन्दाबन महाराज । हरीचन्द तजि तुमहि और जे जांचत हैं।बिनु छाज़ ॥ २५ ॥ वं गर्भ, न्त्रें तो तेरे मुख पर वारी रे अंत्र इन अंत्रियन क्रों प्रमम पिया छिब तेरी लागत प्यारी रे ॥ तुम विका कल न परंत पिय प्यारे बिरह बेदना

भारी रे। हरीचन्द पिय गरे लगाओ पैयां परों गिरधारी रे ॥ २६ ॥

तुमरी भक्त बछलता सांची। कहत पुकारि कृपानिधि तुम बिनु और प्रभुन की प्रभुता कांची॥ सुनत भक्त दुख रहि न सकत तुम विनु धाएं एकहु छिन बांची। द्रवत द्यानिधि आरत छखतिह सांच झूठ कछु छेना जांची ॥ दुखि देखि प्रहलाद भक्त निज प्रगटे जग जैजै धुनि मांची। हरीचन्द गहि वांह उवान्यो कीर्ति नटी दसहुं दिसि नांची ॥ २७॥

मेथिली रामायण किप्किंधा काण्ड ।

रूक्ष्मण सहित राम रण धीर . गेरा पंपासर ऋष्य मुक पर्वत लग गेल . धनुष बाण करवीर महान की दहु एतय पटायोल बार्ला बाड निकट दिज अनि हनुमान . मातु असाधु ,बारू मन शाप 🖰

वर. मन बिस्मय जुत भेक तहि ठाम . सानुज प्रमु कयलिन विशाम ॥ एक कोश परि पृरित वारि . इंस प्रभृति खग बम जरु चारि ॥ ततय कृत्य क्यलीन जल पान . पनि डांठ दुनु जन क्यल प्रयान ॥ कपि स्प्रीव में देखइत भेल ॥ गिरि शिखरस्य बहुत भय पाय . बे ई थिक थि बुझल निह जाय ॥ बल्कल वस्त्र जटा शिर राज . तन्त्रइत तरु बन अछि स्त्री काज ॥ . की वृतांत न हो अनुमान ॥ मंत्री चारि विचारिय मेत्र . अवइत छाये दुहु बीर स्वतंत्रै ॥ . जयंता इमर प्राण की घाकी ॥

जुगुतिहि तेहन जनायब भाष ॥ नौ अनिष्ट बुझला मैं आव से सुनि ततय गेला हनुमान ॥ तस्तन पडायव राखव प्रान अति बिनीत किछु कहल न जाय ॥ केलनि ब्राह्मण रूप बनाय तीनि होक कर्ता भगवान ॥ केडी दुहु जन पुरुष पुराण 🔭 मानुष रूप विशेष ॥ ईश्वर कक्षण लक्षीत माया वप थिकहु दुहुँ जन परम उदार ॥ भूमि भार हारक अवतार ें अप्रम इत बन आनंदित कयल ॥ नगनाथ क्षत्री तन धयक इमरा यह न होइछ अनुमान ॥ अँह नर नारायण नहिं आन प्रति पालक छी धर्मक सेत् अयलहु यतय बुझल नहिं हेतू ॥ से शुनि प्रभु लक्ष्मण सी कहरू तखनुक समय उचित ने रहल ॥ ई मासण छथि पंडित बेश सुवचन रचन अशुद्ध न लेश ॥ 🛊 कहि कै तनिकाँ दिश ताक शुन वटु उत्तर दैछी अहाँक ॥ अनुज इमर छथि लक्ष्मण नाम ॥ दशस्य गृपक पुत्र हम राम भेल तेहन जे छल अक्वि भावि ॥ पिता बचन दंडक बन आवि रे. सीता काँ छल सीं हरि लेल ॥ दंडक बन मैं बड दुख भेल केछी ककर कहू से बिप्र ।। तनिकाँ तकइत अयलहुं विप मे श्नि बहल से बटुफेरि ।। श्याम गौर मुख पंकाल हेरि छिथि यदि गिरिपर ओ कपि राज चारि मंत्रि वर तनिक समाज ॥ राशि बालि क्यल तनिकां बनवाकि ॥ से सुप्रीव नाग गुण संपति नारि जेठ भय हरल शुग्रीनक शिर डाका पडल । अर्ध्य मुक गिरि शापक भीति एतय आवि नहिं करिथ भनीति ॥ मारुतपुत्र हनुमान सुप्रीवक छी मंत्रि प्रधान ॥ नाम क्षिनक्रों संग प्रभु मैली करिय मिल मित्र मिलि आपद तार्रेय ॥ इम एखनांह घुरि जायव ततय रुचि हो तौं चलुओ छथि ततय ॥ कहल राम हम मैली करव तनिक कष्ट सभटा इम इरव ॥ प्रगट रूप बनि सभ किछु वाहल सुग्रावक दुख ने सभ रहल ॥ इमरा कान्ध चहु दुहु भाय सुप्रीयक रूग देव पहुंचाय ॥ मारत सुत तत कहलाने जेइन सानुष राम कमक पुनि तेहन ॥ पर्यत उपर गेराइ इसर तर छाया भै प्रभु वैसलाह ॥

[53]

दोहा-पुछल चाकित कपि राज, अवइत देखक मरुतमुत 1 मन हार्षत की आज, काज मनोरथ सिद्धि सन हाथ बोडि कहलीि हनुमान . छथि अनकूल विष्णु भगवान मानस उचर परि हरू कापि राज . से प्रभु अयला अहक साज कारू मिलता होयन देरि . लयलहुँ अछि हम भाग्यहि फेरि साक्षी अनल बनल रघु मित्र . कि कहब अद्भुत राम चरित्र संक्षेपहि कहळाने हनुमान . सानुज राम थिकाथ भगवान निर्भय चलू मित्रता कारिय . घालिक प्रवल गर्व सम हरिय अति हर्षित मन भेल कपीश . गेला जतय राम रघुजगदीश वृक्षक शाखा लय कहुँ हाथ . देल ताहि बैशला रघुनाथ कुशल क्षेम बुझि वैश्वला संग . कहलनि लक्ष्मण सक्क प्रसंग शानि सुग्रीव राम सी कहल . करव सकल सब विधि हम टहक छाथे सीता जो विधि जेहि देश . बहुत शीघ बुझि कहब संदेश इयब सहाय शत्रु जय बेरि . एको कार्य करब नहि

्राह्म . प्रथ्वीराजरासी । . .

पृथ्वीराज जी का गुरु रास मे मब प्रकार की

m to make the first

दोहा — कोइक दिन गुर राम पें , पढी सु विद्या अप्प ! चवदसु विद्या चतुर वर , लई सीप षट लिप्प ॥ छंद ॥ ७२९ ॥ ६० ॥ ६७० ॥

पहरी।

लिपि मिष्य कुँअर प्रिथिगाज राज । गुरु द्रोन पास सुत ध्रम्म ताज ।
ॐ नमो सिद्धि प्रथमं पढाय । सब भाव भेद अष्यर बताय ॥७३०॥
दस पंच दिन अर्थेन कीन । दस स्यारिसार सब सीप कीन ।
सीपी सु कला दस अड स्यारि । तिन नाम कहत कृषि अग्य सारि ७३१॥
गुरु गीत जात जाजित्र नृत्य । सीस्यक मु बास्य सिवचार जुत्य ।

[58]

गिन गंत लंह बास्तुक विनोद
साकुल कला कीडन विसार
सुनु गेप कला जुत इन्द्र जाल
सीभग प्रयोग सुगंध वस्त
बानिज विनय भाषित देस
बरसंत समय इस्ती तुरंग
भू कटाछ सुलेप सल्य
सुभ सास्त्र कहे गनिकह पढल
व्याक्रल कथा नाटक छंद
धानक मुक्त सुन अर्थ जानि

द्हीं—कला बहत्तर करि कुसल , हेत आदि जानन निपुन ,

नैपथ विकास सुनि तत्त मोद ॥७३२॥
चित्रन सु कोग कि चवत चारु ।
सुचि कम विहार आहार काक ॥७३३॥
पुनरोक्त छंद वेदोक्त हस्त ।
आवद्ध जुद्ध निर्जुद्ध सेस ॥७३४॥
नार्ग पुरुष्प पंपी विचंग ।
वृग छत्र प्रष्ण उत्तर विज्ञ ॥७३९॥
किपतन्य चित्र कितता वचन ।
आवधीन दरस अलंकार वंध ॥७३६॥
मुर सर्ग कला बहुनिर बपान ।
छंद ॥ ७३७ ॥ ६० ३७१॥
अति निबद्ध जिय जानि ।
चनुरासीत बिग्यान ७३८ ६० ३७२

धारिख।

चतुरामीत विग्वानन जानन

गतिहा बीर सदा मन मोदन

दरमन श्रवन गीत वर वादी

लेपक वित्त बाज बक्तबनि

जुद्ध गनित एपी गज तुरगा

जंत्रन मंत्र महोछ्य पत्रन

करन पदास्थ आयुध केली

दृहा—कमल वदन रिव तेज कर

कल नित प्रति सीषत कला

भर गन मन आसंका भाजन ।

बहुतारे विचित्र छवीस विनोदन॥७३९॥

त्रत्य ब्रत्य पाठक पुनि आदी ।

सस्त्र सास्त्र जुद्धाकर तत्वीन ॥७४०॥

थापेटक दूतन जल उरगा ।

पुष्फ कला फल कथा सु चित्रन ॥७४१॥

बलकार सुत्रह तत्व पहेली ॥७४२॥

लष्यन संति बन्तीस ।

भावध धरन छतीस । ७४ । ७७

माटक ।

विद्या वंस विचार सत्य विनयनं सन्मानं संस्थान् सौष्य विजयं संपूर्णे च सरूम, रूप्न प्रसनं , सीच्यं समाधीनता ।

, सीजन्य सीभाग्यंयं ॥

चित्रं सदा चारनं

[44]

सांगीतं च सजोग चारू सकलं , बिस्तारयंते कला ॥ ७४४ ॥ ९८ ॥ दृहा--गुन गरिष्ठ गौ विप्र प्राते , पूजक दान वरीस ।

सन्द आदि दै निपुन अति, सास्त्रह सत्तावीस ॥ ७४९ ॥ ३७९ ॥ श्लोक — संस्कृतं प्राक्तनं चैव । अपभंशः पिशाचिका । मागधी क्रूपसेनी च । पट् सापाक्षेत्र बायते ॥ ७४६ ॥ ३८०॥

सन्देह।

विकान से

मन्च के विचारों में मन्दें ह ऐसा है जैसा कि प्रचियों में चमगाटर की मदा मांभा की छड़ने कानती है। सच पृष्टिये तो दसे वीकाना या यह न सबी तो इसकी घोर से भनी शांती मावधान रहना चाहिये क्योंकि यह चिन्न को मेच को भांति दक जेता है, इस के कारण बहुत में इष्ट मिण क्ट जाते हैं. मन्छ के काम काल में भन्तर भाता है भीर काम भैमा कि चाहिये चन नहीं मकता। इभी के कारण में राजा चन्छाय करने लगते हैं पति स्त्रों की सीर से विसन हो जाते हैं और बुडिमान करोलाड और विश्विप्त बन काते हैं। यह दोष चित्त में नहीं बल्कि मस्तिक से मध्यन्ध रखता है क्यों कि यह ऐने कीगीं में भी पाया जाता है जो चित्र के बहुत हट होते हैं। इसका एक उदाहरण इंगिजस्तान के बादगांच मार्तवें दिनशे थे क्योंकि उसके बराबर मंदें करने वाना और उमी के माथ चिन का हट सनुष्य उन के समय में दूमरा न था। परम्तु सारण रखना चा चिये कि ऐमे सोगों को संदेच से कोई ज्ञात नहीं पहंचती क्यों कि पश्चि तो प्रायः वश्च उमे पास पोठकने मधी देते चीर यदि दिया भी तो भनी भांति जांच कर कि उनका कुछ मार है या गर्शी। इसके विकृत हरवीक कीमों के चित्त पर संदेष का वष्ट्रत शीघ्र गुण श्रीता है। संसार में किसी बस्त में मनुष्य के चित्त में रतना चित्रक छंदेड नहीं उत्पद्य होता कितना कि उस बात के कम जानने से निस के विषय संदेश ही चत: संदेश से कुटनारा पाने की चीविध यही है कि इस के विषय में चीर चिक जाने चीर चपने मंदेह की जो तो न रक्षने दे। अव में पूकता हूं जि मनुष्य का अभिप्राय क्या है,

स्या वह यह विचार करता है कि जो भीग उस के नौकर चांकर हैं या जिन से स्त को कि सी प्रकार का संबंध है वह देवता हैं ? क्या वह नहीं जानता कि उन को भी चपने मनोरक का ध्यान है चौर वह पपने तात्पर्ध को प्रथिक देखते हैं। यत: येरी भक्ति में मंदेह को ठिकाने पर रखने का यही छपाय है कि क्षि सद मान को परन्तु हमी के साथ उसे मुठ की भांती रोके क्योंकि हस मै यह काम है कि यदि मनुष्य का मंदेह सद निकास तो वह पहने से कोई हवाय कर लेगा चौर हम में छम की जुक हानि नहीं है।

बैताल पत्रीसी।

सातवीं कहानी।

फिर बैतान बीका कि ऐ राजा चंपापुर नाम एक नगर है वर्षा छा शका चंपकेकर चौर राजी का नाम स्वभीचना चौर बेटी का नाम तिशुवन सम्दर्श की पति सम्दरी है जिस का मुख चन्द्रमा सा बास बटा से पांचे सन की बी भवें धनुष की नाक कीर की सो सभार कपीत का सा दांत कनार केरी दाने कोठों को काको जुंदक की धी कमर चीते की की काब पांव कीमल कमक बें रंग चंपे का सा गरज़ उन के जीवन की ज्योति दिनकदिन बहुतो थी अब वर्ष ब। जिना पूर्व तो राजा रानी घवन वित्त में चिक्ता करने की धीर देश र कें राजीं की खबर गई कि राजा चंपके खार के घर में ऐसी कन्या पैदा धुई है जिल के रूप की देखते हो सुर नर मुनि भी दित ही रहते हैं पिर मुख्या मुख्या की राजी ने अपनी अपनी सूरतें शिखवा नियाना बाह्यणी ने श्राय राजा चंपके आर की यहां भेज दीं यहां से राजा ने अपनी बेटो को सब राजों को तसबीरें दिख-साई पर उस के मन में कोई न समाई तब ती राजा ने याका तु खयम्पर कर वह बांत भी उसे न मानी भीर भपने बाप से कहा कि रूप बस चान जिम में वे तीनों गण होंगे पिता इसे सभी देना गरण जब जितने एक दिन कीते ती चारी दिया से चार बर चारी फिर उनसे राजा ने अडा चपना चपना गुण विद्या मेरे भागे जाहिर कर कही उन में से एक बोबा सुभा में यह विद्या है कि एक कपड़ा में बना कार पांच का जा की वेचता हूं जब उस का मीक मेरे दाथ याता है तव उस में से एक लाक बाह्मण को देता हूं दूसरा देवता की चढ़ाता हूं तोमरा अपने मंग लगाता हूं घौथा स्त्रों से बास्ते रखता हूं पांचव को वेचकर द्यये से नित भोजन कस्ताद् यह विद्या दूषरा कोई नहीं जानता भीर मेरा जो रूप है सो जाहिर है दूसरा बोला में जब यजने पश्ची की भाषा जानता हूं मेर वस का दूमरा नहीं भीर सन्दरताई मेरी चाय की चारी 🕏 तीसरेन कडा में ऐसा यास्त्र समभता डूं कि मेरेसमान दूसरा नृशी चौर खूब-मूरतो मेरो तुन्हारे क बक है चौधे ने कहा में अख्त विद्या में एक हो हूं दूसरा सुभा सा नहीं गब्द बेची तोर मारता हूं भीर मेरा क्य जग में रीयन हैं भाष भी देखते की है यह चारों की बात सुन राजा अपने को में चिन्ता करने समा कि चारों गुण में बर। बर हैं कि में कन्या दूं यह श्रीच कर इस ने बेटी के पास का चारों का गुण क्यान किया भीर कहा में तुमी किसे दूं यह सुन यह खाल की मारी नीची गई न कर चुर हो रही भीर कुछ जवाव न दिया इतनी बात क्षि वैतान बोना ऐ राजा विकास यह स्तों किस के योग्य है राजा ने सहा को कायका बना कर बेचना है मो जात का शुद्र है और की भाषा कानता है बच जात जा मैक्स है जो शास्त्र पढ़ा है सी बाह्मण है भीर शब्दवेशी उस का अजाती है यह स्त्री उस के सायक ए दतनी चात सून बैतान पिर स्वी पेड़ भी जह बादका श्रोद राजा भी वकां जा उसे वांच कांग्रे पर रख खर की कता.

भूगोल हस्तामलक।

हिन्दुस्तान-वनस्पति।

चन सीचना चाहिये कि लिस देश में दतनी नदियां बहती हैं चौर पानी की ऐसी इम्रात है पिर ज़मीन छपनाछ भीर छर्वरा क्यों न भी भीर यही कारण है कि की इस देश को घरती का गराजनक भीर वहुफता होना सार संसार में प्रस्थात की गया वरन चीर उपनाक देशों का क्से उपमा उक्साया श्रवां साम में दो प्रापक भीर वाशीं तीन तीन प्रापक भी काटते हैं चीर ऐसी विश्वी वस्त है कि जो यहां पैदा नहीं विक्रिस्तान चौर रीमस्तान सैदान चौर कोडिस्तान समुद्र से निकट थीर समुद्र सं दूर गर्म भार सर्व खुग्क थोर तर मब तंश्य को मुक्कों के अन्न फान फान भीर भीषि यहां मौजूद हें मनुष्य को नामध्ये नहीं जी यहां का जगत पहाड़ी को जड़ो ब्टयां का सारा भेद जान सेवे या लितने प्रकार के हुन्न उन में छीते हैं सब को गिनती कर को बन वे सब, कि को सदा इस मीगों का काम में पाते हैं उन के नाम नीचे किये जाते हैं खित री यक्षी कव नीकूं चावल चना ज्वार बाजरा मूंग मोठ मकी उर्द समूर सटर कोदी किराव घरफर सक्चा तिक तोसी राई सरसीं ज़ोरा भीफ धानवायन धनियां का हु कामनी मधी केंगनी सांवां चैना की सथ बायु फाफरा ाना। भांठ इनदो मन तम्बाक् मनोठ सिरचा कुम्म कवाम वीम्त नोन आख का सर काचुर रेडी अरवी श्रक्षरकंद ज़मीकंद रतालू बंडा खीरा काकड़ो तुर ई चारिये कटू की एड़ा देठा तर्ब्यु ज् ख्या जा भिंडी बोडा सेम चाल गीभी यसवस करेका मूकी गाजर शक्तम्म पथा ज्वाडसम डांग चुकत्दर छ। दीचका बेंगन, चौर बाग चौर अङ्गल पहाड़ में सेव नामपाती विशे गिलाम वादाम विस्ता यंगुर पालुवा पालुबुख़ारा शाष्ट्राना श्राम्तालू श्रष्टत्त न्दीपाजू पाल्रीट पाम धमक्द पनार पामला कीना सन्तरा नामुन गुनावनामुन को कट की ची का कस खिरनी कंका कमरख चं की रू सरी फ़ानी बूचकोरता धनकास पर्याचा कटक्क बदन करींदा कर्ड बहेड़ा बेर बेन क्स्टावरी सकी रसभरो कैपक ताड़ खजूर नारियन सुपारी तेजधात कोटो क्यी इकायची जायफन जावनी दारचीनी कृषवा धागू चन्दन रक्तझन्दन काकीमिर्च कवाब-चोनी कपूर कटामांबी कगर गुम्मूर घृष कोवान सुसव्यव सामीन साथ धीकों तुन नोम दमसो महुदा की कर पाकर खेर तो खुर चिरींजा पशास रीडा हमस

वह वीवव कदम क्षमार केत प्रामहा क्षपार प्रमक्तान श्रीक्षमरि प्रमा करिक्षार भीन चिक्रमीका सेनी मायच रीवान मरास देवदार महाह अक्ष भी अपन वेदस्यम् कनार कमीदा सर्व बांच बेत नवेंट स्वय क्रांसस द्व क्रम्बास चास किसदी भांग धतुरा पान टेंटी फीक करीक चाक आइनेडी, मुख्यारिये में शुवाब केवड़ा वेचा चंदेनो जाकी जुकी सेवती सदमवान सीगरा राम्रदेश नर्विस सगन्धरा सेवती सीसन गेंदा सुनदाखदी सुनन्धहंदी सुनह्पक्षिक्ष सुक्षाम गुलखेक कटकन मूनका इसरेशिन देखिया, भीर प्राकी में कामक बामोदगी मचाना मोना सिंघाडा बेनकदस्यादि वहुत्यम से होते हैं। सिनाय दन के बहुत से पान पून के इस घव, इंगरेज़ की मी ने दूसरे मुख्कों से माकार, इस देश में सगाए हैं भीर भगाते काते हैं मि किन मा दिन्दी में नामधी नधीं मिलता। डाबातर वालिच मादिव ने चार सी सपन मनार की कक्षकी (जिन से यहां काठ की चीज़ें बनती हैं) दकड़ो की थीं सदारनपुर में सक्तारी वासु के दिमियान पांच प्रकार किया से ज़ियाद: और काकसी में सकरिशे बाग को दर्भियान (जिस का घेरा प्राय: तीन कीस का फीवेगा) दश कतार क्षिसा में पश्चित्र हुन बोर्ध कमाए हैं और हासतर देट साहित के बस मन्दरात्र काते से नास किसा से अधर पेड़ ब्टे क्कहे कर के इंग्रिक्ट्रान को है सत । रीष्ट्रं नागपुर का प्रनिष्ठ है चावल व। है का सा (को प्रिशीर के कि में है) बड़ों नहीं दोता पुनाव बहुत सुखाद भीर सीनन्य बनता है सेर मद चावन मेर की भर को सोखता है भीर पूज कर चार सेर की बराबर की काता। चैना की बय वायू फाफरा ये चारों घदना विका ने पत्र नेवक किमा-स्य के पहाड़ी देशों में होते हैं चीर रमा दक्षिण के पहाड़ी में। मुख्या क् निकसा सा काची नहीं भीता, इस पेड़ का यहां पहली कीई नाम भी मही नानता था, अदांगीर बाटमाद ने प्रश्निकार से निस का ज़िकार एस ने प्रापनी किताव में विचा है मालूम फोता है कि यह काम की चील पहले की पहलू छत के भयवा उस के बाप फेकबर के समय में फ़्रकी सीग् भमेशिका से आए। चव तो इतनी फीस गई कि कोगों को इस बात का निख्य पाना भी कठिन है नापास यद्यवि बमरिका में भी होता है, परम्तु पुराने सहाद्वीय के सब् सुक्कों में इसी भारतवर्ष से फैनी। निकन्दर जब सत्तवन्न तक पाया शु ती इस के साथ वालों ने कपास के पेड़ देखकर बद्द प्रवरण माना, भीर प्रमूत कित्व में एसका गाम कन का पेड़ किछा, और छन की सह श्रीका की

बि यमान में की कन मेडियों की वीठ वर कमता है वह हिंदुस्तान में पेड़ी की बीच सामता है, नेवारी ने वर पहले काभी न देखी थी, कोवन पीस्तीन चीर क्रमी बस्त पहनते थे। यहां क्षे मासवे के दर्भियान बहुत पैदा होती है। वीस्त जिस के चक्रयम निजवती है मान्वे में बहुत होता है, चौर वहां की अज़रन अव्यक्त कि सा की जिनी काती है, सिवाय इस के बनारन भीद बंटने के बास पास भी बोया जाता है। नीन तिरहुत में बहुत हीता है। आच इसी जग्रह से बहुत दिकायती में फैकी है। पुराने यूनानियों ने इस मुल्य की चामनी खाकर बड़ा चासर्य माना, चीर कितायों में किखा कि डिन्द्रस्तान के बादमी भी मिक्खियों की तरह पेड़ी के रस से ग्रहर बनाते हैं। कैंसर की खेली कश्मीर के पामपुर परगने मात्र में होती हैं, भीर कहीं नहीं जमती. बड़ां केसर जंची जंभीन पर बोते हैं जिस में पानी विमान न ठड़रे भीर शींचते कभी नहीं, जख उस की पयाज़ को गहें की तरह होती है, भीर चडी गहु बीए जाते हैं पेड़ भीर पत्ते हस के कुश्यवास से मिसते हैं, भीर फूल कादे का कार कारिका में खिलता है, उसी फूल के भीतर पीकी पीकी या की सर रहती है। कास्मीर में की सर पंद्र ह रूपये सेर मिसती है, भीर चाकिम पंचास इज़ार कपए को पैदा होती है। तर्बुज़ मधुरता में इकाहाबाद का प्रसिद्ध है, और खुर्बुज़ कमासी प्रागर के। पासू भीर गोभी भी हिन्दुस्तान की तरकारो नहीं है, तस्वाक् की तरक्ष्यमहिका से चागई। गलग्रम सुटान में बंदूत बड़ा चीर मीठा चीता है। प्रयाज बंबई बाप्रविद्ध है। धींग का पेड़ सिख भीर मुलतान की तरफ होता है। सेव नामपातो विही गिलास बादाम विस्ता पंग्र सालूका पालूब्खारा शाहदाना शकतालू शहतूत जदीलू पछ-बोट ये सब कारमोर में बहुत भक्क भीर कई प्रकार के होते हैं, भीर हिमासय तटका दूमर ठंटे मुख्यों में भी मिल तं हैं, पर गिलास वस्मीर के सिवाय और कारीं नहीं होता बर्त नाजुन भीर वहां ने मेवीं का सर्दार है, फ़स्त उस की यन्दरह बोबरोज़ से पश्चिक नहीं रहतो, सावन के महीने में पालता है। सङ्ग्रूर कारमीर में किश्मिशी बहुत पच्छा होता है, बीज विस्त कुल नहीं गुच्छे आ गुच्छा ग्रवैन की घंट की तरक निगम जाथी, पर कनावर सा दस विसायत में कड़ी नहीं होता, गुच्छे चौर दाने भी बहुत बड़े चौर भीठे होते हैं चौर बडां चस्ते भी इतने कि चार पैसे की एक पादमी का बी की छी। गण-तास पर्क से बहुत देवरी जगह मही पालता। पाल बस्बई के बराब

कारी नहीं होता, पर बनारम भीर मानदह का भी बहुत प्रविश्व है, क्स सुल्क का खाम मेवा है, दूसरी विकायत में नहीं मिनता, भीर दुनिया कि सव नेवीं का सिरतात्र है, इस वा नाम फस्तफ्त सोगों ने बहुत ठीक बहुता, चासत भी उन से अधिक सुखाद न होगा, वह बाम सेर सेर से भी जापर वजन में जतरते हैं। बामना बीर बमक्द बनारस से बहुत तृहवा होता है। कीना विनष्ट मा उमदा भीर मीठा कहीं नहीं पाया नाता, भीर कहां इस की जंगना की जंगना खड़े हैं, क्पये की हज़ार हज़ार तक विकात हैं। कटहफ इतना यडा होता है कि पायद ऐसे वैसे कमज़ीर पादमी से तो उठ भी न सर्ते। इस्टावरी मनो रस्मरी भीर कायफल उत्तराखन्छ के देशों में पानकी कीते हैं। इड़ विसासपुर की सधकूर है, पर मुखी हुई दी तीसे से भारी नहीं शीती। ताइ दिख्णपाई घाट में इतन वह शीत है कि उस के दी तीन पत्त से कप्पर काजावे। नारियन भीर भुषारी समुद्र के तटस्य देशों में जमते 🔻 द्र नहीं होते। तेजपात इकायची जायफक जावची द्वारचीनी कृहवा साग् चन्दन रत्तचंदन भी। कामीमिर्च के दग्ख्त दिचयदेश में विशेष करके तुसव करन कच्छी और विवाकोड के दर्भियान कोते हैं। तेजपात भीर बड़ी दका-यची नयपान में भी इफ्रांत में जगती है। मागु के दरख़त की टहनिया काट कार उन्हें पानी में कूटते भिगात भीर घे.ते हैं, इन का को सत निकासता 🕏 खमो को चमनी में गर्म तथीं पर चामते हैं, वह भुन कर दाने दाने सा ही जाता है भीर मागदाने को नाम से विकता है। चन्दन और स्क्राचंदन के पेंदु वहां पश्चिमचाट में सलयागिर पर बहुत हैं, चंदन में जी कस्तु रहे उस में कहते हैं कि कोड़ा और मोर्चा नहीं खगता, इसकिये हथियार इत्यादि चीज़ी को रखने को लिये जिस में मीची प्रथ्या कीडा लगने का डर है प्रमीर कीश चंदन के संद्रक बनवाते हैं। पथरी की धरती में चंदन के पेड़ भच्छे होते हैं, चौर सब से प्रधिक उत्तम चंदन उन पेड़ों में उस खान का है भी धरती के मीचे चौर नहीं से जवर रहता है, चौर जिम का रंग खुव गक्रश होता है। चंदन काट कर गड़ीने दी महीने तक वड़ां मिट्टो में दाव रखते है, डिकात उस्ते यह है कि जगर का विक्ता जो नाकारा होता है विश्व कुन दीमक खा सेती हैं, भीर खुशब ग्रा विचकुत्र वाकी रह जाता है। काकी मिर्च प्राथाम में भी बोते हैं, चौर कपूर का दरख़्त मनीवूर में जमता है। चगर विश्व इट के कक्क में भीर गुम्मुर भवति गूगन सिंध में भीता है। कीवान के पेड़ 'ज़िवा-

क्षीह म भीर समझर की दश्कृत कांगड़े में बहुतायत से हैं। सामीन की अकड़ी को अवाक्ष मनते हैं, इस विशेषक बढ़े काम की श्रीज़ है, यह इस बहुआ विश्व शाट पर भीर चित्रगांव में ससुद्र के निकट दीता है। भीर सास जिसका परिचार के पास प्रचार की तराई में बड़ा भारी संगय है प्रकार द्यारत को काम में बाता है। खैर तीखर विरीजी वहुधा विकय के पड़ाड़ में भीर चीक चित्रश्रीका 'अर्थात् नेवका, कोली कायत रीवान बरास देवदार कबाइ मण्ड भोत्रपत्र किमान्य के पर्वत में भोते हैं। चीक का गोंद विरोक्ता भीर तेल नारपीन काइकाता है. पहाड़ी शीम मधान धीर वसी की लगह रात की छमी की सकड़ी जसाते हैं। बोसी कायन भीर देवदार से तीनी संनोवर की किसा हैं. चीरमद सवासी हाथ से भी पश्चित क'चे की वें हैं। बान की पंगवित्री में भीवा बहते हैं। पराम के पान नाच बाच बहत बड़े भीर सुदावने भीते हैं भीतपत्र अभी जगह होता है जहां से वर्णिस्तान का पारका है, बारह इक्षार फट में नोचे कदापि नहीं उगता । बेदम्यक चनार चीर छफ़ेदा ये काशमीर के हुन है, वेदस्यान से केवड़े की तरए युर्व निकानते हैं, वह केवड़े से भी श्रधिक गुण रखता है। वेत पश्चिमघाट के पशाड़ों में २२५ फुट तक संवा दोता है। चास के पेड़ घर सकीर की पालानुमार देहरादन और कांगड़े के पहाड़ी में जगन करी हैं, पहले चाय चीन के मिनाय चीर कही नहीं श्रीतो थी. पर कब जान पहता है कि दन उत्तरा खख्ड के पर्वती में भी वैभी की की कायगी। सर्कार ने इस बात के लिये बहुत कपया खर्च किया है; और छम की नयारों के निये चीन से बुनाकर वर्षा के चाटमों नीकर रखे हैं क्यों कि जाप पेड से पत्ते तोडते हैं तो उन को भाग पर गर्भ कर के भाशों से ससमने में बड़ी चतुराई चाहिये, कई बार जन की चाम पर सेकमा पड़ता है शीद कई बार डामी से मनना, पनाड़ों थादमी से यह काम मारो नहीं दन पहता, थ। याम के ज़िले में भो बीई जातो है। यान इस मुख्या की तुक्षा चीज़ों सं निना जाता है, बरन यह भी एक रख कहताता है। सखाना पुरनिया की सामानों में फनता है। गुनाव गृःजीपुर चीर चलमेर में बहुत होता है, चीर चंवे की को नपुर भीर बाढ़ में। पर चव से भाधक भासर्य का पेड़ डिंदुस्तान में मड़ है जि जिस की मधंता दूसरे विकायत वाकी ने पपनी किताबी से बहुत की विको हैं, जिस किसी स्थान में जान के समीप कोई प्रशाना यह रहता है भीर उस पर मीर भीर बन्दर नाचत कदते हैं मतिरम्य भीर सहावना होता के बौर उन को बहुन में टहनियां को घरतों में जह पकड़ती हैं सानी सालान और वारहदरियां बन कातों है, एक बड़ का मेड़ जिसे को मतीन हथार घरस का प्राना बतनाते हैं, नर्मदा नदी के किनारे भड़ोंच के पाछ हतना बढ़ा है कि निस के नोचे सात हज़ार घाटमी धक्की तरह घाराम से देश कर सकें, हसका बेरा पाय: चौदह सी हाय का होवेगा, भीर हमको टहनियां को घरतो । जह पजह गई है तीन हज़ार से कम नहीं। नाम हमका घरां वाले कवीर बड़ कहने हैं। निवायं इस के छपरे से पिश्नम खड़ां घरसू गंगा से मिनतों है मिनी नाम बद्दी के पाछ एक बड़ का पेड़ हतना बड़ा है जि निम को छाया गर्मियों में दो पहर के समय १२०० खुट के बेरे में घड़तों है।

बिद्या।

विद्या को कड यही मुख्य है. इसी मुख्य से विद्या निककी थी, सब से पहले इसी मुल्क के चादिसयों ने विद्या प्रभ्यास में चित्त कराया, भीर यहां के पण्डित सदा में नामो भीर जानी भीर भन्य सब देशियों के मान्य भीर शिरीमणि रहे। सिसर और युनानवाले किन्हों ने सारे फ़रंगिस्तान की भादमी बनाया, भवनं बढ़े पण्डिती के दाश में बदी कि कते हैं कि वे दिन्द-स्तान से विद्या शेख चाए. निकन्टर इतना वडा बाटमाइ किस की सभा में भरस्तू-रिमे बड़े बड़े थोग्य यूनानो पण्डित मौजूद थे, इस देश है एक पण्डित की जिसका मारा वहां वाकी ने काकन कि खे हैं भीर अवस में कार्याण मार्शन शीता है, दही खुशामद से भवन साथ से गया था, उम समय उस को बाध यहां से कोई महा परिष्ठत तो काष्ट्र को गया होगा, किसी ऐसे वैसे ही में यह बात क्षत्र को को गी, पर युनान वासे छम की प्रशंसा यो सिकाते हैं कि कितते दिन वह सिकन्दर के पास रहा, इस ने पापन बसन में ज़रा भी पूर्वी. न चान दिया, भौर चच्छों तरह हिन्द का धर्म निवाहा, भौर जब वहुत बढ़ा इया नो उन सब के साम्हर्न तुषानम वारके भवने भाग क्या गर्था। ईरान के प्रतायो बादमार बच्चाम ने यकां से गवेरी जुलवारी है, मान विद्या पन तक भी किन्दुम्तान भी द्वरी कगर नहीं है। क्यादाद के बढ़े खुकीणा माम ने बंशां से वैद संमधाय से, चौर सदा ककी वैदंग को देश फाता का, बंध्यें भी सन देश में बात्मतत्व च्योतिष गिषत भूगोन खगोन. इति हांसं नीति व्याक्षित कांक्ष बन्धार नाय नाष्ट्रक विका विद्या गर्म गान स्था गल हत्यादि सव विद्या के सच्छे सच्छे भीजूद थे, परंतु मुमनमानी ने सपनी स्मनदानों में इन्हिंगों के प्रास्त नष्ट कर दिये भीर फिर राज्य न्यष्ट होने के कारण इन विद्या की बाद न रहने से घटते घटते उन का पढ़ना पढ़ाना ऐमा घट गया कि सन तो कोई कृत्य भी यदि हाय नग जाता है तो उन का पढ़ाने सौर सम्भान वान्ना नहीं मिनता। सुमन्नमान वाद्याही के समय में लोग फ़ारसी स्वत्वी भोखते रहे, सव इन दिनों में संगरेज़ो विद्या ने उन्नति पाई है, स्करि ने हिन्दुस्तानियों का इत विचार उनके पढ़ने के निये जगह जगह पर मद्दर सीर पाठप्राने वैठा दिये हैं, सौर दिन पर दिन नये बैठते जाते हैं, उमेद है कि इस संगरेज़ी भाषा के द्वारा फिर भी हमारे देशवासी सब विद्याभी में निप्रण हो जावें, सीर जी सब नई नई वातें फ़रंगिस्तान वाली ने सपनी बुद्धि के बन्न में निकानो सीर नियंग्र को है उन से बढ़े फ़ायदे उठावें।

कविता।

यह रहीम सब संग छै, उपजत नाहिन कोय! विर प्रीति अभ्यास यश, होत होतही होय॥ निजकर किया रहीमकिह, सुधि भावी के हाथ। पांसे अपने हाथ में, दांब न अपने हाथ॥ रूप कथा पद चारूपट, कंचन दूबा ठाछ। ज्योंश्निरखतसूक्षमगित, मोठ रहीम विसाछ॥ वडन कोऊ जो घट कहे, निह रहीम घट जाहिं। गिरधर मुरछी धर कहे, कछु दुख पावत नाहिं॥ ज्यों रहीम सुख होत है, बढ़े आपने गोत।

त्यों बडडी अखियांन छख, अखियन को मुख देत। शसीकीसुखदजो चांदनी, सुन्दर सबे सुहात। लगी चोर चित जो लटी, घटत रहीम निकात ॥ शसीसकोचसाहससिळिल, साजे नेह रहीम। बढत बढ़त बढ़ जात है, घटे न तिनिकी सीम॥ ये रहीम बुधि बड़न की, घटि को डारत काढ़ै। चन्द कूबरो दूबरो, तऊ नखत सों बाढ़ ॥ बड़े दीन के दुख सुने, होत दया उर आन। हरिं हाथी सो कब हुती, कहु रहीम पहचान॥ कहि रहींम नहिं छेत हैं, रहो बिषय छपटाय। घासचरै पशु आप ते, गुर छोछाये खाय॥ रहिमन राज सराहिये, जो बिधु के बिधि होय। रिव को कहा सराहिये, जो उगे तरेयां खोय ॥ दुर दिन परे रहीम प्रभु, दुर थल जैये भाग। जैसे जैयत घूर पर, जवघर लागत आग॥ क्षमाबड्न कों उचित है, ओछन को उत्पात। कहुरहीम प्रभु का घट्यो, जो भ्रुगु मारीलात॥ जो गरीब सों हितकेरें, धन रहीम वे लोग। कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग ॥ कुटिलन संग रहीम बिस, साधुवचौती नाहि।

मैमा सेमा करत हैं, उरज मरोरे जाहिं॥ मनिह लगाय रहीम प्रभु, करि देखिह जो कोय। नर को बस करिबे कहा, नारायण बसहोय॥ कमुळा यह न रहीम थिर, सांच कहत सब काय ! पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चन्नला होय ॥ रहिमन अंसुआबाहिरे, विथा जनावत हेय। जाको घर से काढ़िये, क्यों न भेद कहिदेय ॥ जाय समानी अविध में, गंग नाम भयो धीम। काकी महिमा ना घटी, पर घर गये रहीमं ॥ बढ़त रहीम धनाढ्य धन, धनै धनी को जात। घटे बढ़े तिनको कहा, भीख मांग जो खात ॥ गुन ते छेत रहीम कहि, सिलिल कूप तें काढ़। काहु को हिय होयगो, कहा कूप तें बाढ़॥ रहिमन कहत जो पेट सों, तून भयों किन पीठ। भूखे मान घटावही, भरे डिगावे डीठ॥ मनिसज माली को उपज, किह रहीम निह जाय। फलश्यामा के उर लगे, फूलश्याम उर आय॥ जिनरहीम तनमन ियो, कियो हिये में भीन। तासों सुख दुख कहन की, रही कथा अब कीन॥ धरनी की सी रीति है, शीत धूप घन मेह।

तेसेही सुख दुख सहै , कहे उदीम यह देह ॥ नहि रहीम कछ रुप्रंग , नहिं मृगया अनुराम्। देशी स्त्रान जो बांधिये , भवन भूसने लाग ॥ आपु सदा बेकाम के , शाखा दळ फळ फूळें। रोकत जाय रहीम कह , औरन के फल फूल ॥ बड़े जो छोटन सों बधें , कह रहीम यह लेखा। सहसन के हय बांधिये, है कौड़ी की मेख ॥ जो रहीम करबो हुतो , आगे यही हुवाछ । काहे को नख पर धरो , गोबरघन गोपाल ॥ खाक चढ़ावत सीस पर, कहु रहीम केहि काज। जेहिरजरिखपतनी तरी, सों दूद्त गजराज ॥ जो रहीम भाबी कहूं, होती अपने हाथ । राम न जाते हिरन संग, सीता रावन साथ ॥ हितअनहितसब कोइकहे, की सलाम की राम। हित रहीम तब जानिये, जेहि दिन अटकेकाम॥ यारी छोड़ी यार ने , वे रहिम अब नाहि। अब रहीम दर दर फिरें, मांग मधुकरी खाहि ॥ जो सहीम गति दीपकी , कुल कपूत की सोय । बारे डंजियारों करें , बहें अन्भेरों होय ॥ कगत जाही किरन सीं, अध्वति तही कान्ति।

त्यों रहीम दुख सुख सबे, बढ़त एकही मांति ॥ जो रहिम छोटे बहें , बढ़त करें उत्पात। प्यादे से फरजी भया ., कितिरछे तिरछे जात॥ गति रहिम बड़ नरन को , ज्यों तुरंग व्योहार । दागदिवात आपने, सही होत असवार ॥ त्यों रहिम तन हाट में , मनुआ गयो बिकाय । त्यों जल में काया परे, छाया भीतर नाय ॥ संपत भरम गवांइ के , तहां बसे कुछ नाहिं। ज्यों रहीम शासि रहत है , दिवस अकासे माहिं॥ संपंत संपंत मान की , सब कोई सब देय। दीन बन्धु बिन दीन की , को रहिम सुध छेय ॥ दीनहि सब कहं छखतहै , दीन छखत नहि कोय। जो रहीम दीनहि लखत , दीनबन्धु सम होय ॥ ये न रहीम सराहिये , देन छेन की प्रीति । प्रानन बाजी राखिये , हार होय की जीत॥ हरि रहीम ऐसी करी, ज्यों कमान सर पूर। खेंच आपनी ओर की , डारिदियो पुनि दूर ॥ अब रहीम चुप करिरहो, समझ दिनन को फेर। अब दिननी के आह हैं, बनत न छागी देर ॥ दुर्दिन परे रहीम प्रभु, संबे लेथ पहिचान ।

सोच नहीं धन हानि को, होत बड़ो हित हान ॥

रहिमन पुतरी इयाम, मनहं जलज मधुकर लसे। मानहु सालिगराम, रूपे के अरघा घरे॥ रहिमन हमें न सुहाय, अमी पिआवत मान बिन। जो बिष देय बुलाय, प्रेम सहित मरिबो भलो॥

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का किर सकत कुसंग । चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग ॥ सर सूखें पच्छी उड़ें , ओरे सरन समाहि । दीन मीन बिन पच्छ के, कहु रहीम कहं जाहिं ॥ कहु रहीम कैसे निभे , बेर केर को संग । बे डोलत रस आपने , उन के फाटत अंग ॥ जो रहीम ओछो बढ़ें , तो तितहीं इतराय । प्यादें से फरजी भयों , टेंडों टंडों जाय ॥ खीरा को मुंह काटि के , मिलयत लोन लगाय । रहिम न करुयें मुखन की, चिह्ये यहि सजाय ॥ नैन सलोने अधर मधु , कहु रहीम घटि कोन । मीठो भावें लोन पर , अरु मीठे पर लोन ॥ जो विषया सन्तन तजी, मूढ ताहि लपटात । जो विषया सन्तन तजी, मूढ ताहि लपटात । ज्यों नर डारत बवन किर, स्वान स्वाद सों खात ॥

अभी हलाहळ सद भरे, सेत स्याम स्तनार । जियत मरत झुकि २ परत, जेहि चितवत इकवार॥ जो रहीम दीयक दशा, तिय राखत पट ओट। समें परे ते होति है, वाही पट की चोंट ॥ रहिमन सूधी चाछ सों , प्यादा होत उजीर । फरज़ी मीर न हूँ सकें , टेढ़े की तासीर ॥ बड़े पेट के भरन में , हे रहीम दुख बाढ़ि । गज के मुख विधि याहित, दए दांत है काढ़ि॥ ओछो काम बड़े करें , तीन बड़ाई होय । ज्यों रहिम हनुमंत को , गिरधर कहै न कोय॥ त्रीतम छिब नैनन बसी, पर छिब कहां समाय। भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरि जाय॥ गुरुता फबे रहीम कहि, फबि आई है जाहि। उर पर कुच नीके लगें, अनत बतौरी आहि॥ मान सरोवर ही मिले, हंसनि मुकुता भोग। सफरिन भरे रहीम सर, वक वालक नहि जोग॥ रहिमन रिस सिह तजत निहं, बडे त्रीति की पारि। मूबन मारत आवई, नींद बिचारी दोरि॥ जो पुरषारथ ते कहूं , सम्पति मिलति रहीम। पेट लागि बैराट घर , तपत रसोई भीम ।

संपति भरम गंवाइ के , हाथ रहत कछु नाहिं। ज्यों रहीम सास रहत है, दिवस अकासहि माहि॥ अनुचित उचित रहीम लघु, करिहं बड़े न के जोर। ज्यों सिस के संयोग ते, पचवत आगि चकोर ॥ काम कछू आवे नहीं, मोल न कोऊ लेइ। बाजू टूटे बाज को , साहब चारा देई ॥ धनि रहीम जल पंक को, लघुजिय पिअत अघाय। उद्धि बड़ाई कोन है, जगत पियासो जाय ॥ मांगे घटत रहीम पद, कितों करो बढ़ि काम। तीन पैग बसुधा करी, तऊ वावने नाम ॥ नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत। ते रहीम पसु ते अधिक, रीझेहु कछू न देत ॥ रहिमन कबहूं बड़न के, नाहिं गर्ब को छेस । भार धरे संसार को , तऊ कहावत सेस ॥ रहिमन नीचन संग बिस, लगत कलंकन काहि। दूध कलारिनि हाथ लखि, मद समुझिहं सब ताहि॥ रहिमन अब वे विऱछ कहं, जिनकी छांह गंभीर। बागन विच बिच देखियत, सेंहुड़ कंज करीर ॥ बिगरी बात बने नहीं , लाख करी किन कोय। रहिमन बिगड़े दूध को , मथे न माखन होय ॥

मथत मथत मासन रहे, दही मही बिलगाय ।
रिहमन सोई मीत हे, भीर परे ठहराय ॥
होय न जाकी छांह दिग, फल रहीम अति दूर ।
बाढ़ें उसी बिन काजही, जैसे तार खजूर ॥
रिहमन निजमनकी बिथा, मनही राखो गोय ।
सुनि अठिल हैं लोग सब, बांटि न लेहें कोय ॥
गिह सरनागति राम की, भन्नसागर की नाव ।
रिहमन जगत उधार कर, और न कछू उपाव ॥
रिहमन वे नर मिर चुके, जे कहुं मांगन जाहिं॥
जन ते पिहले वे मुए, जिन मुखनिकसंतिनाहिं॥
जाल परे जलजात बहि, तिज मीनन को मोह ।
रिहमन मछरी नीर को, तउन छाडित छोह ॥
धन दारा अरु सुतन में, रात लगाए चित्त ।
वयों रहीम खोजत नहीं, गाढ़े दिन को मित्त ॥

दीवो चहे करतार जिन्हें सुख कीन रहीम सके तिन्ह टारे। उद्यम कोऊ करी न करी धन आवत हें चलो ताही के द्वारे॥देव हंसे सब आपुस में बिधि के परपंच न जाहि बिचारे। बालक आनक दुंदु मी के भयो दुंदु भी बाजत आन के द्वारे।

स्रसागर ।

गामविष्ठागमा ।

भरोसो दृढ इन घरनाने केरो । श्रीवल्लम नखचंद छटा बिन सब जगमाँझ अधेरो ॥ साधन और नहीं या कलि में जासों हाब निवेरो । सूर कहाँ कहै द्विविध आँधेरी बिना मुळ को चेरो ॥ १॥

रागविकायका ।

दिवसुत जम्यों नंद के द्वारे । करपल्लव ही टेकि रह्यों सब सो सुत अरुक्यों द्वारिह द्वार । साखा पत्र जसोमिति के प्रह फूलत फलत न लागी बार । ताकों भोलन गन गंधर्व मुनि ब्रह्मारुद्र श्रुति करिंद विचार ॥ दोन वचन बोलत व्योपारी रहे ठगे तहाँ मनहीं मझार । सुरदास बिल जाय तिहारी बृजिबनिता किने उरहार ॥ २ ॥

रागटेवगधार ।

देखरी देख अडूत रूप। एक अंबुज मध्य देखियत श्रीस दिध मृत जूप॥ एक अवली दोष जलचर उभै अकंअनुप। पांच वारिज दिलाई देखियत कही कहा सरूप॥ सिसु गति में भई सोभा करहु चित्त विचार। सूर श्री गोपल की छाबि राखिये उरधार॥ ३॥

देखो दिध सुत में दिधजात। एक अधिमी सुनिरी सजनी रिधु में रिधूसमात। तापर कीर कीर पर पंकज पंकज के दे पात। अचरज यहै देखि पसुपालक कूले अंगन मात। सुंदर बद्दन बिलेकि स्थाम को नंदमंहर मुसुकात। ऐसी ध्यान धरै जो हरि को ताकी सुरदास ब लिजात॥ ४॥

आज तोहि काहे आनंद थोर। यह अचरज सिख तोहि पैं पार्व विधु अनु-राग चकोर ॥ दिधमह युग्म क्यों न तू वानत मुक्कित अंबुझ भोर। सूरदास प्रभुरिसक सिरोमोन हरि जै लियों मन मोर ॥ ५ ॥

कार्याक करित के अवस्थितायम । जनसङ्ख्या । अवस्थित के अधि कि

सोभा आजु भली बनि आई। जलमुत ऊपर हम बिराजत तापर इंदु वर्ध - दरकाई।। दिन मृत लियो धन्यौ दिवसुत में यह छिब देखि नंद मुमुकाई। नीरज सुन बाइन को भक्षन मुरस्याम के कीर चुँगाई।। ६॥

रागन्छ।

जिन करि जलन पर जलनात । धातपित दाहन तिहारो सकल लेक सिद्दात ॥ रिसपयोधि निधान सों कुरु राज छोड़ सुभाय । स्रमुत सिख सुनि सखी रावे इंदु अंसननाय ॥ साठ अष्ट है चरन जाके कर्ताहिये दुखदेत । क्यों न गिरिजा नाथ आरितिय मानि सब मुख लेत ॥ लाल संग मगल भोजन गाल करिये दूर । सूर श्री मनमोहनी मान भोग भागिनि सूर ॥ ७ ॥

कही कोड परदेसी की बात । मंदिर भाग अरध कार कहिंगेये हार अहार चिक्रजात ॥ सिस रिपु बरप म्रारिपु जुगभर हरिपु की अवधाट । नखत बेद प्रह भिक्ने अर्द्ध कारे सोइ बने अब खात ॥ रिव पंचक ले गये स्थामधन तातें मन अकुलात । स्रदास बस भई बिरह के करमीडे पिल्लतात ॥ ९ ॥

दिध सुत साँ किनवार्त मृगनैनी । मुनि उडुराज अमृत मय गांत कों तानि सुभाव बरपत कित दहनी । उभयापति रिपु बहुत सतावें हरिरिपु प्रांतम लागत गहनी ॥ छिपा छिपन छिन होतिन सजनी भूमिडसन रिपु कहाँ दुरानी । भुवन न भाव चितवति हीं पीतम को आवनी ॥ ८॥

राग सार्ग ।

हीर बिनु कैसे कार्र बृज जीजें। पंकाब बरिष बरिष उर ऊपर सारंग रिपु जल मींजें।। तारापति के रिपु सिर ठाडी निमिष चैन नहिं दोजें। चंदचीय जाय गोपन कीं मचुप राखि जस लीजें।। वायस अला शब्द की किलंनी ता कारन तन छीजें। स्रदास प्रमु हो जगजीवन बेगहि दरसन दीजे। १०।

Transfer out the NE STEEL COURSE SELECTION

गिलबहु पारय मित्रहि आनि । जलज सुत के सुत हित किये भई रस की हानि ।। गिरिसुतापितिलिक कसकत इनत सायक तानि । दिधिसुता सुत अविक उर पर इंद्र आयुधमानि ॥ पिनाक पितस्त तासु बाहने भवकभ प विषक्षानि । साखामृत रिपु बसन मलयजहुतहुतासन जानि ॥ धर्म पुत्र के जरिभाएँ तजिति सिरधरि पानि । सूरदास विचित्र विरिद्दिन चूक निज जिय जानि । ११

[204]

श्रीमती महाराज्ञी इङ्गेलेंडेश्वरी कीन विक्टोरिया यात्रा

काटलेंड की पहिली मेर का हाल।

सोमवार अगस्त २९, १८४२ ई० " रायळजार्ज " जहाजू ।

खन को पांच बन रेन गाड़ी पर सवार होने के बिग्ने हम होग मुकास थिंत्र में चक है हचेज़नारफोन धीर सिम्सिटन्डा पेगेट धीर जेनरलविभिम् भीर करनेनबीदरो धीर धम्मनसाहित माय थे नाई निवरपून धीर काई मटेन् धीर मरजिम्मक्ताक पहिली से डलविच में जा उहरे थे धीन क बजे लंदन में पहुंच कर घपनो भएकी गाड़ियाँ पर मवार हो सात वर्णने से पेश्वतर उन-विच दाख्न हुए फिन्क फ़ीर घानवर्ट और हम नहाज़ पर मवार हुए इस के देखन के निये बड़ी भीड़ थी।

च्यू जनस्थित कीर लार्ड जर्बी कीर नार्ड हिंड गटन कीर नार्ड ज्यू मफ़ी स्ड चयनो २ पूरो वर्दी पनन इप हाज़िर दी सरजार्ज ने मेरा हाथ पनड़ कर जड़ाज़ पर पहुंचा दिया पानी खून बरम रहा या हुए निये हम जीग न आज़ ने चन्दर चयन चयन कमरें में बैठे रहें।

इसारे साथ को नहर में भी उद जहाज़ थे उन के गात नोचे जिस्के जाते हैं।

- १-पिक ३६ तीयवाला।
- २—डाफिन १८ तोपवाना।
- ३ मनामंडर घंएं का उस पर गाड़ियां थीं।
- 8-रेडामें बर घं एं का उस पर कार्ड किर्पेन छो। कार्ड मर्टन सवार थे।
- ५-सङ्घोधं मं बा उछ पर अंसनमाडिव धोर शागिर्द पेश के कांग मवार धे
- ६-गोधरवाटर घुंगं को उस पर वरजीम्बङ्गार्क सवार थे।
- च्याकर्षमण भूण का उस पर मैस कीन सवार थीं।
- प्-लैटनिंग धूंप का उस पर वेंडा ख़िदनतगार भीर इसार दो असे
 - इचीन वीर कंचनीक सवार थे।
- ८-- फ़ी चर्लेंस घुं यं का वानी नापन की।

यह जहाल बहर में हम कोगों के हमराह थे निवाय हन के दिनिटी ही व नाम घूं पंका भीर एक हाक का जहाल भी साथ था और होर्टा छोटी घूं पं की किम्तियां तो चादमियों से भरी हुई पीछे पीछे वैश्वमार थीं।

मंगलवार अगस्त ३०।

श्वना कि चाठ बजी रात से घव तक शिर्फ चहावन मोन वाये हैं तबी यत निशायत दिवा हुई दिन भर क्षेटे रहे ग्राम को समुद्र में कहरों का ज़ीर या चौर मेरो तबी यत नाटुक का बड़ी साट़े पांच बजी यार्क गायर के किनार पर मुनास्यरोहिड में इस की ग पहुंचे।

बुधवार अगस्त ३१.

पांच बजे सुना कि रात को इसारे जड़ाज़ कुल तीन सील को खंटे चले भीर इस डिसाव से सेन्ट्रीवमड़ेड ने पवान सील बाये बक्र भीत हथा।

रास्ते में को कंट का टापू घीर नार्ध खरके न्ह के किनारे पर वाखरों का किना था मगर घफ़ भोध कि उन के देखने का इत्तिफ़ाक् न इपा घपने कमरे में फ़िरनों का टापू कि जिस पर यसड़ार्किंड् का रोशनों का मोनार कहाज़ वालों को राष्ट्र बतनाने के किये बना है देखा राकी भीर हो जो के टापू भो नज़र घाये साढ़े पांच बजे जहाज़ के सहन पर घाकर में केट गई घब स्काटकेन्ड का बहुत सन्दर्श किनारा दिखाई दिया यहां के ममुद्र का किनारा कुछ घीर हो तरह का है उस के छांचे छांचे खड़े पहाड़ के प्रस्र कालि २ जंगनों तरह के बहुत खूबमूनत नज़र पहते थे भाड़े छ बजे सेनृष्टि प्रवृद्ध से घारी बढ़े बहुत लोग शिकारों डी गियों पर जिन में से एक पर वासरों बज रही थो घीर कितने ही की मधुं को किश्ति हों पर हमारे देखने को भाये एक बड़ी छूं एं को किश्ति हों पर हमारे देखने को भाये एक बड़ी छूं एं को किश्ति हों पर हमारे वाजा बजता था यह बक्त शाम का धत्यन्त मनोहर चीर समुद्र स्थार था सूर्य बहुत सुन्दरता से भस्त होता था घीर प्रवन बहुत शह चल रही थो।

दर श्रासूस को यदा श्राने में मासूस होगा कि दिन इह जिस्तान से कितना बड़ा होता है साढ़े बाठ बजे तक श्राच्छी तर श्र शंधेरा नहीं हुआ था हो म-बार भीर संगत्त की शाम को जब हम कोग विंजर में थे माड़े सात ही बजी संधेरा हो चला था भीर बाठ के पहिले दिलकान संधकार हो गया था को गी में नाचर्न का इजाज़त सी एक छोटा सा जहाज़ के खुझा हो का कड़का देशा बजाने सगा दस की भाषाज़ पर वे नाचे भीर गाये। नी बजने में पद्योग सिनट बाको रहे तक हम की ग जहां की गहन में रहे थीर स्काट के के किनार पर हंगर थीर टिनिंग हम और आई हिएंगटन के सकान में थीर २ भी कई मुकामी में खुशों को रोशनियों » जनती हुई देखों हम को गों ने भी चार यान छुड़ वाए थीर दो नो लो रोशों के सैन्टैन जहां को सस्तून पर चढ़ वार जहां जा ख़बा वियों का सस्तू भी पर चढ़ना देख कर निष्ठायत हैरत थातों यो थीर तमाशा यह कि चाहे रात हो चाहे दिन हो उन्हें दो नो बराबर हा वह को कैन्टैन सस्तून पर की गया पवने दोतों में दवाकर मानों सस्तून पर दीड़ गया ग्रह की ग जैसे चाका कर बेसे हो ससी शास सी हैं।

रंखा का धन्यवाद किया थीर वडी खुशी सन। र कि सफ़र ख़नश कीने पर भाया।

बृहस्पति सिसेन्बर ११

सवा वर्जी संगर गि। ने को सवाज सनी भीर वह बहुत ध्यारी मालूम हुई मान वर्जे हम जीग जहाज़ के सहन पर आए और वहीं हाज़िरी खाई एक तरफ़ तो जीध और एडक्सरा के कंचे र पहाड़ कुदाने में ठंके हुए दिखलाई देते थे और दूसरी तरफ़ में का कोटा ट। पूर्द कर्न में चाता था मग्रहर है कि हमी नगह मैक्डिफ़ ने मैक्डिथ से सुकाबला किया था पोछे की तरफ़ हम कोगों के ध्यासराक का पहाड़ था था। ठ छंटे से दंस सिन्ट कपर हम कोग खेल्टनपायर पर एडंचे वहा खू क्वोक कियो भीर मर्गवर्ट पीक चादि से सुनाकात हुई वे जहाज़ पर हम कोगी से मिकने बाये और सर्गवर्ट में चाज़ी किया का पहाड़ था का हमित करा हमें हुई थो चाज सब कोग महारानो के दर्भन से साखलत बाल्डादित हुए हैं हम कीग हमके बाद कहाज़ के बाहर निकले कीगों ने जयकार की तौर पर खुबी ज़ाहर को और छा कर हम कोग पहिले हो बाज़ से ज़ाने पर उत्तर हुने थे चव हम दोनों इतरे बोवो चीर साहब कोग पहिले हो बाज़ से ज़ाने पर उत्तर हुने थे चव हम दोनों इतरे बोवो चीर साहब हो। साथ हुए ह्या का भीर संवार भीर ऐसान माहि र बोड़े पर हो ज़िये।

एडस्वरा मं चादमी ती इब कृदर नहीं हैं पर भीड़ शीर काइमक्षण इतनी

^{*} वहां दस्तूर है कि जब कोई नडी खुशी होती है -ऊंची जगहों पर बड़े र अकान लगाकर जला देते हैं मानों होली मचा देते हैं।

थी कि इर होना या किनी की चीट चपैट न कर काय दिनाजास इस का ही मवाता या धगर प्रीकोस्ट याने कोतवाल इस लोगों के पहुंचन के ठीक वक्त, की व्यवर सम्बद्ध बार्न में गुलतो न बारता एडम्यरा महर देखने से दिन पर बढ़ा असर पैटा हुआ। यह निहायत मंदर खान है इस के ममान हम ने कोई अगह पव तल नहीं दे लो है पाल वर्ट कि जिलों ने इस कदर देखा भाका है वोले कि मैंने ऐसी जगह कमी नहीं देखी यह वही कारदे से बना है इसारतें बड़े मह पत्यों की हैं दंट कहीं नहीं दिखाई देती महकें छंची भीर डमद: बनी हैं किना शहर के बीन में छांचे पहाड़ पर बड़ी नसूद का है भीर क्यान्टन भी पष्टाड़ी पर कोसी यादगार यूनानी दसारतों के नक्सी मुताबिक बनाइचा भीर मैनसन का यादगार भीर वर्ग का यादगार भीर जेनखार्ग का सकान चौर कामी सदरमा वर्गेरह: बड़ो २ रमारते चार्थरमीट पहाडके माध की भव के पछि एक छंची दोवार सा खड़ा है पह त मंदरता को दिखाती हैं सब के सन में बड़ी भाग्रह भीरवड़ों सुहळात मालम होती यो बादवाकों तीर न्दान बाडो गाउँ * ने जियाको हाज़िर हुए और महर में शारी वाद हमराह रहें इस बाडोगार्ड के ग्रोल में विजल्ला धमोर बीर रहेम अरती है वह गाड़ी को शाय पैदन चनते ये घोर नोगीं को बड़ो भोड़ पे खन धको जात ये दन विपादियों में बा का राज्य वर्ग चौर का डर्ड कच नेरी तरफ की चौर मर जे डीप चालधर की तरफ कार्डईलच ने जिन को मैं उस वक्त तक पश्चिम्तो न बी चनतं हए बहुत से यादगार घोर दमरे मकागी का पता बतनाया नगर से बादर निवास कर भवारी तंक चली घटना गुरोबी को सकान भी पत्थरी की वते हैं भीर टहियों को जगह पत्थर को दीवार दिखाई देतो हैं।

इस मुल्क से घौर सदां के जीनों को चाज ठाज से घौर इङ्ग कि स्ताग से घौर इङ्ग किस्तानवानों था चाज ठाल से फ़र्ज़ है यूढ़ो बोरतें निर से चिपका के टोपा पड़न्तों हैं जड़ के घौर कड़ कियां नंगे पैर फिरतों हैं सेने कहे एक सुन्दर

^{*} ड्युक्त बोकि छियो एक रोज कहते थे कि इन तीरन्दाज बाडीगार्ड का मिल अव्यल जेम्स ने काइम किया था और वह सब सवार थे और सिर से पैर तक हथियार में ड्वे हुए उन का काम हमेश: बादशाह के पास रहने का था फळाडनफील्ड में चौथे लेग्स बादशांह की लाश जब मिली उस के आस पास इन बडीगार्ड बाडों को लाशें पहीं थी।

महते चौर महिता वो देखा कि हन के निर पर के वे बाक धे भीर यहां तोन बरम में जी कर मोजह बरम को उमर तक गरोशों के महको भीर महिता को किर पर खुने हुए कर को नम्बे बाक सकाम रखुं रंग को महमते रहते हैं प्रिस्त हुए हम जोगों ने क्रोमियर का खंडहर किया देखा की किमो समय स्काट्केण्ड को भा दलादों मेरों को रहने का सुकाम या न्यारह बजे हम को ग हान को य पहुंचे यहां एक बढ़ा भारी मकान सुखं पखरी का बना है उस का ख़ियादा दिखा मानमय को हथिए का वनवाया हुया है और रमना दभमें बहुत मनोरम भीर यह विस्तार का है तोन तस्कृ इस का खुना भीर वार्र भीर दर्वाज़ा है हम को गों के दाख़िन होते हो हथेज् बोक किया पहुंचों भीर भीर एक मुंदर सीठों को राह में हमारे रहने के कमरी में भो बड़े घाराम के बने वे के गई हम दोनों को बड़ी बनावट माकूम हुई विर धूमता था।

फिर गाड़ी पर भवार घो रमने को तरफ निकानी यार्थरहीट घोर पेट कैं पड़ पर्यता को भैर यहां में भच्छो दिखाई देतो घो गाड़ो को सड़क बुन्दर बनो है चीर छम ने नोचे घो पड़ाड़ को एक गड़रो दून है चाठ यजी चाकर खाना खाया बहुत से जोग गरीन घे सब बड़ो ख़ातिदारों भीर मिडबीनों करते वे इस नोनों के सफ़र बा ज़रा ज़रा हान धायह से पूक्त घे।

मुकाम डालकीथ शुक्र सिलेम्बर २।

षाचिरी के समय मैंने यहां को भागको चक्छो सवाद इस का पाच्छा था भीर एक तरह का भीर भी खाना खाना किर हवा खाने निकले भैर की कगड़ें भित विस्तृत भीर रमनोक बन पहाड़ में भीभित जो एक नदी की किनार टहनते हुए एक कि वे करार पर चढ़ कर कीटी को भोपड़ी के पाम पहुंचे और वहां से काय हो उपर दिरे को राह को चार बने खेचेज़ बीक-विसी भीर खेचेज़ नारफींक़ के हमराह सवार हुए खुक कहेर छोड़े पर सवार और बाको कोग दूसरो गरही पर से खानकोस में घोकर सवारी निक्की स्था कीग खून कमा से भीर सब के जब दीहते बोर खुनो को धाना खुन करते

भान बर्ट ने बाका कि कन में कहत से भीग जरसनी के से दिखाई देते हैं। बूटो भारत पका पकार जा टामो निय का वह मुक्त कहते हैं पंक्षिने हुए भी भीर कोटे बढ़को सड़कों के बिर पर कटकें हुए बाल बहुत सुन्दर भीर चित्र समान माजूब होते ये वानेट को टोपी पड़ने कोई सौरत नहीं दिखाई दो। इस पर्धे में ऐसा एक जुहासा उठा कि इस कोगों को कावविह गांव चीर कार्ड मेलविस् के सुन्दर रमने में होबार डेरे को कोट जाना वड़ा।

सनिचर सिप्तेम्बर ३।

दम बकी हम दोनों बक्च गाड़ी पर मधार घीर सब कोग पीछे पीछे पछ करा को चले चार्थरसोट के पड़ाड़ के नीचे से सवारी निककी बड़ी भीड़ कमा डोने जगी नादयाड़ों तोरन्दाज़ बाड़ोगार्ड यहां से साथ हुए जार्ड रक्ष्म हमारी नग्फ घीर खू क्राकां ग्रीर सर जे होप चालबर्ट की तरफ़ घैटल चले रास्ते में हो लोक का गिरजा मिला यह बड़ा प्राचीन स्थान देखने योग्य है होलोक ह का सहल एक प्रानो लगह सादयाड़ी घान का बना है यहां को पुरानी सड़क चज़ीब किता की है दोनों कां नव बड़े छ चे छ चे मकान चक्त सर ग्यारह ग्यारह मंज़िल तक के हैं चीर हर एक मंज़िल में एक एक कुनवि के चादमो रहते हैं हर एक खिड़ को चादमियों से भरी हुई थी भीगों ने नाक्त घोर रिजेन्ट मरे के चजोब चीर प्राने मनान दिखाये यह विकला चनतक बखूरी कारम है इस पुरान नगर का बड़ा गिरजा चीर नये कुनवि में सेन्ट्रवान का गिरजा वहुत सन्दर बना है नाके पर कोतवाल ने कां जी नगर की

यतोम खान की लड़ कियें घीर घर फिलें के घाद भी प्रानी बका की पीमा का पड़ने हुए एक चनूनरे पर घेड़ में बागे बढ़ कर एक नया गिरना बन रहा था घीर वह खूनम कोने पर या मगर तक्ज़ुद को धात है कि की ग धव छन को नेंद का पत्यर जमाने को रक्ष घटा का ने को घे निटान इस कोश (का के में पड़ चे घोर छन के ऊपर चने गये।

क्षित्रे के दोनों बुर्ज पर से सैर बड़ी यह त दिखाई देती थी तमवीर कामा धातम था है रोघाट के धमपतान के मजान पर से एक भंदर पुरानो इमारत नक्षर घाई उने एक सुनार नीहरों ने जिम्स बादणाह के ममय में बनवाया था और हमी सुनार नीहरों को सरवान्टर ने धपनी युद्धका में विख्यात किया है फिर हम कोग गाड़ी पर सवार हो कर धारी कड़े भीड़ ऐसे थी कि सबमुव हर मानून होतां या हम भीर धानवर्ट बहुत हरे क्योंकि हमराही तोरन्दाकों को भीड़ हटाने में बड़ों निहनत पहती थो के किन यह तोरन्दाक बड़े काम घाए उन के एक हाथ में कमान थो और तीरों को जमर में खींचे थै।

पिड ब्या के बाहर निकलते ही पानी बरसने जगा और दी पहर के बाद से बाम तक बरावर बरनता रहा दो बजे हम की ग हानमनी में नार्ड रोज़-वेरी के घर 'पहुंचे रमना बहुत मुंदर रमणीक है समुद्र के किनारे तक पिड कम है यहां में प्रोर्थ को खाड़ो और में का टापू और बामराज पहाड़ी और एडम्बरा को मैर बहुत चच्छो नज़र घाती है सगर कुशाम ने इम कृदर का लिया था कि किमी चीज़ का भी टेखना मुश्राक्ति था ज़मीन बहुत प्रत्या थी जंगन दून पहाड़ सब उस में भीजूद थे रहने का सकान हान का बना है नार्ड रोज़ बेरी ने इस को खुट बननाया है और यह बहुत मुंदर और प्राराम का है इस कोगों ने कुक नाम्बा किया चीर नार्ड रोज़ बेरी चीर उस के घर वाले बड़ी खातिरदारी से मिल साढ़े तीन बजन के क्रीर यहां से घले भीर कोश में हो कर हिरे की तरफ़ गये।

कीय में दाख़िल होने से पहिलों हो महत पर में पह स्वा को मनीहर कि नज़र घाती है चालवर्ट के कहन बर्ग जिब यह पि स्तान है भीर ऐसी कि जियत के बन तमवीर ही में दिखाई देती है यहां से वह मंदर नगर किन ज़न नज़र घाया छन के पक्त तरण किना मिर छंठाये चोर दूसरों तर के बटन का पहाड़ जंचो जंनो घार्य नोट चौर मानिसवेरी की चोटियों से ग्रोभायमान या घालवर्ट ने कहा कि वेशक एकोपोक्तिम् इस से बढ़ कर मनोहर नहीं दो मकता चौर सुझ में घाया कि कोग एड ब्वरा को हाल का पथिस नगर कहते हैं हमरा हो विपाही फिर कोश में मिले यह नगह कुछ मंदर नहीं है।

यहां के जोग वहें उत्सार से भरे थे चौर भीड़ बड़ी यो पहरेगाओं के किर पर एक बज़ीव तरह को टोपो यो चौर उन के छोड़े फूनों में ऐसे सजी ये कि एक पाष्य मानूम होता या लेकिन यहां के मलाहनों को मजन सब से पिक चमत्तार यो यह प्रक्षर जवान चौर खुबनूरत डच कोगों को सो सफ़ेंद्र टोपो चौर रंगान कुरते पहिने हुए दिखाई देतो थीं उन का रसम है कि पपन फ़िरकों से बाहर कहीं विवाह नहीं करतें हैं हा बजी हम सोग खुब यक हुए फिरे।

ऐतवार, सितेब्बर ॥ ४ ॥

नया वाग जो बन रहा है उन के देखने के निये देश जीग टडजते हुए गरे वहां पर शैकिएट। श्र मिला वह पहले कंसेरमू का बाग्रवान, या वहां से हाम की य तत्र कोर मा मुंदर नज़र पातः या पान्वर्ट ने कहा यह जरमनी देश का मा है एक पर से इस को गएक गदी पार हुए दोनों तन्क मुंदर पैड़ कारी हैं के हो किटिन्टन से पानी कहती वाकों का कुशक दिस पाया बारह की सकान में नमाज हुई रामकी साहित ने वाज किया।

बाइ बार बजे डचिज़ इस कोगों को घपनी फिटन गाड़ी पर किस से अच्छे सुरंग टांधन जुने थे लंबार कराकर नाइर सेगई पाकर्क ध्रूब और कर्मस् बोवनों के बाध घोड़े पर समार इए रसने के एक तरफ भे पुराने जंगना और दिखा घो उत्तर को एस्ता नटो देखते इए इस जोग चने यह दोनों गदियां कवा सिकी हैं वहां से पेन्टलेन्ड पहाड़ों की बहुत बच्छो भैर दिखाई देतो है फिर इस कोग एक दूनरो राह से न्यु वैटन घोर नाई को दियम् के सकान के पान पन्न चे रसना यहां का चन्च त सनोहर घोर सकान कहत बड़ा या उस कोग एक बहुत बड़ा पेड़ जिसे बीच कहते हैं देखने को बाहर घाए इस पेड़ के नीचे से दिखांची पन्न गदी बहतो है घोर भी बहुत से पेड़ इसके फिनारे पर खुव कर्ग हैं।

यहां से इस कींग मुकाम डल हीज़ी में लाई उन्हों की सकान में गए यह सकान स्काटलें जा की प्रान कि को तौर पर सुर्ख पत्यरों के बना हुया है इसभर के जिते इन कोंग गाड़ी से उत्तर उन हीज़ो दाकी ने दरवारी कमरे तक पहुंचाया उन्न को खिड़कों से एक दून मंदर पेंड़ीं से सनी हुई दिखाई देती को सोर दूर के प्रशाहां को भी कुछ सनक सालग होतो थी।

कार्ड डन रोज़ों ने करा कि चोचे हेनरों के घृडद में रङ्ग किस्तान का कोई वाद शार घान तक यहां नहीं घाया फिर किस राष्ट्र से बाये चे छने राष्ट्र डिरे को नोट गए जैना चान का दिन नाम चमकी ना भीर वर्ष नमने की सदा का घा गाम भो वैमो हो रही फिरते वक्ष भीर फुट् का प्रशाह मज़र घाया सात वन्न को बाद हम कोन डिरे पर प्रहुंचे।

सोमबार, सितम्बर ॥ ९॥

मान डामकीय के क्षव में मैंने दरवार किया क्ज़ोर लोग घीर स्काट्सेन्ड के जंगी "फ़नर लोग दरवार में धीर बादमाडो तीरन्दाज़ को संदन के डिटा बंद रईसों को तरह है दरवारों कमरे के घंदर घी बाहर डाज़िर ये दर-बार से पड़ले बार्ड मोनोस्ट घीर मजिन्द्रेट घीर स्काट्नेन्ड की ईसाई जमास्त भौर चेत्र्यम् कृत्वासनी भौर एडिस्बरा के यूनीवर्निटी के से तीन चड़िस ने सुक्त को भौर इस के बाद तीन चालवर्ट को सिस्ते कवाद रन का इस ने भीर चाल्वर्ट ने चलग चलग दिया चालवर्ट ने चपना नवाव बड़ी खूनी से पढ़ा। मंगलवार, सित्तेम्बर ॥ इ ॥

भी अज डालकीय से कूच किया चान को मुबद चमकी नी साफ़ चीर सर्द यी वाला पड़ा या चलते दुए पेन्टलैन्ड भीर मार्थ (कोट पडाड़ जिल को मज़दीक से गए सुंदर दिखाई देते ये सालिस वरीकी ग के पडाड़ भी बहुत कंचे भीर निवाले दुए मुद्रों से मोभित ये रम्से पडाले चम् कोग क्रोगिसनर देख चुने ये भड़र को बाहर से देरियाट का चलपताल होते दुए इस कोगों का सामा दुवा चौर किला यहां से बहुत खूनस्रत नज़र आया।

जब मैंने ज़िना देखा या इस वान का ज़िकार जरना भून गर्थ थी कि इस की में ने राजविन्ह चर्यात् बादमादी ताल प्रसादि की बहुत पुराने चौर चजीव तरह को हैं 'चीर भी बरस तक गुम रहे ये चीर छम कीठरी की भी देखा या जिस में स्काट्नैन्ड ना कठनां चौर रङ्ग जिस्तान का पहिना जेमन बादबाड वैदा हुचा बा यह एन बहुत कोटी कीउरो है चौर दीनार वर वन प्रानी दुषा किखो है एडिक्सरा भीर फीर्य नदो को भक्को सैर दिखाई दी क्रोग नीश स्काम में चर्चात् जी मील के क्रोब चाकर घोड़े बदसे गए दा क ने डाजमनी परंचने तज बाय दिया जिर वडां से लाई दीप्टीन साथ दर्ग खारड बजे इस कीम दिख्या की सफ़ेरी ! सुज़ाम में पहुंच कर गाड़ी से इतरे भीर एक कोटी घंए की नाव में सवार इए हमारी गाडियां भीर बीबी और साहित सीम दनरी घंएं जो नाव पर वनी हम भोगों ने फोर्श नदी पर थोड़ो दर ना कर नार्ड होप्टीन् का सकान देखा यह सकान होय्टीन् नगर भीर डाजमनी के बीच बड़े मीका पर है डंडम् का किसा भी देखने में भागा थारी बढ कर बनाकनेम् का ज़िना है वह प्रतिहासी में मिनि है दसरो तरफ पानी के ऐन किनारे पर देखा ती एक चौखंटा बुर्ज है उस का नाम रोजीय है यहां चाजीवर जासवेज की मा पैदा हुई वी भीर कुछ दूर पर डन्परमचाइन में रावर्टत म गड़ा है फ़ोध नदों में एक मृन्दर टाप इंचगावी नाम एक प्राने कि से शोभित है इस सीग उसी की निकट से गए नही

के मुन्दर फेर फार को देखा थीर पडिम्बरा थीर हम का मुंदर किला दूर में दिखाई पड़ा नदी पार हतर कर कोन्सफ़ेरी पहुंच कर गाड़ी पर सवार हुए जिनरक्षविसम् के बड़े भार्र कतान विसिस् ने कोडन्बीय के थारी घाठ, भी क तक बरावर घोड़े पर हवार साथ दिया कोन्सफ़ेरी छोड़ कर पहिचा गांव इनवरकी दिंग नाम मिना सर पी हरहैम के गांव के पास से जाना हुया।

की हन्दीय में घोड़े बदले गए सवा बजे किन्रोज्यायर में दाखिल हुए फिर जल्द हो हर तरफ मुन्दर कमहें दिखाई देने समें और पहाड़ भी नज़र पड़े साम्में वेन् से प्रामें बढ़ कर एक भी ज के किनारे वह किना देखने में बाया जिस में से मेरो नाम माइजादी भागी थी यहां सिर्फ एक तरफ पहड़ है बाकी सुल्क बरावर बहाटाल है फिर किन्रोज़ में घोड़े बदक कर बोड़ो दूर पर हचारहित पहाड़ों को देखा म्बेनफार्स की दून में से निकलें पहाड़ दोनी तरफ नहुत क चे र घोर कड़ तक पेड़ों से दके हुए नज़र पांखे रास्ते के एक तरफ एक कोटी सी नदी बहती है वह समीहर मानूस हुई।

इस दन से निकास कर मुद्देधन धीर अनकीया पहाडी की सन्दर सैर दिखाई दी इस कीग तब पर्धशायर को इवाकों में के फिर चरन की पुन पर बारह भीन के चंतर पर घोड़े बदने गए माढ़े तीन बजे इस सीम खूपकीन में बार्ड विकीन के सकान पर पहुंचे रास्ते में बरावर सनोहर पहाड़ चौर खड़ श्रीर नदियां देखने में चारं दधर राख्ता पहाड़ों का जंबा नीवा श्रीर बीहद या खुपकीन जा सवान वहत मुन्दर दान के किता का है एक चीर मै पदाड़ी की मैर बहुत मुन्दर नज़र चाती है भीर साम्हने हो सकान से नवदीक एक छोटा सा भारती भी है बयालिसवें दाईसैन्डर की एक पजटन सकान के साम्हने खड़ी की गई थो सिपाडी सब घुडने तक कुर्ते पिक्रने इए चित सन्दर माल्य होते थे यहां के चमोर चीर रहें हो ने हम दीनों को चलग चलग चड़े स दिया चीर लार्ड कि चील ने पढ़ सनाया चीर पर्थ मुकाम के मोबोस याने कोतवास चौर मिलबड़े र ने भी दिया तब इस की गों ने कुछ माला किया विसीवी और किनेयर्ड और रखवेम के खाम्दान के कीग और कार्डमैकाणिल्ड चौर उन की एक बहिन चौर चौर भी कीग मीजूद से नाम्ही ने बाद शीड़ा सा बादर ट्रंडली चीर पांच बजे फिर क्च किया बहुत कल्द इस कीम पर्व में चाए यह लगह टे नदी पर पत्वन्त मनोहर है भीर एक सरफ़ इस को देहां से भरे-हुए पहाड़ों ने शोगा दे दो है दर दूर निकले हुए

पकाड़ों की भैर नज़र चाई भीर नदो को मंदर फैर फार दिखाई दी।

आववर मोहित हो गये और वोले कि इस खान की देखन है वासन नगर याद चाता है वह भी जगह बहुत मुंदर भीर वहां के लोग लका हो थे पूज पत्ता के मिहरावदार फाटक इस को भी के चाने की खुशो में का बना को गों ने बनाए थे पोवेस्ट ने कं जी नज़र दी और चाल्यर्ट की प्रहर की चाज़ादो दो मीन पर स्कीन् नाम बार्ड मैन्स पिल्ड का मकान मुख्न प्रस्री से बना हुचा बहुत खुग्रनुमा मालूम होता था।

कार्ड सैन्सिफ्ल्ड और विधवाणिडी सैन्सिफ्क्ड ने इस कीगी का दरवाजे तक दिस्तिक्वाज किया और इमकीगोंको एक बहुत नफ़ीश कसरे में सैगरी। वुधवार, सिसम्बर ७ १

इस बोग बाहर निवाली चौर टहनते हुए उस कंचे खान को देखा निस पर प्राचीन स्काट्सेंड के बादगांच हिम्म: राज्याभिषेक पाते थे भौर प्रामी सिहराब पर चीचे जिन्स का नियान बना था चौर प्राना ईमाई भत का संशोद भी देखा यह कहत देखने के योग्य है।

खिड़ कियों के संग्हने सिकेमोर सर्थात् एक प्रकार का ख्र चौथे जेम्स् बाद शांड का सराया हुया है एक घंजीन पुरानी नहीं हम सोगों के सामने पर्ध मुकास से चाई इस में चंदोर दख्य एक प्रक्रान के पिड़ से लेम्स धीर पिड़ से चाई से स्वार का या कोगों ने इस को घंपना नाम उस से कियने को बाद किया गया कर्त साई मैन्सफ़ी लंड ने सुभाने कहा था कि शहर में चंद सीग हैं जो पिड़ से चाई मैन्सफ़ी लंड ने सुभाने कहा था कि शहर में चंद सीग हैं जो पिड़ से चाई मैन्सफ़ी लंड ने सुभाने कहा था कि शहर में चंद सीग हैं जो पिड़ से चाई में ममय के डोल की पोगांक सब सक पिड़ नते हैं स्वारह देजे इस सीगों ने जूच किया पर्ध को एक तरफ़ से सनारी निकारी और स्कीन की बहुत सच्छी मेर दिखाई दो घोड़ी ही दूर पर धार्ग संकारी को खड़ाई का मैदान मिसा सीग कहते हैं कि यहां काई एशेन के पुरखाची ने हेन्स सीगों की पराक्रय किया या काई कीने होक का दक्षाक़ा भी रास्ते ही ते सिसा हुए के बाद घटरगैवन को नई सराय के बास घोड़े चदसे गए धाम्पियम्स के पहाड़ों को कृतार सब साफ़ नज़र धाने सगी।

चकते चुए वाई तरफ यह पड़ाड़ टूकीवेल्टन् का नज़र आया किस पर इंड की ग अपने वेल नाम देवता के आरी विन चट्राते थे उस प्रवेत पर कुछ पड़ भी सभी हैं। बाई तरण सै जिन घिषक चम को गें के मान्हने मुकाम वर्णन् है वहां किसी कामाने से वर्णम् का वन या जिस का मैक्वेय में ऐसा वर्णन जिखा है सर् हम्ल्यू सुबर्ट का बहुत सुन्दर शिकारगांच को वर्णम् की सरबद्द पर है इस ने देखा दाचिने कोर स्ट्रोरमी चीर स्ट्रे घ्टे दिखाई दिया पडाड़ोंके बीच से चाते प्रपालवर्ट ने कहा कि दादिन कोर कहां पडाड़े पर बहुत पड़ की में हैं यूरिंगेन् के समान चीर बाई चीर स्ट्रोट्स की तरब दिखाई देता है दादिने तरफ सर् हक्त्यू सुबर्ट का इसाका पडाड़ के नोचे टे नदी के सालक संन्दर फिरफार पर मनोबर मानूम होता है इस प्रकार की सुन्दर मेर खंकेल्ड सुनाम तक बड़ी रमचीक यी चार्ड मैन्सफ़िल्ड बराबर इस चीरों के साथ घोड़े पर रहे।

खंके ज्व को बाद र ही एक सिद्दावदार फाटका के घारह ने सार्ड ग्लेन्सिधन् की डाइके न्दर को गों की पकटन वरकी वांधे हुए मी जूद थी भीर हमारे
धाय हुई एक बासरी सान्हने वजती थी डंके ज्व डे नदी पर एक तंग दून में
सुन्दर मायूम होता था डाइकेंडर की स्वश्चकर गांड के बीच तक कहां हम
को गों के नाया। करने के लिये एक खेमा खड़ा था हम को गों को गाड़ी भाई
वचारे कार्ड ग्ले म्हियन् इने को यकायक विश्वक्षक गंथा हो गया था हम
को गों का इस्तिक्षवाल किया उन की बीबी छमें संभानी चलतों थी देख कर
वहा खेद हुआ थह शख्व हह से ज़ियाद: सिह्नत करने से गंधा हो गया
है थड़ा से हो को न्वियन् भीर कार्ड मैक्सिक्ड घादि को ग्र हाज़र थे हाईसैन्डर सिपादियों की स्वाह हम ने एक सिरे से दूनरे सिरे तक टहकते हुए
टेको बांसरो बनतों थो हम सो गों ने नाया। किया एक हाइके न्हर ए ने
तकवार को कतरत दिखाई दो तकवार के वांचा रोक का नाच भी हुआ।

योने चार बजे डंकेल्ड से चले चारी चारी हाईलेन्डरों को कोज बी टैसवर्ग तक बड़ी तक्रोड के साथ सवारी गई दोनों तरक पहाड़ी की कतारों में

क ड्यूकरेथोल। ए चार्लम् क्रिस्टी जो अब बेवा उचेज रेथे। क का कारन्दा है।
के सन् १८६६ को तीसरी अकत्वर को इमने उकेल्ड मुकाम से भेष बदलकर टेमथ को फिर देखा लुई औ बेबा उचेज्रेथोल और मिसमैकीगर साथ

खन से खंबे दो पहाड़ डंनेल्ड निकाल कर दाहनी और मोगीबानम् भीर बाई मोर लोगिविन्यन् मिस्ने टेनदो के फिर फार वहुत मनोहर भीर सन पहाड़ हरे भरे ये मुक्ताम नेलानागार्ड से नव मीन पर घोड़े बदसे गये यहां से लाईग्लेन्तियम् के भाई कप्तान मरे हम लोगों के साथ घोड़े पर सवात हन पहाड़ एक से एक ज'से मिलते गर्वे सालवर्ट ने कहा कि वाज़ी जगह स्विटज्ञ केंड के मुक्त भी मालूम होती है दूर पर पहाड़ रतने क से नज़र बाये कि हम लोगों ने भव तक नहीं देखे थे थीने क बजे टेमय पश्चे फाटल् पर जाई लेड करी के हाई सेंडरी का एक पहना मिला जिस दून में टेमय बहती है वह चारों भीर बहुत कों से भीर पेड़ी से कदे पहाड़ों से खिने शुर्व बहत हो सुन्दर है वहां खुले पत्यरों का एक मनान किसे की तरह है उस मैं हम कोग उत्तर यहां से को सैर दिखायो देती है उस का वर्णन नहीं हो सकता काई नेड स्वीन के बहुत में हाइ लेंडर सिपाड़ी जनी चार खाने की

थीं इस शहर में वे इजाजत गाडीपर जाने का हुकम न था और इमकोग अपने तई ज़ाहिर नहीं किया चाहते थे इस किये एक फाटक पर जो एक छोटे किके से नज़दीक था उतर पड़े बागवान के घर से किके तक एक औरत राह बतलाती गयी पहली बार हम छोग इसी बागवान के घर के पास ठहरे थे ती भी वह औरत हम छोगों को जरा न पहिचान सकी।

जंचे पर से नीचे के मकानों को देखा कुहासा निकल गया था और सब चीनें साफ मालूम होती थीं इस एकान्त में कि कोई नहीं जानता से कौन हैं उस जगह को देखा जहां चौबीस बरस गुज़रे प्यारे कार्डब्रेडलवेनी ने हम लोगों का इस्तिक्वाल ऐसे बादशाही ठाठ और धूमधाम के साथ किया था कि जिस की बराबरी नहीं हो सकती और न किब की किबताई में आ सकता है।

उन दिनों आलगर्ट की और हमारी उमर सिर्फ तेईस बरस की थी और तब हम लोग जवान और तनदुरुस्त थे हा ! उस समय के साथियों में से अब कितने ही गुज़र गये हैं।

मैंने इस जगह को देखकर ईश्वर का धन्याबाद किया इस छासठ सन् में भी सब चीज़ें क्यों की त्यों पायागर्या। झेडल्बनी चार्र सेंडरी की पोशाक पहने दुए उन के अप्री में भोजूट का विवास रस के कुछ सिपारों दरनी नमन्त्री के सुई और सफ़ेद डोरिए का कपड़ा पहिने इप भीर बहुत से बांसरों वाले बांसरी बजाते दुए और बान वे पलटन की ऐक कम्पनी के चार्क न्डर घटने तक कुर्त पिश्र हुए दिखायों दिये तोशों की घावाज़ भीर वैसत की भोड़ और उन की खुशी को पुकार पोशाक की रंग वरंग की छिब सासपास के सुल्कों की शोभा और सब के पोछ बड़े बड़े पेड़ों से दंगे हुए पहाड़ की खूशों स्थान में नहीं भा सकती की पा सतिहासों में सना है वैसा सो सालूस हुआ कि सालों भगके ज़माने का बड़ा भारी सर्दार भपने बादशाह से मिनने साथा है।

जाई चौर चेडी बेड स्वेनी इस कोगों को छोड़ो के छापर केगये कड़े जामरे चौर मीढ़ियां चाईबैन्डर विपादियों को जतार में सजी थीं।

भीढियां पतारी की बहुत सुन्दर भीर सारा मधान नये भीर विदयां अस-बाब से बना हवा खास कर दरवार का सकान ख्व सना या इस कमरे से ज्ञत्यकांने का रास्ता इसकोगों के रहने के कमरों से मिला हुया है चाठ बजी चस कीमों ने दात का खाना खाया इस सकान में इस कीमों के सिवाय भीर जो सीग उहरे थे वे से हैं बोक्सियों का खान्दान भीर दो बज़ीर भीर ' इचेज्यदरकेन्ड योर लेडो चलोजेवच लेवेवन्गीयर * भीर एवरकर्न भीर राजम्बर्ग थीर जिल्लील् के खान्दान भीर कार्डसेडडेल भीर सरपन्नोमेट-सीन्ड घोर बार्डकीनी के घीर फाक्समात्रीत घीर वेलहेबेन्स के खान्दान चीर विभिवसरमध भीर उन को मोबी घर जे भीर सेडो मकी ज़ब्य से भीर सेडो विधंगन की बेटो भौर दो बेको साहिब भौर लेडोब डल्बेनी को भाई। दो किता चक्रम सक्रम सक्रम समेगी को दिखाये सगर इस ने दाहिने हाथ का जो ज़तुबखाने से मिला वा पसंद किया खाना खाने का कमरा बहत नफ़ीस गाबिवा डील का बना था भीर जब में बना है चाल तक किसी दमरे का जाना उस में नदीं हुया या जदां दम जीन टिकी उस की भी आज दो साम्त हुई बाद खाने के बाहर बहुत खमदा रोश्नो हुई फ़ाम्सों की एका क्तार कोई के जंगकों पर बराधर रीधन की धीर ज़सीन की फ़ानसों पर बिखा था बि " विक्होरिया और आकर्ष्ट को स्वारक "।

^{*} अब डचेज्ञागाईल हुई हैं।

एक कोटा सा किया भी को कुछ दूर पर अंगम में या रोधन किया गया या चौर पड़ाड़ को घोटियों पर खुन्नों के लिये माग मनायी गयी यो में ने ऐसी परिस्तान की सो मोमा कभी नहीं देखों थी कुछ मच्छी मुच्छी मित-ग्रवाज़ों कूटो घोर मंत को डाईकैन्डर कोन बहुत मच्छी तरंड वांसरियों की भावाज़ पर मधास की रोध्नी में मकान के सास्त्रे रोक का नाच नाचे छन अंगन में इस नाच ने सुदन मचा दो।

देमथ, बृहस्पति, सिप्तेम्बर ८,

भादें नव बजे भाक वर्ट सार्ड ब्रेड सबनी के साथ यिकार की गये में हचे-जनाएँ कि के साथ बादर टइन ने गयो टे नदी दिखायो दी पानी स्थ नदी का प्रदान में टकराकर चक्कर खाता और फेन निकलता या नदी के दूसरे जानिव ज'ने पहाड़ बहुत खूबपूरत मालूम होते ये स्म गोरस्थाका में गये यह मकान कार्टन पर्यात् एक ज़िस्स के प्रत्यों का बहुत साफ़ भीर उमदा बना या इस के जंपर में बहुत भच्छो मेंर ने भोल की नज़र साती थी।

जिस राह से घाये थे उसी राह डेरे पर सीट गये पानी बराबर बरमता या विकि कुछ देर खूब ज़ोर से बरमा चालवर्ट साढ़े तीन बजे फिर घाये ग्रिकार उन का बहुत खूब हुआ को सब ग्रिकार मार साथे थे मकान को यागे रखें गये उन्नोस हिरन् बहुत से खुरगीय घीर तीन की हा शीम विहिशा घीर सुर्ग मिला था कैपरके स्कृति नाम ऐक विहिशा घायल चायी थी छसे में ने पीछे से देखा ती बहो ग्रानटार सास्त्र हुई।

शिकार में तोन सी पार्वनैन्डर नये ये नार्डने डल्बेनी खुद जंगल पांकती में या भीर भानवर्ट शिकार खेलते पूरे ऐवर्फ़ेंग्डी के निकट गैदल चले नये ये फिर एम कोग लेडोने डक्बेनी भीर उचेन्सदरलेंड के साथ पांच बजे वापर निकले टे कोन को देखा भीर उस के किनारे मुंदर पेड़ी की छाया में गाड़ी पर चले भीर कार्डने डल्बेनी के भमेरिका की मैंसी की देखा।

शुक्र, सितेम्बर ९!

नव को बाद भाजवर्ट फिर शिकार को निकसे थोड़ी देर में उचेज नाफ़ीक को माथ लोड़े को पुल पर भौर टेको किनारे जड़ां बराबर घास लगी थी देडलते धुए गर्व।

इर्डिन्डर को पहरे को दो अवान पुराने दस्तूर को अनुमार नंगी तसवार

खींचे कम ने गों को साथ हुए हम लोग क्सी सहत पर रमने को एक कोटे से मकान में टहनते हुये गये एक मीटो नाटो खुम मिलाल भीरत करोब चालीस बरमू को जिन की कम दोनों को लिये पूल तोड़ती हुई नज़र मायो इचेज़ ने उस की कमारे नाम से कुछ इनाम दिया वह भीरत बड़े सबरल में इद मेरे पास पहुंच कर बड़े भानंद से कहने खगी कि भाप को गला भाप की स्वाट्नैन्ड में देख कर बड़ी मगन हुई है थोड़ी देर में बादक डमक् भाया पानो खूब बरमने सना मगर कम कोग टक्नते की चने नदो के बिनारे घटने तक कपड़ा पहिने एक भीरत की भान धोते हुए देखा।

हर पर पशुंचते ही पानी बंद ही गया मगर जब तब बरसा भी किया पीने तीन बजे पासवर्ट फिर जन को दंबद को में शिकार खेलने में बड़ी मिहनत पड़ी कहीं कहीं हरनी तब दकद को में फंस जाते है जी कोड़े बीव विख्या मार बाये थे हम को गों ने नाव्या किया और दरबार के कमरे में जा बैठे खिड़कों से हाई जैन्डरों को रीच नाच नाचते देखा मगर पास्सों स कि बराबर पानी बरसता रहा किसी में नव बांसरी बजाने वाले है जाभी एक भीर भी तीन मिल के बजाते थे छन का दख्तूर था कि हाज़िशों के बक्क, एक बार फिर सुबह के नाव्यों के बक्क, भीर हम को गों के बाहर चाते जाते हुए भीर रात के खाने के समय बजाते थे हम दोनों की पावाज़ उस की बहुत भावों माल महीतों थी।

प्रशा पान वर्ज क्षेत्रवीका कियो भीर क्षेत्रभदरसेन्ड के साथ गाड़ी पर क्ष्मा पान निकले लेडोन क्ष्मिनी की सिव्यंत प्रच्छो नहीं यो नार्डन इन्हेंनी घोड़े पर तवार गाय रहें भी स की किनार चौर पहाड़ों के बीच से सवारी गयो ईवार की स्टूष्ट पहाड़ों में चमत्कार नज़र चायी कोटी कोटी नीची भोपड़ियां घंएं से ऐसी भरी थीं कि मारे भंभेर के कुछ भी दिख्लायी नहीं देता या विन्नायम का पहाड़ जिस की चार क्ष्मार फुट कं वा कहते हैं अच्छी तरह देखा थाने बहुत दूर पर विनमीर का पहाड़ घोर कायन चौर्क निक्यम नदी भीर बहुत सी दुने दिख्लायी दीं गाई सात बजे जब डेरे में जीट चारी विसञ्जन चंदरा हो गया या चाठ बजे खाना खाया खाड़ भीर सेहोरतवेन चौर साड घोर डेको इंकन ने यहीं खाना खाया खाना खाने के बाद नव्ये थादमी के नुरोव थाये चौर नाच हथा कार्डन इन्हेंनी के साथ हम ने -जाड़ित का नाच ग्रम् किया भीर धासवर्ट इचेज्वीककियी के साथ नाचे शैन का कर नाच इचा वह बहुत मुंदर भीर दिखक्त भी का सालूम शीता था। शनीचर, सिप्तम्बर १० ।

धम योग गोरवधाना तक टहनते हुए जा कर बीट दो दिन की बाद भान सुन्द को धाकाध निर्मन हुआ जैडोने डनवेनो के साथ धम कुछ दूर गाड़ी पर पीर सब कोग पैदन गर्थ उतर कर धम कोगों ने चीन पीर बक्त का पेड़ नगाया फिर गाड़ो पर पनार हो कर सब के सब भीन तथा गर्थ भीर किस्तो पर सवार हुए जैडोने डन्द्वेनी डचेज़ सदरजैन्ड चौर लेडोचकी-जेवथ खुमको गर्थी धीर हमकोगों के संग डन्ज़नाफ़ींका उन्जानकियो चौर आईने डन्दिनो थे दो बांसरीवाने किस्तो में एक जंची जगह पर बैठ कर भक्तर बनाते रहें "लेडोच। वित्तांक "नाम किताय को धम ने इस घरसे में पड़ी तो उस में धम कवित्त ने धम बो उस दिन को सेर ताज़ी याद दिकायी। सवैद्या—टेखाइ ध्यान दे धान कड़ान के गर्ब भरे बर बेनु नज़ावता

- -दख हु च्यान द आंश कड़ा ज नव सर वर वनु नजावता ।
- धावत वेग भी की व समुद्र के तान पुरान डाइसीन्ड को गावत ॥
- बाजते वेनु के नीचे सरंग भावा फाइरास गडा कवि कावत
- तुष्क तरकृति सीं भरे सिन्धु के मध्य की मानी मुधारत पावत ॥

नालुक बदन है सुकास कि किन् में इस की गों का गुज़र हुया यहां एका प्रशाहों नदी बहे बहे एखरों से टकाराती हुई और भारनों की तरह गिरती हुई बह रही हो।

अब इस कीम बड़े जंगल में बाय ग्रह इस का डाकडार्ट की दून में हुचा आक्रशर्ट गदो इसो में ये बहतो है तिवाय दनदन चीर कंचे पथरी ने पहाड़ों से चौर कुछ नहीं नज़र चाता था एक छोटो सी श्रीन के कनारे पैनी एक कैरगाइ में चाये कि वैसो कभी नहीं निर्माय हुई थी इस मोज़ का गाम मेरे चमुसान में खारागिकी है को न्योम्स की संबी घाटो देखने है ज़ैनर घाटो की मबबीर याद चातो है सड़क ज़ळ दूर तक पशाड़ के कपर चौर नोचे बनी है दिनवोपर्लिंग पहाड़ जो भी देखा चनेहेड को भीन पर चोड़े बदले गये आर्डबेडक्वंगी घोड़े पर सबार इस मुकाम तन चाये है इस के बाद बरावन पानो वरवता रहा इस लोगी की मधारी चानंशीन के पाय है गयो यह शोन सुन्दर संबी चौर कंजे पहाड़ों के दामन में है लेकिन टैं स्तोब के बरावर जंबो नहीं है कब इस लोग फिर कर सैन्ट्रिक्कंग्स की नरक गये भीन पश्चित सुन्दर दिखनायो देने सभी एक पहाड़ पेड़ी से हरा शरा बहुत खुबबूरत नज़र साया।

पस नीगों ने क्लेनाटेंगों का पढ़ाइ भी देखा इस पर कार्डिव जैवी का दिरम् का जंगल है लोगरों में घाखिरों घोड़े बदले जाने ने पढ़ियों करही-छंड़य के जुनीरा नाम सलान के पास पाये घौर तब विश्वियम सन् साहियकों सलान घौर एरडव्स्यू कीयगर ने घाक् टरटायर सकान में गुज़र हुधा बहु-तैरी कराड़ों में फून पत्ता के टरवाज़े इनारे पहुंचने को खुशी में बनाये खे इस कीम क्लोग में डो कर गये घौर साल बजने के छोड़ी देर बाद एक निद्या-यत खड़े चढ़ाव को गड़ हो कर दूर्मंड के किसी में पहुंचे कार्डिव जैवी ने दरवाज़े तक दिल्ला कार्या घीर इस खीवों के रहने के कमरी तक ले यये वसरे छोटे थे सगर नफ़ोस सिश्च कार्ड घोर लेडिविकी में घीर छन की दो बेटो चोर खास इसारे घाट्सियों को खाने की सेज, पर को कोम थे उन को गाम ये हैं छचेज़ बदर लेख घोर हम की बोबी घीर खार्ड घोर केडिकि-विगटन चीर होयकीट बर्गड़व घोर हम की बोबी घीर खार्ड घोर केडिकि-विगटन चीर होयकीट बर्गड़व चोर हम की बोबी घीर खार्ज कोरी खार्ड की

[ess]

ड्मंड का किला, एतवार, सितेम्बर ११।

एक बाग को मैर को वह फ़ाक्सदेश के प्राने बाग़ की तक्षर नक्षों से चारास्त बहुत को जनदा है प्राना किया भीर टूटा हुआ सिक्शकी रास्ता देखा।

भारक बजी दरवार के कामरे में नमाज़ हुई एक काम उसर पादरों ने बहुत पच्छा उपदेश किया ।

ती धरे पहर पानी बराबर बरसता रहा जब सुक्षे लिखने से ज़राज़त हुई बाल बर्ट की 'दिने आफ दो जास सिनाड़े न ' वितास का पहिला भीन और पढ़ कर मुनाया इस्ते हम की गी का भी खून बहना फिर रेडनी-गर को बनायो हुई पुरानो छापे की तसबीरें जो बहुत डमहा भीर सकीब सानुम होतो थीं देखीं पाठ बले खाना खाया डचेल मदरलेन्ड भीर लेडी सली लेख ब खुनत हो गयो थीं मगर सार्ड पीर को डी ऐक्रस्कान भीर खार्ड भीर को डोकिको सुपानी सड़की समेत खाने में अरोक हुई।

सोमवार, सितंग्बर १२।

पांच यजे यालवर्ट दिरम् के शिकार को निकचे भीर उचेजा नार्ज़ीक की साथ में टबंकने गयी।

कुत पाईलैन्डर सुकाजिस विकीशी के जोगयांग की गिनती में एक भी दस ये सपन में सफ़ बांधे खड़े ये विकीशो का कड़का और मेगर इसंड छन के सदीर ये लेडोविकीशी के साथ में पैदल फिरतो रही प्रथियार की सिपाफी बांधे ये विस्तकुत चार्डविकीशी के ये छन में एक तलवार दोष्टर क्वज़े की यो को बेनकदर्न की खड़ाई में काम पायी थो धुना कि डंकेल्ड में मी सी को क्रांब पाईलेंडर ये जिस में पांच सी एथील की भीग ये भीर पहरा वगैर: सन से कर प्रकार जवान पांडलेंडर ये।

आ ज़िर को तोन कर्न से कुछ यहिले आ स वर्ट खूब धूप में जले भूने और निषायत यके हुए फिरे सुभा को छन को फिर आ ने को खुशी हुई एक बार प्रसिद्धा यिकार कर काये ये उन्हों ने क्षड़ा कि सिष्टनत बड़ो हुई और सुयक्ति कहुत छठ। यो एक कि जान के घर में कपड़ा अपना बदल किया का इसंड के कि के से खेगार्टनी दस सी स घर है व्यांतक वे गाड़ी पर गये ये सो ना नाम एक प्रखूद जिस का सवाय यहां से निकार है आया गया या भीर

शानवर्ट ने कहा कि वह बड़ा चानाक है आनवर्ट ने चार्न के की यवने इस चनीव गिकार का मुख्य हान कि चा या उन का खुनाना यह है।

" कि नि:संदेह इस प्रकार का हिरन् का शिकार भीट में चलकर करना मही भिडनत का है सगर दिनकारी भी उस में बड़ी है यहां एक पेड़ या भाड़ी भी नहीं है कि जिस को भीट में हुए सकें इस किये हिरिनों को घेरने के हैं किये हमेशा चौकसा रहना एड़ता है एहाड़ को तराई में ईस ढन से रहना पड़ता है कि हम के कख़ से उन को बूग एहुंचे घुटनों के बस चनना भीर विस्तुत्त समीवा रंग का कपड़ा पहनना ज़द्दर हैं "!

साहे चार बजे हम जीन लोडो विकी बीर हचेज़ बीक जियो के हाथ गाड़ी पर मनार हो जर निजाने फानैटावर में जी घरडोवेयर्ड की जगह है गाड़ी बकी बीर फिर मेलरमीर के एवकानी के सुकास पर ठहरे यहां हम जोगी ने हस उमदा मकान को देखा जो मेशरमीर बनवार है है तर कैस जूमंजी बीर घरडवच्चू मरे के दलाकों की राह हो कर घर जीटते हुए हाई-लेंड पहाड़ी को खूब है। हुई दिन घाज का यहन आफ बा घाठ बजे रात को खाना खाया विकड़ियन घीर मिज़्दन घीर को वेन कैस्बेच मुंजी घादि की ग खाने में बरीज हुए खाने के बाद चीर भी कोग घाये बहुत से हुटन तक क्वार्सी पहिनी हुए बिकई नाव रीज़ का हुआ मुंजो का कैस्बेच मार्जन में बड़ा को कियार है हम कोग भी देशती तीर पर नाचे में खाई विकी के खाय चीर आजवट लेंडोज़ेरिंगगटन के साथ नाचे।

मंगल, सितेम्बर १३।

तड़ के चलना था इस लिये पात बलते हो छठ थीर पाठ बले से पेश्वर हालिरी खायो नव वजे रवाना हुए बाल सबह को को हासा था साई हूं य सिन के सकान के वज़दीक से नये और बढ़ी खेडी हूं यक्तेन के पास महत्ते सर ठहरे यहां तब वार्ड विश्वीची घोड़े पर बाथ बाये ये बाद इसके सुनास बाई क् में पाये जहां कसो की में का बनवाया हुआ बिन्द्र नाम एक प्रकीव सम्बन्धा है पास बर्ट बाहर निकल बाये में गाड़ी में बैठी रही सिजरतीर ने इन को बम्बन्धा दिखाया वह यह तक बख्दी कारम है।

अ भेरा सौतेला भाई शाहजादा की निगेन जो १८९३ ई० में परकोक

चीनकी एनींग में घोड़े बदली गये चौर डंब्लीन थी कर बारह बजी हम सीग स्रकिंग पहुंचे गिवयें तंग भीर भीड़ बहुत ज़ियादा भीर इंतिजाम बहुत कम होने से बारदात का खीज या किले तक राष्ट्रा इतना खंबा था कि डर मालम होता या तमाम राइ पागे जुलम के किये पैद की की भीड का तांता या भीर गर्भी ग्रिइत से मालूम दोती थी किना बडे भीको वर बना है सगर पडिन्दरा के किसे को मैं ज़ियादा पसंद कर्ती हं बढ़े सरबा-चींवासडिकिसी ने सब जगहीं को बखबी दिखाया वह कोठरो जिस म द्सरे जैम्स ने डग्लम् को मारा या चौर वह खिड्को जिस में से उसे फेंका था इस सीगों ने देखों कत इस कोठरी की पनीव कित की है निर्फ पञ्चीन वर्ष का पर्चा होता है कि इसी वागु में एक ठठरी मिली बी भीर अवन नशें कि उगलस को रही हो इत के जवर से बहुत दर तक निगाह दौड़ती है सेकिन दिन को ईतना को दासा या कि दाई शैन्ड के पदाड़ बखनी नज़र नहीं थाये धरयेकि हो ने बैनक वर्न कि बड़ाई का मैदान और नोन याने वह टीका जिसे की दोवारों के नीचे घटा हुया दिखकाया जहां से बीबी कीण फीज को कवादर चीर कमरत देखती थीं विख्युक पुत्री अब तक कादम हैं नाक्त का बनाया हचा सिखर भी देखने में प्राया।

इस के बाद इस जोग फालकर्त दोकर निकले कैंग्रेन्डर में फार्वम् साहित के रमने पर घोड़े बदले गये फार्वम् फोर सर्भिनेक्त्रम् ये दोनी स्थालिंग के भी उधर से घोड़े पर सवार इस जोगों के साथ ये रास्ते में जार्ड जेट्लेक्ड से सुलाकात हुई घोर जिनकियगों में जहां फिर घोड़े बदले गये पहुंचने से कुछ पहिले लार्ड हीएटीन् मिले प्रफारोम कि यह बाद आही सहस जिम को बड़ो तारीफ सुनी थी देखने रह गया घोड़ो देर बाद आई-योकितियों मिले चौर परने बहुत से असामियों को साथ किये हुए घोड़े पर सवार डालकीय तक इमराह घाये कर्क जिस्ता में घोड़ों की डाल बद भी गयो घोर फिर जाकर एडिन्दरा की सरहद पर घोड़े बदले एडिन्दरा में बहुत जीग जमा थे मगर इस कोग उहर न सके साढ़े पांच बजे डालकीय में दाख़िल हुए।

६५ सील का सफर हुआ में बहुत यक गयी चौर यहां ख़ैरीयत से पहुंच जाने पर बड़ो खुबी हुई।

ढालकीथ, बुधवार, सिसम्बर, १४।

स्ताटक एक में इस को गांच बाज हो के दिन हैं इज़ोज़त में यह पक्ष बढ़ा रसपीय छान है सुक्ते इस के छोड़ने का बहुत बढ़ा रंज है पैटल का-बार इस की में ने इस संदर बन छातियाला को देखा जिसे खूज ने पाले से बचाने की पेड़ों के नमले रखने के थिये बिजाड़ान पत्यन का बनवाया है साड़े तीन कज डचेज़ बोक कियों के साथ में बाइर निजकी घीर सिर्फ कर्ने न हो बोड़े यह पर सवार साथ रई मेज बिज रक्षा घीर लोग ईड नाम एक गांव में हो कर जहां को यसे की खान है रोज़ की न में घाये डाल को य के क़रीब र बहुत से आ थों में को यसे की खान है।

यक गिर्जा घर में उतरे यह मकान पन्द्रकों सदी का बना है भीर भव सक्त बहुत दुवस्त रहा है भीर दम में काम भी निहायत खूब किया है आर्ड-रोसकीन् के खान्दान का क्विरिस्तान हैं दमी बाइस कार्ड शाहित इस की मरसात रखते हैं रोसकीन् खान्दान की बीस बैरम ज़िरह बकतर समेत यहां गाहे नये हैं जब हम बोग गिर्जा को बाहिर पाये यहां भीड़ जमा थी।

रोसकीन से इत्थानीडिन की गये वह मुंदर सुकास नदी कनारे बहुत कर्जदी पर है यहां पर भी बड़ी भीड़ देख कर तस्त्रज्ञुन हुमा ज़रून से कीना रोसकीन से इस कीगों से मिनन के निये दीड़े इसे माये होंगे।

गाड़ो से उतर कर घड़ाड़ों की चहुत खोड़ों को देखा वड़ निरी यहार को चहानों में हैं चौर उप में ऐने ग्जै प्छररे म्के चौर उस के साइसी साथी बहुत दिनों तक हुपै रहे ये उचिवाने बयान किया कि नदो के किनारे किनारे बोबकीन तक इस प्रकार की बहुत सी गुफा है।

बीनी दिन नास एक दूसरे की यसे की आन वाले गांव और डानाकाथ में की कर डेरे में बाये।

बृहस्पाते, सितम्बर १९ ।

साई सात बजे इस की गों ने दाज़िरी खायो घोर घाठ वजे जूच किया स्वेज़ बीक वियो घीर, सार्ड लिवरपूना घोर नार्ड शार्ड विक् साथ दुव के डियां घोर रक्षे की ग पदि लेंदी घूंप' की कहा ज़ पर सवार हो गये ये दिन भाज का बहुत साज़ घोर चमकी का या एडिज्वरा में हो कर इस की ग गये वहां की तैयारो बड़ी खूबी के, साथ दुई यो घीर दिनाज़ास भी उसदा या गाड़ी से बसर कर यह पर से द्वारेड न्ट गास एक बड़े घूंप' की नाव पर की "जेन- रक्ष स्टोज् मैिंबिरीयम् कम्पनी" का या मनार इए खूक् भीर ख्वेज़बीक नियी भीर सेडोजेस्काट् एमिकन्वाले भीर कार्ड कीडर भीर सेडोबम्बेम्बैन जवाज़ यर पाये भीर इस की। उन से क्ख्नत इए ख्वेज़ भीर खून बड़ी मिहर-यानी भीर खातिर से पेश खारे भीर कमकी में की मिहमानदारी बहुत बढ़ के करते रहते उन के सबय डानकीय मानी इस कोगी का घर हो गय। या इस बा ग्रकर घटा किया।

क्यों क्यों स्काट् केन्द्र का मुंदर किनारा पांखों से ज़ारव होता काता था ऐसे दिन क्या भीर दिवागी को सैर के ख़तम होने का खैद होता था हम कोगों को यह कभी न भूनेगा झार्व हैन्द्र कहा ज़ पर बनिम्बत रायन कार्ज के ज़ियादा मामान या और बहुत खूबमूरतों में सजा था भीरवहर सर्व बूध एक बूदा ख़ुथ मिलाज़ बादमी भीर कमैक्डरबुका कभीर दन के निवास तीन भीर भए मर दस कहा ज़ पर थे राखामान यूम् कहा ज़ चन्द्र नी कर और गाड़ियों भनेत भीर शोसरवाटर कहा ज़ जिस्सर कार्ड निवरणूक भीर कार्ड हार्ड विका सवार थे कल ही रात को खुन गया।

भैनासण्डर जहाज जिन पर ऐनसन् माहिस चौर उनकी की बे बार की चौर फ़ीयर लेन् चौर रायल्लाज हम लोगों के माद्य हो खुले सगर हथा मुनाफ़िक की इस लिये रायल लाज निगाह में ग़ाइब हुआ फिर बोड़ी टेर में चौर सब जहाज भी पोक्टेरह गये केवब मान के जहाक ने बाद न कोड़ा वह "जेनर लाई स्टोमने को ग्रीयन कान्य नो " का है चौर उस. पर चोड़े घे ढान्टेलन् के पुराने किले का खड़हर समुद्र के किनारे पर बाम गाक्स से मिना हुआ है वासराक पर समुद्र को एक नाम मुग़रियों चौर टाणू की बलाओं चारों तरफ़ ऐसी छ। गयी थों कि विकास न मजिट हो गया था।

दो बजे प्रिव मैन्टिए व्यक्ति को देखा जिस के पहिले मर्तवा क्षक काने का चप्रवीम या मारित चन् नाम कितार खोन कर मैंने चंद गैर जो उस में संबारत्यामो चौरतों को डाक में हैं पढ़े दन चौरतों ने होनी टापू तक समुद्र की राष्ट्र एफर किया या चौर फिर उसी टापू पर एक संसार त्यामियों के रहन के सठ टूटे फूटे निगान को भपनी चांच से देखा तब इस के बाद से बता का किना चौर फिनी टापू नज़र चाया पहिनों मर्तवा जिस दिन को गर से से बये थे उस की पहिनी रात को नेवारा ये सड़ाकीं का मर गया था यह ख़बर बन कर मफ़सीस हुया।

श्रुक, सिप्तम्बर १६ ।

जाराज के शंदर खंबर पायी पांच बजे सबस की हिंस की स्मार खारा है है साम बद साये है बाक देखा नाम घू ए के जाराज की साद शाठ बजी रात की छोड़ पाये थे भी। सब जाराज के सहन पर निकान के बता तक सिर्फ़ उस सा धूपां नजर पाया साद नव बजी पांच थे के बाद में भी सहन पर पायी पांज का सबस बहुत साफ़ चीर चमकी ना या सम की भी ने जुक्क करवा विया भीर टक्सत रही सब हम लोग किनार से बाहिर स्थाह समुद्र में भा मये थे तमाम दिन माफ़ या पांच बजी राहा मैनयम के नज़दीक पाये वह पांच दिन भर नज़र पाया किया है साद पांच बजी जहाज़ की सहन पर नियान और भंडियों का एक छोटा सा खेमा बना कर हम में हम की माँ ने बड़े मज़ से खाना खाया पाँच के ज़रीब यारमय में भागी बढ़े यह जमह विकान बरावर बहादान थी पांच बजी हुई ममुद्र पर भावत रही थी इस को मराबूप होता है संदर चांदनी विच्छी हुई ममुद्र पर भावत रही थी इस को परावत हुए हम लोग सहन पर टक्स रहे थे।

साढ़े सात बजे जहाज़ के घंदर गये "दोले प्राज़दिलाल मिन्स्ट्रेल" नाम किताब जे चीचे चौर पांचवें ग्रैर को पढ़ कर पालक्ट को सुनाय। धीर फिर पियानो सवाया।

शनीचर, सिप्तम्बर १७।

तीन वजे सुबह की तीयों की धमक से नींद खुल गयी पर यह धवाज़ नागवार न थी क्यों कि नदी के सुहाने पर मुक्तास गौर में पहुंच गये थे क के करीब मुना कि भभी हम जीग राडासैन यम् कोड़ भाये हैं भीर शिषदन्छ पर कहाज़ कका है कि बाकदेग्ल साथ हो जाय भाज का दिन साफ पर कुछ कुछ कुहामा भी था।

नदी पर जहाज चनता हुया भना सासूम होता या दस दणने के दस मिनट बाद इस कीम किस्ती से ज़सीन धर उतर उजिज़नाफ़ींक चौर सिम्मै-टिख्डापैगेट चौर इक्षेरो कोम यहां पर सीजूद थे सगर दूमरी का पता न या सरजेसकक्कार्क द्वारंडिन्ट जहाज़ में इस कोगों के साथ थे स्टेशन् में जा कर रेक्ष गाड़ो पर सवार हुए घोर साढ़े हारह बजे विंज़र किसे में पहंच गये।

दंद की कविता।

दोशा।

श्रीगृद नाथ प्रधाव तें , डीत सनीरय दिदि घन तें ज्यों तक वे जिदन पान पानन की वृद्धि किये बन्द प्रस्ताव दोडा सगम बनाय डिता पर्य द्रष्टांत करि , इंढ के दिये बताय भाव चरच समभात सबै . भने नगें यह भाय , बानी सुनत सुदाय जैसे पावसर की कड़ी , दिन भवसर की वात नोकी ये फीको निं सिंगार खुडात जैसे बरनत जुड फोको ये नोको जगै किथे समें विचारि चव की सन दरखित करें ज्यों विवाद में गारि रीगी चवगुन ना गनत यहै जगत की चाल देखी सब ही ज्याम कीं वहत खान सव चान जो जाकी प्यारी जरी सो तिहिं करत बखान जैसे विष की विष मधी मानत घमत समान जी जाकी गुन जानही सी तिष्टिं भादर देत कोवित चंवडि सेत है जाग निंबीरी हीत धन उदाम हो एक की थी परि करत निवाद ज्यों पनगर भख पानिक , निकसत वाही राष्ट इजन चलन की चकति है तीलीं उद्यम ठानि बाजगर को सगपति बदन स्गन परत है पानि कहा होय हद्मम किये च्यो प्रभुद्धी प्रतिकल वारे खन्म निरम्स जैसें निपज खेत की 11 88 11 जाही तें कड़ पाइये करिये ताकी थाप वैमें नुभात पियास शीते शरवर पै गयै ॥ १२ ॥ सो तिर्डि प्रै चास नी नाडी में है उड़े चातक मनत पियास स्नाति बंद विन सचन में

नी जीवन सुख भीन । गुनको तक मगावये, यागन यानत कीन ॥ १८॥ भाग जरावत नगर तज पडे प्रेम की गाथ। रस धनरस समभी न कह सांच पिटारे शय ॥ १५ ॥ ओछ मंत्र न जानह कर शवकन मीं गैर जी से निवह भिवस जन करत सगर की बैर ॥ १६ ॥ जैसे बम सागर 'विषे विन विचारि विश्वश्वार कोज समभा न को जिये, विर की पायन भार चाय रहत जानत नहीं जासी सुधरे जाम दोशी बवसर की भकी घन को कींने काम ॥ १८॥ खितो मूखे वरमधी कारतव कारिये दौर अपनी पहुच विचारी वें जितो कांबी ठीर ॥ १८॥ तिते यांव यसारिये करत विश्वासन चुकि विस्न क्ली नर सजन सी पीवत काकडि फूंकि ॥ २ ॥ जैवें दाध्यो दूध मी योरे इं जलदान प्रान वचातुर के रहे डारे मिनत न पान ॥ २१॥ वीके जनसर सहस घट कडी जु पावे कीन । विद्या धन उद्यग विना ज्यों पंखा को पीन ॥ २२॥ विना डुकाये ना मिले परन न दीजी खोट बनती देख बनाइये तैसी दोजी पोट H SE H जेशी चली बयार तव दीनो शीत बताय बोहि नर की प्रीति की घटत घटत घट नाय जैसे छोजर तान जन ताही को उपहास चन मिनती नोई करत करत. भोग की चास ॥ २५ ॥ जीवें जोगों जोग में हिये विचारी भाष । बुरे लगत सिख के बचन मिटेन तन की ताप नारवे सेवान विम विये पैन नीच यह याप बड़े बड़ेन कीं, दुख दस्त घन मेरत पैना चरित , गिरवर घोषम ताप ॥ २०॥ पायय वस्ते होय । गुरुता सञ्जता पुरुष की , दरपन में खबु धोय ॥ २८ ॥ करी वृंद में विंध्य शी

रहे समीप बडेन के चीत बड़ी दित मेन सवडो जानत बढत है व्य बरावर वेस ॥ २८॥ उपकारी उपकार जग सब भी करत प्रकास ज्यों कट मध्रे तक मनय , समयन कात स्वास द्वीय बडेबन द'नियं कठिन मिलन सुखरंग गरदम बंधम छत सहत. क्षच इन गुननि प्रसंग ॥ ३१॥ करं जाइ नाहिन मिटत को विधि निख्यो निनार। मंजुस भय करि कंभ जुव भवे तदां निख सार विधिक्ठै तठै जनम की करि सकी सदाय। दनदव भयं जनगत गलिन तहं दिम देत जराय ॥ ३३ ॥ मेम पगत वरकीन क्यों चव वरजत वेकाल। शेम रोम विष रमरह्यो नाडिन वनत इलाज ॥ 38॥ भी ,कोन बोवार। फिर न ही है कापट सी जैसे पांडी काठ की घढे म दजी बार ॥ ३५॥ करिये मुखकी चीत दुख यह कहीं कींन स्यान वा भीनेकी जारियें जासी टठे कांग ॥ १६॥ नैना टेत बताय सब दिय की हेत घहेत । सीवें निरमस आरमी भक्ती बरी कड देत ॥ ३०॥ कर्वि जनादर भाव। चति पर चैते शीत है चंदन देत नराय ॥ ३८॥ सलयागिर की भीजनी को जीव चाडे मार्डि। मो ताक भवग्न कहै विरक्ति मसिकि कड़ाडि ॥ ३८॥ तपत कलंकी विव भयी भी सब दिन कों फिर। सखदाईयै देत तपत विश्व की वेर ॥ ४०॥ श्वि सीतल संबोग में द्रजन यस के जात। विधि के विश्वे स्वान इं चंचन बहै वुकात ॥ ४१॥ दीविश्व राखी ववन तें तैकी उानत तादि जामी जैसी भाव भी संविद्विधाकर कहतकोड कहत कलंकी चाहि ॥ ४२॥ भनी भन्ने नगनानि । चाप बुरे लग है बुरों तजत बहेरा छोड सब गहत यांव की यानि॥ ४३॥

भी ज स्याने एक मति यह कहनत है सांच। काचिर पांच करन कीउ पांचित्र कहै न कांच ॥ 88 ॥ जी जी बीनत नाहि । भरी बरे सब एक सी जान परत है काक विक ऋत बर्गत के मांचि ॥ ४५ ॥ भाव भाव में भेव । भाव भाव की मित्रि है नहीं भीत की सेव ॥ ४६॥ की मानी ती देव है कदिता बचन विकास । निरमन योता मह पै काव भाव जी तीय के पति यांचे के पास ॥ ४०॥ तदांन वसिये जाय । भने वर जडां एक मे ज्यों पन्याय प्रभी विकी खर गर एके भाष ॥ ४८॥ ग खरि नाम रंग देखि सम गुन दिन समभी बात । गात भात गीड्य ते में इड के तें घात ॥ १८॥ बिन गुन कुस जाने विना मानन वरि मनुशारि। द्रगत फिरत सब जगत की सेव मन्ना को धादि ॥ ५०॥ दितड की कदिये न तिंडिं को नर दोय चवीच । होत दिखाने क्रोध ॥ ५१॥ च्यों नकटे की पारधी चति जनोति किश्यै न धन को प्यारी मन होया पाये सोने की छने पेटन सारे कीय ॥ ५२॥ सर्व की पीवी दर्द बांचन की गुन गाथ। जैसे निरमन चारमी दर् चंघ के हाय ॥ ५२॥ सधर यचन तें जात सिट उत्तम जन समिमान । तनवा सीत जजसी मिटे जैसे दघ इफान ॥ ५४॥ हे ताडी शें वात । कासी रका होत है कदा करे को ज सबै बार जिकरिया खात ॥ ५५ ॥ सबै महायक सबस के कोड न निवस सहाय । पवन जगावत चान की , दोपधि देत बुभाय ॥ ५६ ॥ कक् बनाय नहिं अबस भी करे निवल पर कोर । चलीन पचल पचार तब डारति पवन भकोर ॥ ५०॥ सबै सम्भ की कीजिये काम वहै अभिराम । संघव मान्यो जैव ते चोरा की कहा कास ॥ ५८॥

को जाही में रंच रहा , तिहिं नाही में काम । बाह्य करे वत भाग ॥ ५८॥ जीमें किरवा पाक की . जिय चाडि मोई मिले, जियत भनी दिय सागि कड़ा करे से पाणि ॥ ६० ॥ म्याभी चाइत नीर कीं. जिय पिय चाहे तमनारी , घन घन्दन उपचार रोग कछ घोषध कछ , कीं डोत करार ॥ ६१॥ विरष्ट तपन पिय बात ते . उठत चीगुनी जागि । ज्यों सनेह की चार्ग ॥ ६२ ॥ जब के सीचे चटत है . रोध मिटे कीसे जहत . विस उपजावन बात इंधन डारे आग मीं , कैंचे चाग बुकात ॥ ६६॥ चित पट सत कर पट बढे, बात ना करिए कोय । ज्यों ज्यों भीजे कामरी , त्यों त्यों भारी होय ॥ ६४ ॥ सामच इ ऐसी भनी , जासी पूरे चास । चाटे इ बाहुं भी स के , मिटे का इ की प्यास ॥ ६५ ॥ विष इं तें सरसी करी , रव में रिचवी भाखा। जैमें पित्त ज्वरीन की, करवी सागति दाख ॥ ६६॥ को जीई भावे सो भक्षी , गुन को ककुत विचार । तन गनस्वता भीकनी , पहरति गुंजा हार ॥ ६०॥ संयद करत अजान । हरिरस परिहरि विवयरस . जैसे कोड करत है , छाडि मुधा विष धान ॥ ६८॥ कुन भारत छोडे न कोड , घोडू बुद्दि की दानि । मन इक मारत दमरो , चढत मदावत पानि ॥ ६८॥ जासी निगई जीविका , करिये सी पश्यास । कीं पर पाम ॥ ७० ॥ विख्या पाले सील ती, दुष्ट न काडे दुष्टता , बेसेंचू सख देत । धीये इं सी वेर के , साजर क्षेत्र न सेत ॥ ७१॥ कइं चवरान सोद होत गुन , कहुं गुन चवरान होता। ज़ुच वाठीर त्यों है भने , बीमच नुरे उदीत ॥ ७२ ॥ चसुम करत सीर दीत सम, सज्जन यचन भन्त । सवन पिता दिय दसरयहि, साप भयी बर रूप ॥ ७३ ॥

एक भकी सब की भनी , देखी सबदं विवेक । जीव चनेका ॥ ७४ ॥ जैसे यत प्रविदंद के , उधरे एक बुरे सब की बुरी , दोत सबस के कीप ा धावतान धार्जन के भयी , सब किवन की कीप ॥ ७५ ॥ बड़े न पै जाचे मशी , लद्वि होत , बपमान गिरत इंत गिरदाष्ट्र तें , गन के तल बखान ॥ ७६ ॥ भवगुन करता भीरपी , देत भीर की मार । जी पहुंचे नहि बद्र की , कारत विरच निमार ॥ ७० ॥ मान होत है गुननि तें , गुन विन मान न होद सक्तारी राखें सबै , लाग न राखे कोइ चाडंबर तज की जिये शुन शिवड वित चाय । कीर रक्षत न विकेशक . षानिय घंठ बंधाय ॥ ७८ ॥ जैसी गुन दीनी दर्द , तैसी कप निदंध री दोज कहां पार्य , भीगी चीर मगंध ॥ ८० ॥ तिन में डोय विरोध । थशिकाषी एक बात के . वाण राज की राज मृत -, करत भिरत करिक्रोध ॥ ८१॥ को जाकी चाडे भकी : सो ताडी की पीर । नीर बुभावे चाग की . बोखे ताहि महीर ॥ ८२ ॥ चित्र कियेद दित करें , यळान परम सधीर । भीखें इं सीतस करें, जैसे नीर समीर ॥ दश ॥ है सदाय दित क् बारे , तक दृष्ट दुख देत । जैसे बावक पवन की , मिलें जराये खेत ॥ ८४ ॥ अपनी अपनी ठीर पर : शोभा कक्त विशेष चरन सहावर ही भनी , नेनन यंजन रेख ॥ दम् ॥ जो चाकी सोई करी , मेरी कहु न ककाव । जंती के कर जंत्र है , की भावे की बकाव ॥ ८६॥ जाको जैसी उचित तिष्टिं, करिये भोद विचारी । गोदर कैसे खाइं है , गन मुक्ता गन मारि ॥ ८०॥ जुदेन जैसे सहत है , सिसी विरंगह रंग ं काथ संग चुनी घरत , कीत काक मिल संग ॥ ८६ ॥

गहि इलान देखी चुन्यी , जाभी मिटत सभाव मधु पुर नोरिक देत तक विषम तज्ञत विषभाव ॥ ८८॥ जाकी जाशी जन सम्यो . सो तिष्टिं चावे दाय । भान भस्र विष मंड शिव , तीहं शिवा मुहाय ॥ ८०॥ होय कछ ममभी कछ , जाकी मति विपरीत कानक मखी जैसे कर्य स्याम चेत को पोत प्रेम निवाधन कठन है ममभ नीजियी कीय भांग भखन है मुगम पै बाहर काठिन ही होय ॥ ८२॥ कोड विन देखे विन मने . की सं कदे विचार कप सेख जाने कड़ा . सागर की विक्तार ॥ ८३॥ देव सेव फल देत है जाकी जैसी भाग जैवें सुख करि धारमी , देखी मोद दिखाय ॥ ८४॥ कुल बन जिमी शोय मी , तैसो करि है बात वनिक पुत्र काने कहा गढ सेवे की चात ॥ १५॥ कैंचें मिलि है चोद काकी चोर न जाइये जीमे पक्रिम दिस गये परव काल न चोद ॥ ८६॥ लेबी बंधन प्रेम की तैसी बंधन चीर कारिक भेटे कमन की क्केट न निकर भीर ॥ ८०॥ . रिभात जिडि तिडिकान। ने घटार ते देत गान बनाये हैं करें े गौरीवंत निष्ठांक ॥ ८८ ॥ बोजन जरत निहोर चवनी चवनी गरज सब गिरवर ह भी मोर ॥ ८८॥ विन गरजे बोले नहीं टाता 'कडिये छोड को सबही को देत है असधर वरवत सम विवस , यन म विचारत कोइ ॥ १००॥ तिन सो विसुख न इजिये , जे जयकार समित जैसें पीठ न देत भीर ताल जल पान करि 11 808 11 सी तिडिं वाडै विचार । जी समभी जा वात जी वैद्य पदन की चार ॥१०२॥ बीम न जाने ज्योतियी . दरें न सुख्यख भीर । नवस नेड चानंद उमंग तवडी जान्यी जात है, ज्यों मुशंभ की चीर ।। १०२।।

प्रकार मिले सन मिलत है, धन मिलतें न मिलाय टघ दही ते असत है , कांजी ते फटनाय ॥ १०४॥ है चंतर चिवाय वात कडन की रीति में एक बचन तें रिम बढे , एक बचन ते जाय ॥ १०५ ॥ एक वस्त गुन होत है, भिन्न पक्तत की भंटा एक की वित वागत . करत एक को वाय ॥ १ + ६ । स्ख में चीत चरीन सी , दुख सरीन सी जाकी सीठी खाइये , कर्वा खाइये शीय ॥ १००॥ , विन स्तारय कोड नाहिं। खारच के सबदी परी जैमें पंक्षी धरस तक , निरस भये उडनाड़िं ॥ १०८॥ को बायक जिनि भांति की, तामीं तैनी होय । सळान भी न बुरी करें , दुरवन ससी न बीय ॥ १०८॥ स्य बीते इस डोत है , दुख बीते स्य डोत । दिवस गरी ज्यों निस उदित, निस गत दिवस उदोत ॥ ११० ॥ को भाखें होई सदी , बड़े पुरुष सुख खानि । है अनंग ताकों कहैं, महा रूप की खानि ॥ १११ ॥ दोष अशी न खचारिये , जदपि जयारय बात कड़े यंध को यांधरी मान बुरी सतरात ॥ ११२॥ यर घर कवडं न जाइये , गये घटत है जीति । रविमंडन में नात् स्थि , कीन कचा कवि होति ॥ ११३ ॥ भोरदि तें कोमच प्रकृति , मज्जन परम दयान कीन सिखावत है कही . राज इंच को चाना ॥ ११४ ॥ सळान पंगीकत किए , ताकी खेरि निवाहि करई कलंकी क्रिटिश यशि . तड शिव तजत न ताहि ॥ ११५ ॥ जिन पंडित विद्यातजङ्ग , धन सुरख चवरेख कुलजा सील न पर इवे , कुलटा भूषित देख ॥ ११६ ॥ एक द्वा निवह नहीं, जिन पकताबह कोय। रविष् की इक दिवस में , तीन चवस्था कीय ग्रांच मिटि कालुखता, सतसंगति को पाय । जैसे पारम को परस , स्रोह कनक ही बाय ॥ ११८ ॥

त्रेमगङ्ग तरङ्ग ।

(विशेष मिखरनी छंद।)

जय जयित जय सीता रमनः जय जय रमा पति, सुख सदन; जय राम, सन्सृति दुख शमन; भवभयं हरन, अशरन शरन। जय अवधपति, रघुकुल मनी; निज दास वश, त्रिभुवन धनी; आनन्दकन्द कृपायतनः भवभय हरन. अशरन शरन। अव्यक्तमेकमगोचरम् विज्ञान घन, धरणीधरम् मण्डन मही, निाशचर दमनः भवभय हरन अशरन शरन। लावण्य निधि, राजिव नयनः तपसीसुखद, करुणा अयनः किलिमल दबन, मङ्गल भवन; भवभय हरन अशरन शरन॥ (विचिच छंद।)

नमामी जानकीरमनं नमामी।

भजामी भक्तभे शमनं भजामी॥ कृपासागर, मुनीरंजन, गुनागार। शरासनबानधर, भंजनमहीभार॥ उमावराप्रय. राजिवनैन. रघुबीर । खरारी, रावणारी, धीर, गम्भीर ॥ कमलकर, पद्मपद, नवकंजलोचन ! महा भी भीर हर, त्रेताप मोचन ॥ बिरज, रघुवंशभूषण, भूमिमण्डल। परशुधर मोहहर, हरचापखण्डन ॥ नकेहरि, मीन, कछ, बाराह, बावन। बिविधतनुधर, सदानवचरितपावन ॥ विभीषणराजप्रद, अवधेश, सुखधाम । निरालिलावण्य, लज्जतकोटिशतकाम॥ पतितपावन, शरणभौपीरहर्ता। चराचरस्वामि, रघुवर, विश्वभर्ता॥ अमित, अज, निर्विकाराव्यक्त, जगदीश। दिवाकर कुलकमलवनरिव, तपस्वीश सहसफन शारदा सकुचायं जिस्में। तो आस्तुतिशक्ति है फिर और किंसमें ॥ प्रभो ! तव पद्मपद तजि, सुख कहीं है । ? नहीं ही है, नहीं ही है नहीं है।

परम विश्राम है नित एक किस्की।

तुम्हारी ही है अबिरलप्रीति जिस्की।

किया सब ने यही सिद्धान्त अपना।

'सिया रघुबीर सीताराम' जपना॥

प्रवल कलिकाल, और माया प्रवलतर।

अबला सब जीव, औ तपसी अबलतर॥

प्रणतपरितापभक्षक! पाहि रघुबीर।

धनुषधर, दीनरक्षक! वाहि रघुबीर॥

अब अबिरलभक्ति अपनी मुझ को दीजे।

मुझे सब मांति से अपनाय लीजे॥

(षन्ष इंद।)

"जयराम, रूपराशि, कृपासिन्धु, सुखसदन । सीतानयनचकोरि शरदपूरसासिबदन ॥ राजीवनेन, नीलसरोरुह तमाल सतन । लावण्यताविलोकि लजित कोटिशतमदन ॥ दशरथतनय, प्रमोदबिहारी, रमारमन । गोरीशप्रिय विरावित अमर सेव्य, स्यामघन ॥ दशसीसरिषु खरारि, स्वभक्तापदादलन । मुनि, विप्र, सन्त, धेनु धरा देव दुख दमन ॥ करकंजचापबान मनोहर जलज नयन । सीन्दर्श्यसान मूरित माधुर्य छित्र अयन ॥ केवल कृपा तुम्हारि है कलिकालमलशामन । बिनुतवभजन सुखीनिह करिकाउशतयतन ॥ हिय हेरि नाथ ! एक तुम्ही सर्वभयहरन । सीता संवरे आयउ प्रभुपद्मपद्शरन ॥

(विशेषतीटन छंद।)

"जय अशरणशरण, राम दशरथिकशोर । जनकनन्दनी मुखिबधू बरचकोर ॥ सियाप्राणपति, भक्तवत्सज, हरी । कृपासिन्धु, भगवन्त, रावणअरी ॥ कौशल्यातनय, दीनहित, भयशमन । महीदेव, गो, देव, मिह दुखदमन ॥ उमानाथ ब्रह्मादि सेवित, उदार । उरे हिज चरण चिन्ह, प्रभुताअपार ॥ त्रिविधतापहर, कारुणीक, अधहरनी । विनाहेतु सुखदाइ, मंगलकरन ॥ अलख, सिबदानन्द, छिबमूर्तिमान । पतितपावन, अवधेश, करुणानिधान ॥ विभुव्यापकानन्त, विज्ञानभूप । धरे सुर धरा धेनु हित नर स्वरूप ॥ धरे सुर धरा धेनु हित नर स्वरूप ॥

प्रभु स्तुति तेरी मुझसे किसभांति हो।
बड़े से बड़े भी सकेक्र न जो।।
न देखी किसूने गिरा थाह छेति।
कही शेष औ वेदोंने "नेतिनेति॥
में बाछक, प्रभो! अल्प अति मित मेरी।
अपार और अकथनीय महिमा तेरी॥
अमित है, अमित है, अमित है, अमित।
अधिक और क्या कह सके रामहित॥
तेरे पद्मपद छुट, नहीं और छोर।
न तव भक्तिछुट जगमें कछु सार और॥

प्रासङ्गिक कविता। पण्डितवर श्रीदुर्गादत्त कवि क्रत।

धिग जीवन है जग में तिनको ज़िन शास्त्र को भेद कछू नहीं जानो। धिग जीवन दत्त कह्यो तिनको जिनको कहुं उद्यम को न ठिकानो॥ धिग जीवन जाति के बाहिर को जिन को न कछू मर जाद को बानो। सब ब्यर्थ मनोरथ हैं जिन के धिग जीवन तो तिनहूँ को बखानो॥ १॥ चंचल बीजुरी को चमको जिमी बादर खण्ड को चंचल छाया। चंचल है जिमि पीपर पात औ चंचल दीप को सीस बताया ॥ चंचल है जिमि फूल की आगि धुजाह को कोन ज्यों चंचल गाया। दत्त जू तैसोई चंचल जोवन तैसिये चंचल है यह काया॥ २॥

जनम सुधारिबे को आपनो जो चाहे हैं तो मानें मित मतो मित्र अब तू अपर को। मूड़ तो मुंडें है घर के नतें छुटें हैं केहें गिरि को निवासी के भिखारी घर घर को॥ दत्त कि तेरो सुभ चिन्तक सदा को कहे नरक निवारि पद पाय है अमर को। धामहूँ सम्हाँरि निज काम जिन टारि पर है घरी उचारि नित नाम हरीहर को॥ ३॥ देव को मन्दिर हू किन होइ पे चोर रहे नित चोरि के तार में। कामु के चेला जु कामी अहें तिन को मन जैसें रहे पर दार में॥ भक्तन को भगवन्त के माहि त्यों दत्त गृही को रहे गृह कार में। त्योंही महान सुजानन को मन सान्यों रहे पर के उपकार में॥ ४॥

वाह वा खाई न जाति अहै पहिरी नहि जाति या नीके पतीजिये। बेचन याहि गयो सो विको

निह नाहि गिरों धरी का अब कीजिये। जो कुछ आप की है सरधा तो सुदत्त दया करि द्रव्यहि दीजिये। तो यह बाहवा राखिहों में न तो आपनो बाहवा आपुहि छीजिये। ५॥

कैसेह पण्डित होय गुनी वह कैसह वेद करो जु उचारन । कैसह जोगी जती किन होह चढ़ाय करो वह पान को धारन ॥ आपने धाम अजाचक है रहे दत्त यह सनमान को कारन । औसि ठहेगो अनादर सो नर जांचि है जाय जोई पर हारन ॥ ६ ॥

होत नाहि जोन मनोरथ दिकपाल सेये दियो जात काहु भांति नांहि जो दिगीस तें। बेद और पुरान हूँ के पढ़े ते मिलत नांहि सिद्ध होत नाहि जोपे जोधा दस बीस तें ॥ बुद्धि कल देह बल सबै थिक जाँहि जहाँ पायो नहि जात जोई बिद्याहू छतीस तें। होत सोई वांछित सहज में बतावे दत्त तोषिस किये पे एक बिन्न की असीसतें॥॥॥

काहे दहे तन को सुपचागिन इन्द्रिय को अति संजम नाँथे। त्यागि के भूषन वास सुबास तपे तप जरध कों करि हाथे॥ क्यों बहु तीरथ कों भरमें पुनि गावत औरन के गुन गाथे। सुद्ध भयो चहें तो तू घरें किन मात पिता चरनोदक माथे॥८॥ जग्य न आदि करें करमें तन धूनी लगाय करें गर में। धारत है मृग के चरमें कंह बेठत है बरषा झर में॥ औरही और रचे धरमें नहिं बूझत बेदन के मरमें। नाहक तू जग में भरमें तव तीरथ मात पिता घर में॥ ९॥

आछे गजराज आछे घोरे सुभ सजेसाज पँगति सिपाहि को त्यों जुद्ध में सुहाति है। आछे सुक सारिकादि आछी गऊ आछे द्य आछी तिया जापे छिब खानि सरसाति है। आछे कि पण्डित गवेया गुनी जन आछे बानी दत्तकि जूकी साँची ही छखाति है। ल्याय ल्याय गृह माँहि राखिबो सकछ चाहें तिन के निवाहिबे में बाई पिचजाति है। १०॥ मानुख जनम को सुधाऱ्यों तिन नीको भाँति तिनने सुधाऱ्यों सब परछोक साज है। अरथ धरम काम सकछ सुधाऱ्यों तिन तिन ने सुधाऱ्यों सब पुष्त को समाज है। देव ऋषि पित्रन को काजह सुधाऱ्यों दत्त तिनने सुधाऱ्यों दुहुँ छोकन को राज है। सरग सुधाऱ्यों अप बर्गन सुधाऱ्यों को राज है। सरग सुधाऱ्यों अप बर्गन सुधाऱ्यों

तिन जिन मन लाय के सुधाऱ्यो पर काज है ॥१/९॥
तन हूँ धन हूँ न रहे जग में सुख साज समाज
रहे दिन चारिह । अह पुत्र कलत्र सदा न रहे
बय हू लय होय के रूप बिगारिह ॥ यह धाम
अराम रहे न कहूँ अरु औरहु बस्तु सके कछु
ना रहि । लिख दत्त कहे रहि जात अहे जग
माँहि सदा पर को उपकारिह ॥ १२॥

मेरु विंध्य आदि गिरि धरा के धरनिहार वेज कोड समय में थान तें हलत हैं। दिग्गज दराज देह दाबे रहें भूमि कों जे तेड काल पाय निज दिसा तें टलत हैं॥ छिति थहरात जो पचास कोटि जोजन की तरुहू को मूल कवों दत्त दहलत हैं। बड़े बड़े अचल चलाय मान होय जो पे सजन के बैन कढ़े नैक न चलत हैं॥ १३॥

सोमल को संखिया को विरच्यो धतूराहू को हीरा की कनी को ना अफीम घुरे पानी को । सकुची की पूँछ को न सिंह हू की मूछ को न विष माहि बोरि पेसंकवज घुसानी को ॥ दत्त कि कहे स्वान हूं को एतो विष नाहि एतो विष नाहि मधुमाछी के इसानीं को । गोहरा को सांप को सु बीछू हू को सुन्यो नाहि जैसो कछु चिंह जात जहर जुवानी को ॥ १४॥

कविता।

सह।सहोपाध्याय कविराज ग्रामल दासक्ता।

पंकज इच्छन तें किंब मृंग महा रस दीधिति के मिस छेत हैं।चोर छवार उलूकन कों निरवार प्रजा गन रागन हेत हैं ॥ सम्यन के खटके तम तोम मिटाय किये सब कों मुद पेत हैं। सज्जन आज के चौस प्रकास प्रभाकर रूप सबें सुख देत हैं॥ १॥

सोवत खोळ कपाट प्रजामय छोर निसंक बिधान सुभाय की। सावन की निस बीथिन बीच सुनी न कथा पद ठोकर खाय की ॥ सेवत जो तन तें मन तें निधि उन्नति होत दिनोत्तर छाय की। सजन रान के राज की रीति भई सब नीति ज्यों कोशळ राय की॥ २॥ मेद पाठ उदयादि पें, सज्जन सूर प्रकास। होत भये कि कुळ कमळ, सरस सवास बिकास॥

जानकीमङ्गल नाटक।

नान्दी।

पुष्पेम्यो बिचरन् विदेहन्यतेः क्रीडा बनं सानुजो ।

दृष्ट्या तत्ततनयां हृदि प्रमुदितोऽलङ्कारभ्तां भुवः ॥

प्राप्तो रङ्गमहीं महेश्वरधनुर्भङ्क्ष्या वृतः सीतया ।

जिल्वा भागवमार्चतः सुरगणैः श्रीराघवः पातु वः ॥ १ ॥

प्राप्तच ।

या पूर्णचन्द्राधिकसुन्दरास्या या शुद्धचामीकरदेइकान्तिः । या रामचकाऽ मृतपानलुञ्धा सा जानकी मङ्गळमातनीतु ॥ २ ॥

नान्दी पांड के पनन्तर।

स्वधार।—(नेपव्य की भीर देखकर) व्यारो ? सिंगार कर चुकी को भीर बक्त पाभूवल पहिन निवें को भी यहां भावों।

नटी :- (पाकर) पाणनाय ? क्या पाका होती है।

नटो । - पाचित्र ! मेरी बुद्धि में यह बात चाती है कि इन महामयी के संमुख बहुनाथ के चरित्रास्तृत की कीला हो ती बहुत चच्छा।

मुच । - वाणिपिते ! रशुनाथ के चरित्र तो धनंत हैं। भीर कवियों ने धनेक चरित्री पर चनेक प्रकार के नाटक की चान्छ रचे हैं इस किस नाटक की कीका करें।

भटो।--प्राचनाय ! रहुनाय वी सक्तल चरित्र धानन्द के खान धीर अक्त जनीं के अन को सखदान है पश्नु मुझे तो जनवानन्दिनों के विवाह की कवा चित्र विश्व कारतो है चौर हट विश्वास है कि इन समासद कीगी के इदय को भी चति सुख दायक दोगी।

भूत । - (प्रति प्रमन्न को नर) पाण विये ! वाद ! तुम ने बहुत प्रच्छी बात कड़ी रहनाथ के विवाह के चरित्र मेरे भी मन की चिति भावते हैं। इस स्तिये इस कीम याज जायी वामी कविवर वीयुत पण्डित यीतका प्रमाद वियाठी भी की सेखनी से निर्मत जानको मंगना नाम नाटक की सीमा इस समा में करेंगे।

(नेपच्य में की नाइन)

नटी।-प्राचनाथ ? यह क्या को साहल होता है। स्त्र । - प्यारी ! में ने ध्यान नहीं दिया।

(फिर नेपण में की नाइन)

मूब । - हां ? समका त्रो चवधेय सहाराजाधिराज के राजजुमार राम चीर सञ्जाण जनक सहाराज का धतुर्यन्न देखने की शिविका नगर में पाये हैं इस समय विश्वामित मुनि से चात्रा लेकर पुष्प वाटिका में पूज जैने की कात हैं हर एक गंजी चौर छड़कों में कोग उनकी चहुत सुन्दरता देखने को प्रवह इव हैं वहीं का को नायल होरहा है।

जटो।—पाणनाय । चिनिये इस सीम भी उन राजकुमारी का दर्भन कर सद्य सुपान नरें।

सञ्च । —प्राचय्हारी सीघ चन्नी ।

(दोनों नेपच्य में जाते हैं) इति प्रस्तावना।

बङ्ग पहिला।

(स्थळी बाटिका मध्य में सरोबर और उस के तट पर गिरिजा का मंदिर माली बाग सुधारते और गाते हैं)

शोत—याजु जानको केर विवाद् । याये दर्श सकल गर नाडू ॥ साच्यो घर घर परम उकाद् । कव मिलि भूप दुघारे जाडू ॥ दोदेश दमें बहुत कहु कादू । दिख्या भर रच्छा खाडू ॥

(राम और लक्ष्मण का प्रवेश)

राम।—गद्माण ! देखी यह कैसी सुन्दर वाटिका है इसमें कैसे मनी दरहण करी हुए हैं इन पर चातक को किसा चकी र इखादि पन्नी कैसी भी ठीर की किया की तरहे हैं चौर देखी इस के मध्य में यह सरीवर कैसा रमणीय है इसमें अपने रक्ष के कमस खिन रहे हैं चौर इंस सारस इखादि कल के पन्नी काली कर रहे हैं हाली पर ठीर ठीर भी रें कैसे मधुर खर से गूंज रहे हैं। काली कर रहे हैं हाली पर ठीर ठीर भी रें कैसे मधुर खर से गूंज रहे हैं। काली कर रहे हैं हाली पर ठीर ठीर भी रें कैसे मधुर खर से गूंज रहे हैं। काली कर रहे हैं हाली पर ठीर ठीर भी रें किस मधुर खर से गूंज रहे हैं। काली किसा ! स्था है। भैया ! इस ने सुना है कि इस समय जनक राज-काली रस बाग में जिरिका पूजिंग भावेगी इस किसी पूज जल्दी है। ती इसी किसी तो सच्छा।

राम। - भक्का पविषे रन माजियों से पूक भी। सक्तम । - क्यों भी हम कीग रस बाग में से जुक पूज से में ? माजी। - राजजुमार ? यह वाडिका चाय ही की है बाहिये जितना पूज पत्त जीनिये।

(दोनों भाई फूछ तोड़ते हैं गाती हुई सिखयों समेत सीता का प्रवेश)

गीत—। जय जय जम जमनि देवि घर नर सुनि यसर सेवि अतिस्ति।
दायिन भय दर्शन का जिला १ सङ्ग्य सुद विधि सदिन पर्व सर्वेशे वदिन
ताप तिसिर तदन तहिन किरन सांकिका २ वसे धर्म कर जपान सूल सेल
धनुष बान घरिन दलनि दायन दश रन का किका ३ पूत्रना पित्राच मेत
याकिन डांकिन समेत भूत यह वैताल खल स्गाकि जा किका ४ जय महिस
भासिन घनेक इप नासिनि प्रसद्धा को का सिनि दिस भैन वा किका ५
मुन्दर बर सुभ खेंगा सांगति सब लुंघरि जोग दिह है प्रसद्ध पादि प्रयात
पाविका ॥ ६ ॥

(सौता सरोवर में मार्जन कर के गिरिजा के मिन्दर में जाकर पूजन करती हैं प्रेमसखी बाग देखने जाती है और राग लक्ष्मण की देख कर अति आनन्द से भरी हुई जानकी के पास लौट आती है)

चत्रमधी।—ऐ सथी। तू इतनी समन क्यों देख पड़ती है। ब्रोमसखी।—हें बाकी! दो राजकंपर इस बागमें घाये हैं मैं उनकी मुन्दरता बा वर्णन कहां तक कहां अब से मैं ने देखा तन मन की सुध भूज गई. है उन की प्रथ्या किथोर सब भाति से संदर चीर सोहाबने हैं।

चौ - स्थाम गौर किसि कही वखानी। गिरा चनयन नयन विनु वानी॥
कविस — जुनव कुमार मुकुमार महा मारक तें चाई चेरि चाकी जिन्हें
गोधा विसुवन को। चथर कताई हम देखे विन चावै जिन जीती है
लगाई घौ कोनाई पदमन की॥ फून पुनवाई में चुनत दोड भाई प्रेम
सिख निख्याई गहें बतिका हुमन की। चवत घोडायं मीर निद्रा हराय हाय गडि किन जाय पास पांखुरी मुमन की॥ १॥

(सब सखी जानकी की ओर देख कर मुसकाती हैं)

रहस्य पानी।—है पानी। में जानती हूं कि ये वैदे राजनुमार हैं जो मुनि के साथ कल्द हमारे नगर में पाये हैं। धौर जिन्हों ने सारे नगर में पायने क्य की मोहनी डान दी है घौर सक्त नर नारियों की वस कर निया है। धानी ? पान कल्द हर नगह दन की संदरता की घूम है। धौर जहां तथां सब जीग उन्हों को छिब का वर्षन करते हैं पाने हम सब उन्हों देख पाने वे देखने योग्य हैं।

चतुरसकी।—(किन्त) एरी सकी रामक्ष्य देखिने की चाइती ही बूकी ती बुक्षाय काडू जुनती स्थानों सी। मिथिना शहर बीच कहर पद्यों है भई धायने घनेरी कहूं मूठ ना सनानी सी॥ नैसी परी प्यानी नारी गयकन पटारिन पंती खेनयन बान भारे भींड धनु तानों सी। धति मंजु मंद इसी कांसी गर डारि डारि की की कतनाम केती जुन्म क्रापानी सी।

(सीता अलग्त प्रसन्न होकर उसी प्रिय सखी को आगे करके चछती हैं और आगे बढ़ के सचिकत हो इधर उधर देखती हैं)

राम—(बाभूषण का शब्द मुनकर) कदाए। मुनी यह कैना भध्र सध्र शब्द मुनाई देता है मानो कामदेव डंका बजाता चना घाता है। भीर धारे जगत की जीता चाहता है। (यह कह कर उस ओर देखते हैं और एकाएक जानकी के मुखारविंद पर दाष्ट्र पडती है एक टक देखें कर)

(स्वगत) वाह। यह वैसा रूप है मानो ब्रह्मा ने दर्ग मगट कर के पपनी सारो सतुशई जगत को दिखाई है। यह बाला मुन्दरता को भी मुन्दर कर रही है भीर कवि के गटह में दोप शिखा सी दर रही है।

(प्रकाश) है सात। यह वही जनकनंदनी है जिस के जिये अनुर्येश्व होता है। मिल्यों को संग से भीरों का पूजन करने चाई है। इस पुष्प बाटिका को प्रकाश करतो फिरती है इस को अपूर्व शोभा को देख मेरे स्वामाविक पुनीत मन को भी चोभ होता है इस का कारण विधाता जाने मेरे दाहिने चंग फरकरी हैं। सस्त्रण! खुबंशियों का यह सहस हो सभाव है कि उन में से कोई भी कभी कुपंथ पर पांच नहीं रखता। सुभी भपने मन का परम विखास है जिस ने सपने में भी पर स्त्रों की चोर नहीं देखा। सस्त्रण! जो संश्राम में शबु को पीठ नहीं दिखाते चीर पर स्त्रों की चोर मन चीर दृष्टि को नहीं स्रगते जिन के द्वार से मंगन फीरा नहीं पाते ऐसे हत्तम पुक्ष मंसार में बहुत थोड़े होते हैं।

चन्त्रम्।—भैया यथार्थ है।

(सीता इधर उधर देखती हैं। प्रेमसखी लता के ओट में रामचन्द्र की देखाती है। राम को देख कर आनन्द से मण्न होकर नेल की मूर्द केती हैं। दीनों भाई लता के ओट से निकल आते हैं।)

एक मखी।—(इंस कर) चाकी गीरी का ध्यान पिर की जिथी इस समय राजकुमार को चांच भर देखें को।

धीता।-(स्कुच कर पांचें कोच देतों हैं)

(खगत) डाय! यड कोसल सृतिः भीर पिता का वड कठोर प्रण्) (सब सखी इंस्ती हैं)

्रमामको — यानी पाल पनकर देवी का गूजन करी कज्र पिर रसी समय।

सोता।—(तुन कर शक्तित हो के प्रकताती हुई चलती हैं सीर गिरिका के समुख जाकर प्रणास कर के दाय जोड़ के स्तुति करती हैं) ची॰—व्य कय क्य गिरिराजिक होरी। जय सहस सुख दंद चकीरी।

आय गज़बदन खड़ानन माता । जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥
लिंदं तब चादि मध्य चवड़ाना । चिमत म भाव वेद निंद जाना ॥
भव भत विभव पराभव कारिनि । विद्य विमोद्दिन स्तवन विद्यारिनि ॥
दोड़ा—पति देवता सुतीय सद्दे मातु प्रथम तब रेंच ।
सिहमा चिमत न किंद्र सक्ति । वद्दायिनि विद्यारी पियारी ॥
देवि पूजि पद कमल तुनारे । दरदायिनि विद्यारी पियारी ॥
देवि पूजि पद कमल तुनारे । दर नर सुनि नव चोचि सुखारे ॥
(यौरी के कंठ से माला गिरती है सीता प्रणाम करके माला उठा कर
गले में पहिन केती हैं।)

भौरी।—हनो जानकी । मेरा चायीबाँद सच है तुन्हारे मन की कामना पूर्व चौगी नारद का बचन कभी मिया नहीं चीता तुम को बच बर मिक्कीगा जिस पर तुन्हारा मन कगा है।

कन्द-सन वाहि राची मिविति सी वर महत्व सन्दर सांवरी । करवानियान सवान श्रीस सनेड जानत रावरी । (जानकी यह सुनकर प्रसन्न होकर सखियों के साथ वार्ये अंग का फरकना देखती हुई एक ओर से और राम कश्मण दूसरे ओर से जाते हैं)

> (जवनिका गिरती है) गयम चड्ड समास।

चन्न दूसरा। कनोर।

(राजसभा, राजाओं का सिंहासन, मध्य में सब सिंहासनों से उत्तम और ऊंचा एक सिंहासन, धनुष, रानियों का महळ, राजा जनक सतानन्द बन्दीजन) धनका — (छतानन्द जी से) धुनेश्वित जी ! सदाराज दशरथ के राजधुमार राम श्रीर लखाण विद्यासित सुनि के साथ दमारे नगर में धनुषयञ्च देखने को भागे हैं । चैत्रस्य बाग में देश किया है। याप जा कर दन की यद्मशाचा में से थु। हो ।

बतानन्द।--मदाराज ! जेवी बाजा !

(नेपच्य में जाते है) याजा जाता है।

(प्रथम राजा का प्रवेश।)

बन्दी !-- (प्रामे बढ़ के राजा की ची पाता है)

(जनक से) सदाराकाधिराज । यह सगध देश के राजा पताप सुद्ध हैं । इन का यह चीर प्रताप पृथ्वी संख्या में छाय रहा है इन के भय से सन् जोग रात दिन घर घर कांपते हैं।

(इसरे राजा का प्रवेश)

बन्दो। — सहाराज ! यह छळाँ न की राजा हैं ज़ब इन की सवारी गिकनाती है तो छोड़ों के टाप की घूर बढ़े बड़े राजाओं के सुकुट के सणि की चमक को किया देती है।

(तीमरे राजा का प्रवेग)

कन्दी। — महाराज ! यह कम्मोर के राजा है सब विद्याची में निष्ठण भीर सर्वदा पंडितों का सत्कार करते हैं इन्होंने कक्ष्मों की चञ्चलमा के दुर्धण को दूर कर दिया है क्योंकि कक्ष्मों कभी इनका परिन्छांग नहीं धरतों। यह कैने चार्थकी की दात है कि कक्ष्मों चीर मरस्तिते दोनों एक हो पुरुष के चार्थों में ही।

(चौथे राजाका प्रवेश।)

वन्दी। — सकाराज ! यक एकिन नाम सथुरा के राजा है यक वयन टीनी ज़र के टीपक हैं भीर इन के जरोर की कान्ति निजी को एके चन्द को माई मुखदाई भीर शत्रुभी की सीख तटतु के कूटी ती नोई हुसार है।

(पाचवें राजा का प्रवेश।)

बन्दो :-- सहाराज ! यह हिमांगद नाम राजा है सहावकी चौर वह प्रतावी हैं महेन्द्र पर्वत चौर समुद्र इन दोनों पर इन क्या चिकार है।

(कठेराजा का प्रवेश।)

मन्दी !-- महाराजाधिराज ! यह नागपूर के राजा है गर्जे में मीतियों का हाइ पिंडरे हुए ऐसे मोभायमान हैं कि जैसे तारों में चन्द्रमा को मोभा होती है। सहाराज ! जब संका पित रावण इन्द्र जीक के विजय को जाने सगा तब इस की यह भय हुंचा कि यह राजा कहीं हमारे पेडि संबा पर चढ़ाई न करे इस निये वह इन से सिका कर के सब गंथा।

(सातवं राजा का प्रदेश।)

बन्दी । — सहाराज यह पंजाब देश के राजा है दन का यथ दार्श में लिखानी क

भोर पातान इन तोनी स्थानी में फैन रहा है इन ने राज्य में ऐसा प्रवस्थ है कि शव विशासिनो वाटिका में विदार कर के घर को फिरती हैं थोर जो धालस्य से यहीं सार्गं की में निद्रा भा जाती है तो बायु को भी सामर्थ्य नहीं कि उनके बस्त को सार्थ कर भने भीर सनुष्य की तो क्या गतो है।

(चाउवें राजा का प्रवंश)

बंदो - मद्दाराज । यह नैयाल देश के राजा हैं इन की मृंदरता पर अखरा सीम सोहित होती हैं इनके यहां ऐमें कोचे भीर सतवार दायी हैं कि जिन के भागे ऐरावत भी कुछ नहीं।

(नववें राजा का प्रवेश)

बंदो। — सहारात्र ! यह गुनरात देश के राजा हैं यह प्रजा का ऐसे पाजन करते हैं जैसे विता पृत्र का पालन करे दूनके यंश के पागे घन्ट्रमा मिनन भोर प्रताप के शार्ग सूर्य ठंडा सालूम होता है।

(दशवं राजा का मवेग)

संदो :— सदाराज । यद संगदेश के राजा हैं दनके ऐकार्य को देखकर शत्रु भो चळित होता है कड़े गुणो कड़े, प्रतापो, बड़े मृशीच हैं चसा के ती मसूद हैं शत्रु पर भी चसा करना दन्हीं का काम है।

(नेपण में को नाइना रावण का प्रवेश।)

(जनक और सब राजा घवड़ा कर उठ खड़े होते हैं, जनक अचिम्मत और भयानुर होकर देखते हैं, रावण सिर उठा के क्रोध से उन की ओर देखता है, वह आंख नीची कर लेते हैं रावण धनुप की ओर बढ़ता है)

बन्दो ।— महाराज! महाराज! यह वह लंकायति रावण हैं जिनके भुज वल को जैलाय पर्वत जानता है घोर जिनने चपने मस्तर्जी को अपने हाथ में काट कार कून के बदले महादेव को घढ़ाये हैं, इन के पराक्षम को देवता लोग भको गांति जानते हैं, इन के हृदय में इन का पराक्षम यून मिमान पान तवा चुमता है, महाराज! इन की काती की कहाई को दिकाल जानते हैं, जब यह उनमें जा कर सिड़ने हैं घोर घपनी काती में उन के दातों में टक्कर मानते हैं तब उन के दांत मूनी को नाई पह में उमाह जाते हैं इन के चलने के समय पृथ्वी ऐसे उनमाम खरती हैं जैसे हाथी के चनने से कोटो होंगी। (रावण धनुव के पास जा कर देखता है और फिर नीचा सिर किये आ कर बैठ जाता है)

(वाणास्य का प्रवेश।)

बन्दी : — ग्रहाराज ! यह बिन के पुत्र भीर श्रीणितपुर के राजा बाणा सुर है', तिनों को जीत मन देवताओं की वम कर भएने नगर के चारों भीर जन को चुभान चोड़ी खाई भीर घर्कि पदन के कीट के बनाय निर्भय राज करते हैं तिभुवन में इन का मामना करने वाचा कोई नहीं है।

रावण।—(बन्दो के लुग्रड। (फिरनाणासुर में, तुम क्या काचे घो)

(बाणासुर इस धनुष को तोड़ जानकी को बिवाह ले जाऊंगा बड़ घगंड से धनुष के पास जाकर उसे देख कर सिर नीचा कर के पीछे हट आता है) बाणासुर।—संकेश। इस तुस से कुछ कड़ा चाइते हैं।

(दोनी नेपच्य में जाते हैं)

राम लक्ष्मण और बिस्वामिल का प्रवेश ।

जनका — (उठकर मुनिका चरण छूकर रंगणाचा दिखाते इए धनुष के पान नी जा कर)

मुनिरान ! मृनिये किसो समय विषुरारि विषुरासुरको मारि मिथिना
पुर पश्चारि यह धनुष यहां घर गये पहले यह धनुष दमारे मिन्दा से दूर
रहा भीर में नित्य रस की पूजा करने को जाता था पक्ष दिन जुमारी
मेरे शय गई छोर जब में पूजा कर के चना थाया तो उस के मन में यह
जात घार कि मेरे पिता को यहां भाने में बड़ा श्रम होता है भी धनुष
उठा कर मेरे पास से भाई भीर पूछा कि जहां भाजा हो वहां रख दूं
भाष दशी महन में इस धनुष की पूजा कर किया करें, हे मुनिराज उस
दिन में मैंने यह प्रतिश्वा की है कि जो कोई दस धनुष की तोड़ेगा में
जाभारी का विवाद उसी से कर्फ गा दसी कारण में देश देश के नरिश दसं
रंगभूमि में भाज दक्षे हुए हैं। भाष कीग इस भासन पर विराजें।

(राम कक्ष्मण विश्वामित्र बैठते हैं आकाश से पुष्पवृष्टि होती है) जनका—(बन्दी से) संजीरक ! जाशी सीता की खें थाशी। अन्दी — महाराज ! जैसी बाजा।

बन्दो।-(नेपच भ जाता है)

(लिखकों समेत हाथ में जयमार्ल लिये जानकी का प्रवेश)

सिख्यी का गीत।

अध्यान ज्ञानको जनज कर कई है। युगन मुगंगन सगुन की वनाय अज्ञु भानक भदन माजो जाप निरमई है।

(बाकाय में दुन्दुभी वजती है बीर पुष्प की हृष्टि कीती है।)

(सव राजा जानकी की घोर चन्नवना कर देखते हैं)

(सीता नेव छठा कर इधर छघर देखती है)

(रामचन्द्र को देख कर मुस्करा कर सिर नीचा कर सेती है) (अनक बन्दों को निवाट बना कर धीरे से)

(शक्तोरवा! इसारी प्रतिद्वादन राजा कोगी की मुनादो)

बन्दो।—सहाराज ! जैसी भाचा (हाय हठा कर)

है गक्क सहियान ! इस बात की ध्यान दे बार पुनी ! यह प्रिय की कर धनुष राजाधी के सुजबकक्षी चंद्र का प्रमन वाला राष्ट्र है धीर मन कोई जानते हैं कि यह जैसा भारी धीर कोंग्रा कठोर है। रावच बाणामुर ऐसे भारी भट भी इसे देख कर गर्थे में चन दिवे इस किये हमारे सदा-राज जनक को यह प्रतिद्धा है कि जो कोई इस राजसभा में घाल इस धनुषकी तोहेगा विभुवनके विजय समेत कन्या उसकी निक्स दें कि सिलेगी। (आठ राजा बारी बारी से उठ कर कमर बाध कर अपने इष्टदेवता को प्रणाम कर के धनुष के पास जाते हैं और तमिक के उठाने लगते हैं जब नहीं उठता तब अपने जासन पर फिर आते हैं। इस के पश्चाद कई राजा एक ही बार उठाने लगते हैं और जब नहीं उठता तो लजा के अपने आसन पर आ कर मस्तक नीचा कर के बैठ जाते हैं।

जनका — (राजाओं को देख क्रोधं कर को) समाशे प्रतिका की सन कर ऐसा कीन सा देश है कि जिस का राजा भाज यहां नहीं भाषा। भीर कहां तक कहें। देवता भीर देखा भी मनुष्य का इस सरके जाते। वहें वहें भीर भीर रणधीर इस रंगभूमि में विश्वासमान हैं। कुंचरि सनीहर भीर बड़ी विश्वय भीर कीरति कति कमनीय इन तोनों भहत पदायों का पावने वासा दह पुरुष होता को धनुष तोहता सो इस से योग्य पुरुष माना की है विश्वाता ने रचा नहीं। दह बड़े जाम में कीम किस की नहीं है।
भना तोड़ना तो बिनारे रहा, कोई एकी से तिक भर हटा भी न सका
तो यब जोई न बीज डठे कि मैं बाको हूं तोड़ने को। इसने निश्चय किया
कि यब एकी पर कोई बीर न रह गया। इस किसे चाप कीम धामा की
परित्वाम कर के धपने धपने चर नाइये वहा की कियेगा हहा। ने नानकी
का विश्वाह ही नहीं कि खा है। यदि धपनी पतिश्वा कोड़ दूं तो धर्म जाता
है। बंधरि कुपारी रहेगी इन को मैं क्या करूं। यदि मैं नानता कि एकी
पर कोई वीर नहीं है तो ऐसी प्रतिश्वा कर के धपनी हंसी न कराता।

भक्ताण।—(छठ वार क्रोध से) किस संभा में एक भी रष्ठां सी होगा वहां ऐवी चनुचित वानी जैसी जनका ने सभी रष्ठां का मणि में सामने का सी है कोई नहीं का हैगा। (रामचन्द्र में प्राय जोड़ कार) है भानु कुस का मण दिवाबर ? मुनिये में समंह नहीं करता चपना स्वभाव जहता प्रं यदि चापकी घा छा। पानी सारे ब्रह्मांड की गेंद के सामान छठाकर का छे छे को तरह फोर हालूं। चीर मृमर पर्वत को मूनी की तरह तोड़ हालूं। है सामो ? याप का प्रताप घीर महिमा से इस विचारे पुराने धनुष की ख्या मुगुता है नाय ! यह जान के घाप चाछा दे दें भीर में जो की तक का साम का को है हो या से से को के तक का चारे हा है नाथ हो को तक को है को नाई इस धनुष को चढ़ा जूं चीर चार सी कोस तक दोड़ता चना जाजां। है नाथ कते की डंटो को नाई इस धनुष को चाप के प्रताप ने तोड़ हालूं चीर को यह ने कई ती है सामो साम के चरण काम को सपताप ने तोड़ हालूं चीर को यह ने कई ती है सामो साम के चरण काम को सपताप ने तोड़ हालूं चीर को यह ने कई ती है सामो साम के चरण काम को सपताप ने तोड़ हालूं चीर को नेव का चारा हा जनका।—(मिर नोचा कर कैते हैं) (रामचन्द्र लक्ष्मण को नेव का चारा हा समान का स्वारा

विकासिन जो।—(रामचन्द्र में) रहनाय! वैटा उठी शिव के धनुष की तोड़ कर राजा जनवं का दुःख दर करी।

कर के पास बैठा सेते हैं)

(रामचन्द्र उठ के गुरू के चरण कमल को प्रणाम करके मञ्चपर खड़े होते हैं पुष्प की वृष्टि और जय जय कार शब्द होता है। फिरें गुरू के चरण को प्रणाम करके मंद्र मंद्र चलते हैं और धनुष के पास जाकर खडे होते हैं)

मुनयना।—(यखियों की बुनानर) है यानी ! देखी भी छीन इमारे हिनू याचारी हैं सी भी सब तमाशा देख रहे हैं। शाय! यह बात राजा से सप्तभा कर कोई नहीं कहता कि से बानक है थीर इन के साथ ऐसा इठ करना ग्रच्छा नहीं। जिस को रावण भीर वाणामुर ने भी दाथ में नहीं कुथा भीर मारे राजा गर्ब कर करके हारे वह धनुष इस राजकुमार को देते हैं। भन्ना इंस के बच्चे कहीं मन्दरावन को उठाते हैं। भानी। भाजन जाने राजा को सारी चतुराई बहां गई ब्रह्मा को गति जानी नहीं जाती।

एक मखी।—महारानी! तेजवंत को कोटा न समझना चाहिये। कहां धामस्य सुनि धीर कहां धपार समुद्र धगस्य न समुद्र को छोखा यह बात सारे मंद्रार में प्रसिद्ध है। मूर्य का मण्डल देखने में कैमा कोटा जान पड़ता है पान्तु उस के उदय होते विभुवन का घन्यकार दूर हो जाता है। महारानी मंच कैसे कोटे होते हैं परंतु बच्चा विष्णु महेग हत्यादि बड़े बड़े देवता उनके घाधीन रहते हैं। कोटा भी घंकुम बड़े मतवारे गजराज को घपने वस में रखता है। कामदेव के हाथ में धनुव चीर वाण मूल के हैं परन्तु उस ने सारे जगत को वस कर किया है। हे महारानी घाष संग्रव को घपने मन से दूर कर दें रामचन्द्र इस धनुव को नि:संदेह तोड़ेंगे।

छोता।—(रामचन्द्र को घोर देख कर करणा के)

(स्वगत) है सहिय! है भवानी! प्रमुख हो कर चाल अपनी सेवा का फूल दीलिये क्या पर क्षणाकर के इस अनुष की गव्याई को दूर कीलिये। है गण नायक बरदायक! तुन्हारी सेवा मैंने चाल हो के किये की धी में बार बार किन्ती करती हूं इस धनुग को गव्याई दूर हो लाय। (बार बार रामचन्द्र की चीर दे कर) डाय! पिता न यह कैसा दावण हठ ठाना है जाभ चौर हानि का जुक भी विचार नहीं है। कोई मंत्री मारे हर के समसा कर नहीं कहता हाय विद्वानों की सभा में यह बड़ा चनुचित होता है। कहां वज ऐसा धनुष कहां कमन ऐसे कोमन ज्याम कियोर। है विधाता में कैसे धीरल धक्र भन्ता सिरम के फूल भी कहीं हीरे को वेधते हैं। जो कदावित् तन मन कचन से मेरो प्रीति ज्याम मुन्दर के चरण कमन में सची होगी तो घट घट के चन्त्यांगी सगवान हम को रहनाथ की दासी बनावेंगे।

चोपाई— नाकार नापर मत्त्र मने हूं। सिनें मी ताहिन कह मंदेहू॥
कवित्त — मी सन में निहची यजनी यह तातह तें पन मेरो महा है।
मंदर प्यारी सुनान शिरोसणि मी मन में रिम राम रहा है।
रोत पतित्रत राखि चुकी मुख भाषि चुकी भणनी दुन्नहा है।
चाप निगोड़ी भवे जरिजान चढ़ी तो कहा न चढ़ी तो नहा है।

कत्त्वाता । — (एक पैर टेक के) हे दशों दिशा के दिगान । हे कमठ ! हे सेष हे गूकर ! तुम धोरत धर्क पृथवी को चत्त्वों तरह मंभानी रही जिस में हिन्दी न पावै। शोगमचन्द्र शङ्कर का धनुष तोड़ा चाहते हैं तुम कोग हमारी पाल्ला में मावधान हो लाखो।

> (रामचन्द्र चारों ओर देखते हैं और धनुष उठा छेते हैं चढ़ाके तोड़ डाळते हैं बड़ा शब्द होता है)

> > (वयजय मचता है)

पुष्प की वृष्टि होती है चौर बाजा बजता है

सतानन्द।—(मोता में) राज किसीरी ! राज कं पर को जयमान पहरासी। (सीता जयमाल लेकर संखियों के साथ रामचन्द्र के पास जाकर खड़ी होती है)

मिखयों को गीत

मन में मच्च मनोरय होरो। मो हर गौरि प्रमाद एकते की गिक क्षपा चौगुनी भीरो॥ पन परिताप चाप दिन्ता निधि मीच मकोच तिमिर नहिं थोरो। रिवञ्चल रवि धवलोकि सभा भर हितचित .व।रिज बन विवासीरो॥ कंपर कंपरि दोड मंगल मूर्गत न्य दोड धर्म धुरम्बर धोरो। राजममाज भ्रि भागो जिन कोचन काहु कह्यो दकठोरो॥ व्याह उद्घाह राममीता की मुक्तत सकल विरंचि रचीरो। घर घर सुद मंगल मिथिका पुर चिरजीवो यह भंदर जोरो।

(जानकी जयमाल पहराती है)

मखियों की गीत।

लेह रो कोचनिन को नाहु। कुंबर मुन्दर मांवरी मिल मुमुखि मादर चाहु॥ अण्डि हरकोदण्ड ठाटो जान कस्थितवाहु॥ दिचर हर जयमान राजित देति पृष्ट भव काहु। चितै चित हित सहित नखसिख भंग भंग निवाहु॥ मुक्तत निज बिय राम रूप विरिच्च-मित्हिं सराहु। सुदित सन बर बदम सीभा छदित प्रधिक छकाइ॥ मनइ दूर कमङ्कारि प्रसि भमर मूंभी राष्ट्र। नयन सुखमा प्रयन दरत प्ररोज सुन्दर ताष्ट्र॥ यसह दहिं कवि सदा उर पुर जामकी को नाइ॥

> (मोता मिलाओं समेत निषय में जाती हैं) (रामचन्द्र विकासिन के पान जाते हैं) दूनरा चड़ समाप्त ।

तीमरा चङ्का

स्थनी पहरी की

(नेपध्य में कोलाहरू)

(परश्रास्य का प्रवेश)

(अब बाजा खड़े कोते हैं)

एक राजा।— प्रकाराजा ! भैं चसुका देश का राजा हूं चाप के चरण काम क की प्रणास कारता हूं।

द्वरा राजा। -- नदाराज में चसुक देश का राजा हूं।

(इस प्रकार से प्रव उठ उठ कर जान जाम से प्रचास कराते हैं)

(जनक प्राय प्रणास कर के सीता की वीकाय प्रणास कराते हैं)

परग्रुराम। - पुत्रो तेरा कल्याण हो।

(सीता प्रविधों भमेत नेपच्य में जाती हैं) (विध्वानित्र राम सच्चन्य स्त्री चरण पर निरात हैं)

परग्रराम । - राजकुमार मुखी रही। (जनक की घीर देख के क्रोध से)

श्राज क्यों रतनो भीड़ है ?

जनन — (दाय जोड़ बार) सदाराज ? इस ने प्रतिचा की यो कि जी कोई जिब काधनुष लोड़ेगा।

परश्राम !— (चारों चोर देखते हैं धतुब टूटा देख कर कोध में) चरे जड़ जनक यह धतुप किस ने तोड़ा है। चरे मूद इस को जन्दी दिखान ही नो जहां तक देश एक है उतनो पृथ्वी चाल उन्नट होगा।

(जनक थरथर काँपते हैं और सिर नीचा किये खडे रहते हैं।) धन राजा:—(दूसरे राजा से) क्यीं की धमुख का तीड़ना ती सहज छा टमरा राजा। - चंद जानकी विदाह से जांग भी जाने। तीम राजा। - यह कड़के तो जुक भी नहीं हैं जी कान भी होता तो दस उस के एक बार साधना करते।

मुनयना ।- (खगत) द्वाय । विश्वाता ने सब बनी बनाई विगाही । रामचंद्र।-(परम्याम से) हे स्वामी । शिव ने धनुष का तोडने वाना कोई थाय का टास दी शीमा। क्या थाला देसी कहिती।

परग्रराम। - (क्रीय से) दास उस को कहते हैं जो दान का काम कर भीर जो ग्रम को करनी कर उस की कड़ना चाडिये। हे राम ! बुनी, जिम ने शिव के धनुष की तीड़ा है वह सहस्रवाह के समान मेरा बैरी है। वह दस समाज में उठ कर किनारे खडा हो नहीं तो जितने गाजा है यह के सब मारे जायंगे।

कद्मण।-(सस्करा कर) हे गीमाई इसने बहकपन में ऐसी बहुत धनुदी लोडी परत्त याप ने ऐसा क्लोध कभी नहीं किया इस बनुष पर याप की दतनी ममता का कारण क्या है।

धायाम। - (क्रीध से तडप के) और राजिक्यीर काल के वस इसा है मंभाज के नहीं बोजता यह वियुशारि का धतुष जो छारे मंचार में विदित है धन्ही के समान है रे!

बद्भण:-(इंस कर) इमारे जान में तो महाराज। सब धन्य बरावर है इस पुराने धनुष के तोड़नेसे समारो क्या शानि और क्या साम है। रहनाय ने तो नये के अन में इमें देखा। श्रीर यह उनके कते ही ट्र गया। हे सूनि राव इसमी राष्ट्रपति का भी कुछ दोष नहीं है। आप क्यों व्यर्थ क्रींस करते हैं। परग्रदास । - (परसा की घोर देख कर) घरे सर्ख । तने की खान की नहीं भूना है मैं तुमी बानक जान के नहीं सारता है। भरे जह त सभा की केवन सनि जानता है यदापि में बानवद्माचारी हूं तो भी यह बात जगत में विदित है कि में जी के का का दोशी भीर परम की घी हैं मैंने अपने सूजों के वज से कई बार रजायों को सार मार प्रवी बाधानी की देती। ए राजा के छोकरे। मेरे फरसे भी देख शैंने इसी में सहस्रवाह के सज को काटा था। ए राजा को बाडकी। त यपने साता पिता को शोक वस वहीं बारता है भरे इस फारसे ने अभी के बानकी की भी नहीं कीडा है।

कंद्राच।-(इंग कर) प्रही सन्ता गर मानी सुनीय ! तुम सुनी गारवार

करना दिखाते हो। तुस कूं क कर पषाड़ उड़ाया चाहते हो यहां नीई कोछड़ा नी बातया नहीं है जि छंगनी दिखाने से सुरक्ता कायगा। हे सुनीय सैंने तुन्हारा फरसा धीर धनुष कान देख कर कुछ सिस्सान को कातें कहीं भव तुन्हारे सून ने अनिक से जाना कि तुम छगु सृनि ने वंग में हो। घव चाहै भी तानी में कोध को रोक कर सभी कुछ सहूंगा। सुनी सुनिराय हमारे वंश्व में देवता बाह्मण साधु भीर भी इन पर कूरताई नहीं होतो तुम को सारने से पाप धीर तुम से हारने में भपकीर्ति है इस किये तुम चाई हम को मारो भी पर इस तुन्हारे धैर हो पहेंगे तुन्हारा तो बचन हो कोटि बच्च के समान है धनुष बाय भीर फरमा तो व्यर्थ भारण करते हो सैंने इन चिन्हों को देख कर को कुछ धनुचित कहा हो सो खमा की जिये थाप धीर भीर महा सुनि हो।

यश्मुशाम !— (लीध में) विकासिल ! मुनी, यह बालक सितमन्द है यह कुटिन काल के नम हुया है। यह सपने बंध भर का नाम करेगा। यह मूर्यवंश कृषी चंद्रमा में कलक उत्पन्न भया है। इस को निर पर कीई नहीं है यह जहा मूर्य भीर प्रत्यन्त निर्भय जान पहना है। यह जय भर में काल का कलीवा होगा। में पुकार के कहता हूं। वीहि कोई मुस्ते दोम न दे। तुम बचाया चाहो तो हमारो प्रताप यक और क्रीध मुनाकर इसे मना करो। क्रम्मण !— हे मुनि! चाप के रहने चाप का सुधम दूमहा कीन वर्णन कर सक्ता है चाप ने भवनो करनी कई बार कई तरह से चपने ही मंह से बरनी। की इतने पर भी चाप की मन्तीय न हो तो फिर कुछ क्यों नहीं वाहते। तिम को रोक के चाप की मन्तीय न हो तो फिर कुछ क्यों नहीं वाहते। तिम को रोक के चाप की है ते चाप मोभा नहीं पाते। बीर कोश समर में जी काम करते हैं वह चपने मुंद से चाप नहीं कहते फिरते। या अभी स्वा में पा कर कादर कोग हींग माते हैं। चाप तो मानों काल को हांक लावे हैं चीर वार बार हमारे वास्ते पुकार पुकार के बुलाई हैं।

.(परशुराम परसा को उठा कर एक पैर आगे बढ़ा के)

चव क्षमको कोग दोच न दें यह कटुवादो बाक्षक वध के योग्य है। सड़का जान के मैंने इसे चव तक कोड़ा था चब यह सबसुच मन्ने पर भया है। कच्निण — हे सगुवर तुम क्या बारबार सुमी फरशा दिखाते को हे सुपद्रोही से केवब साध्यय जान कर तुम्हें कीड़ता हूं कभी किसी मुभट से रणभूमि में सामना मधी पड़ा बाद्यण और देवता बर भी के बढ़े हुए हैं।

कनका ।—शककुमार । ऐसा न चाहिये। सभा के सीग।—शंशंयक वात प्रनुचित है

रामचन्द्र।—(सुधवरा कर अद्याच की चाय के इसार से मना करते हैं।

वह सिर नीचा कर के वीके हट जाते हैं (परग्रताम से हाथ जीड़कर) हैं जाय। बाज पर क्रवा की जिये सभी तो इसके दूध के दांत भी नहीं दूटे हैं। साव को इसवर क्रीध करना सनुचित है। साव यह तो विचार करें कि जी यह कुछ भी चावके प्रभावको जानता तो क्या यह सन्नान सावकी बरावरी करता। को सड़के खेल में कुछ सनुचित करते हैं तो गृह माता विता उन पर क्रीध नहीं करते परन्तु प्रमन्न होते हैं। सावती मुशीक धोर भीर न्नानो सुनि हैं। साव इसकी बाजक सीर सवना सेवक समक्त के इसवर दया करें।

(परश्रताम) (पीकि पैर इटा कर फरसा नीचा कर खेते हैं।

। बद्धवा-(इं चीर क्या) (यह कह के मुख्तराते हैं)।

प्रश्राम।—(भंभाना कर) राम! तेरा भाई बड़ा पायी है देवने में ती गोरा प्रन्तु भीतर से काजा है। श्रीर इस को भीम से इकाइल विश्वय बरसता है। यह स्त्राभाविक कुटिन और तेर योग्य भाई नहीं है यह नोच इस को अपने काल के समान नहीं देखता।

सद्धाय !— (मुस्तरा के) है सुनि ! कीध नहीं करना चाहिये कीध याय का सून है। इस से बड़े बड़े पाप होते हैं। चच्छे र मध्नन मा क्रीय के बय में हो कर पनुचित काम कर के सार संगार की घवना द्रोड़ी नानते हैं। है सुनिराय ! में तो घाप का सेवज हूं धव कीय छोड़ के गरे छायर दया की निये । यह दूरा हुचा धनुष कोध करने से जुड़ेगा भी नहीं। चाप बहुत देर से खड़े हैं पांद दुखत होंगे क्रवा को निये बैठ नाइये। चीर जो यह धनुष चाप की बड़ा प्यारा है तो उपाय को निये कोई बड़ा कारिगर बुकाकर बनवाइये।

अनक :- राजजुनार चुप रिश्ये यह बात भच्छो नहीं है। परश्राम !- (राम के) तेरा कोटा भाई जान के मैं रमे कोड़ता हूं यह मन का मैका भीर तन का सुन्दर है। जैसे कीन के घड़ी में विष भरा होय। (सद्माध मुस्तरात है) (राम चन्द्र भी चट्टा कर सद्माध की सोर देखते हैं) (वह गुरु के पास घड़ी जाते हैं) चः अराम ।—राम ! मेरा कोच कैसे जाय देख तेरा भाई घभी तक मेरी चौर येसे देखता है सानी में कुछ पदार्थ हो नहीं हूं जो इस के गले में कुठार न दिया तो मेंने कीय कर के क्या किया। इस कुठार के चौर मव्द से रानियां के गर्भ गिर जाते थे। चौर यहां फराना मेरे हाथ में हो चौर में ध्वान वेरो भूव कियोर को जीता देखूं। हाय । हाय हाय ती चलता नदों भीर मारे कोच के हाती जलो जातो है इस में मानून होता है कि चाज इस ज्याती कुठार की घार जातो रही। विधाता के बाम होने से मेरा ख्वान भी बदल गया नहीं तो मेरे हृदय में कब किसी पर क्या होते दानी वाल में से मेरा ख्वान भी बदल गया नहीं तो मेरे हृदय में कब किसी पर क्या

बाद्मण।—(इंस के छिर नीचा कर लेते हैं।) (स्त्रात) दाह ! क्या वात है इत्या को तो पाप मूर्ति हैं बचन को बोलते हैं सो ग्रानो फूल आड़ते हैं। को स्त्रपा से मुनि को देह जलतो है तो स्रोध से ब्रह्मा हन के तन को रचा करें।

प्रशास । — घरे जनक ! देख यह बालक हट कर के जमपुरों को जाया चाहता है। जल्दों दसको हमारी चांछों की घोटमें की नहीं से जाता। यह नृप बालक देखने में कोटा घर बड़ा कोटा है।

भ सम्म — (इंस कर) (स्वयत) आव की अपनी कांच मूंद की अबे कहीं कोई नहीं दी ख पड़ेगा :

परश्राम :— (राम से क्रोध कर के) क्यों रे शठ! शिव का धनुष्ठ तोड़ के इम की बातें बना के समभाता है। तेरा भाई तेरी सनाइ से टेट्रो टेट्री बातें बोजता है और विष्डमनाता है और तूडन से हाथ कोड़ के विनती करता है। यर संपास में इमारा सन्तोष कर नहीं तो साथ से राम जहना छोड़ दे। र ! शिवद्रोहो सुनता है कि नहीं दक्त होड़ कर इस से युद्र कर नहीं तो साई समेत तुक्त को सभी मार डामता हूं।

(परग्रराम) फरना उठाते हैं।

राम।—(नस्त को कर) (स्वगत) हं अख्याय ने तो कुछ न चल स्वा स्व वह कोध हमारे जगर निकाला चाकते हैं। हाय! हथाई भी कहीं कहीं दुखदाई कोतो है टेढ़ा जान के सक कियो को भय कीता है टेढ़े चल्ड्मा को राहु भी नहीं प्रपता।

(प्रकाम) हे सुनीय ! रिश की छोड दी जिये जाए के दाय से कठारहै थीं। यह मेरा सिर थाए के यारी है। खासी ! सक्त की घएना दास जान के जिस में रिस जाय सी कीजिये सेवल थीर खामी। से युद्ध कैसा। है विषयर। जीव की परित्याम को जिये। याप का चनो भेय देख के बाजक ने क्षक कड़ा उस का भी दोष नहीं है। क्षठार धनुष धीर बाच छाय में देख के हमारे भाई ने घाय की बीर समस्ता। धीर इस से उस की कुछ क्रीध मा गया। माप का नाम जानता था पन्तु माप की परचानता न या मना था पर देखान था। जुन के खनाव से उन ने चाप की दातीं का उत्तर दिया है खाती। भी चाव मनि की नार्द कार्त तो वह चाय के चरण कामन की धर अपने निर्देष नगाता। धनजान की चका चमा कोजिये। ब्राह्मण के प्रशं सरीशे क्षाण कोनी चाहिये। हे नाथ। एस बाप को बराबरी कैसे कर सकते हैं। कहां भिर चौर लडां पैर केवल दास यह कीटा मा नाम इसाग है और उम्म में धन्छ नगने में चाप का नाम बढ़ा है महाराज हमारे पाम तो एक गुल का धनव है और चाप के कवड़ में ती परम प्रनीत नव गृण है हम शिधे हम तो मब तरह में चाय से हारे हैं है विम । चाप क्रपा करके हमारे चपराध को चमा को क्रिये।

परश्राम।—(क्रींघ मे) तें भो घण्ने भाई को तरह कुटिल है। त्यों रे ? हम को निषट ब्राह्मण ही समझता है। तू मुन में जैवा ब्राह्मण हूं। त्या धनुष युवा या धीर मेरे बाच चाइति ये नेरा कोण मक्स चिन या। श्रीर चतुरिक्षनी भेना ईंधन थी और बड़े बड़े राजा चाकर पश्च हुए में ने हमी फरमें से बाट काट के उन की वज दे दिया। धीर इस प्रकार ये संसार में कड़ोरी समर कपी यहा किये। तू ने मेरा यह ब्रमाव न मुना था। महीं तो सेवस झाइमच के भरोसे इत्ना टेंटें न करता। क्या

एक प्रमुप के तोड़ने से ऐसा घमंड को गया तुंसमभता है कि कम ने सारे अगत को जोत जिया।

सामचन्द्र ।— (हाथ जोड़ के) हे सुनिगय! विचार के बोलो। घाय का कीध बहुत बड़ा है घीर हमारो चूक बहुत थोड़ो है। हमारे छूने की तो यह पुराना धनुष टूट गया हम घमंह किस बात का करेंगे। मेका मुनिये तो की कम लाहमण लान के आप का निरादर करते हैं तो फिर संघार में ऐसा कीन मुगट होगा निससे हर कर सिर सुकावेंगे। घीर मुनिये ऋषिन्या ? देवता हो या दैत्य राजा हो या एका चाह हमारे बराबर हो या हम से बनवान परन्तु को कोई नहाई में हम को कनकारेगा हम भवम कर का सामना करेंगे वह काल क्यों न हो। चलो घरीर धारन कर के को लहाई में हरा वह घपन कुछ का कर्ल है हम घयन कुछ को काल को भी नहीं हरते। घोर को घाय यह पूर्व कि हम से क्यों हतना हवी हो। तो हस का कारण यह है कि विवर्षण को यहो प्रमुता है कि छो पाप से हरे वह फिर कि से से वह कर कर है।

परग्राम ।—(में नक को चौर पीक्षे घट कर) है राम । यह नारायण का धनुष है। इस को को जिये चौर चाप इस को चढ़ा का खीचिये तो इसारे मन का सन्दे ह काता रहे।

(परशुराम धनुष देते हैं वह आप चट जाता है)

परग्रराम। - (पति गतद की कर बाध जीड़ कर)

जय रहवंश वनव वन भानू। गडन दन्त वन दहन हासानू ॥ जय मुर विष चेनु हिराकारो । जय मद मोह कोह स्तम हारी ॥ विनय सीश कारगामुनसागर । जयित वचन रचना जाति नागर ॥ केवल सखद सुभग सब वंगा । जय सरीर कृति कोटि धनंगा ॥ करों कहा 'मुख एक मणंत्रा । जय सहस् मन मानस हंसा ॥ धनुवित बहुत कहें ड चन्नाता । इसह महा मंदिर दोड म्याता ॥ (भणास कर के निष्य में जाते हैं)

(राजा कोग भी घोरे घोरे ने पच्च में जाते हैं) (बाजा वजता है कून बरस्त हैं) (सब नेपच्च में चर्चे जाते हैं) (परदा गिरता है) दृति जानकी महत्त्व मुमाम।

ऋणी होने के दुःख।

(स्पेक्टेटर मे)

दान यह है कि में एक जेल्खान के पाम को कोदी रहते ही जाता था कि यकायक मेरे कान में एक ऐसा ग्रन्ट पाया जैम कोई भीख मांगता हो। दर्शों के पास पर्चन पर केंद्री ने मेरर नाम की बार पुणारा चीर काचा कि मुक्ती कुछ दान देते जाय। मुक्त की उसे देख कर बड़ा चाव्य हवा भीर उन को प्रधिना के चनुसार ऐक क्या है कर चनता प्रथा। राष्ट्र में में बाई लोगों की चित्रवृत्ति पर विचार करने लगा कि वक्ष इर इान में नीचता चीर निर्कळाता क्यों कर वरत मकते हैं। जिस सनुष्य ने सभा से भी भी खा मांगी बी एस की अवस्था इन नमय पनाम वन्म की शीगी भीर जब उस की भवस्या पश्चीन वर की थी तब में उसे भणी भांति जानता था। उस कान में उस के एक सम्बन्धी के सर कार्न से एक बड़ी सम्पत्ति उस के हाथ क्यों थी जिस के पात उप ने सब बातों में यह धम अचाई चीर इतना धन लुटाया कि नाक में दम कर दो । अब देखिये इक्रत नहीं में चर रहते थे, बात बात में जह पड़ते थे, भाठी कुमरे कीश पर रहतीं थीं, प्रपत्ने बड़ों का मन मर्खाद चीर विचार उठा दिया या, चीर कोटी का नाक में दस कार रक्खा था। इन्हीं वार्ती को जो मेरी चांचों को देखी की की बकार मेरे मन में विचार छत्यन हुचा कि यह वही नीचता है जो होनों इ।सत में चपना रंग दिखाती है भीर यह वही कोटी चित्तवृत्ति है की मन्यवता का स में भीशी से चिमान के माय वर्लतो थी चीर चव भिष्मंगों में निर्वे जाता है काम जेती है।

इस दान को देख कर में चपने जो में पक तो करणी होने की दया टूमरे इस दान पर विचार करने जना कि किस खमाद को मनुष्य इस प्रकार की भून करते हैं भीर ऋणो होने से उन को क्या क्या चापत्तियां सहनी पड़ती हैं। घपने विषय में तो में यह कहता हूं कि मुझे चिनमानके माथ चवाचवा कर ऐसी बातचीन करनी कि जिससे चौरों की हिए में इस बहुत जुक मालूम ही सटा से बुरी कमती है चौरदसी कारण में मुझे बहुत व्यय करने को चाव-म्याकता नहीं पड़ती। इसके सिवा मुझे कोवन इतने हीं काम करने पड़ते है कि एक विखास योग मनुष्य को जो मेरी सम्पत्ति का प्रवन्ध करता है जैसारिक जिन्हों की जिस समय तहसील डीकर बावें रमीद दे द' बीर जिल्ला कपड़ा भेरी धीवन थी कर लावे छल्टें गिन कर अपना बीध कर लां। इस में भी ससी कुछ बड़ा यचड़ा करना गरीं यहता की कि मेरा कारम्टा स्मीट तैयार कर को मेरे पाल नाता है और में केवन हस्साखर कर देता है बीर कपड़ी की बिये कमान, कुर्त, दक्तान मोले क्यादि की एक मुची क्यी क्वी है जिस में इर एक कपड़ेकि गिनतो सर देवा है बीर अब यह धोकर वाते हैं शिकान जार लिता है। चतः जब मेरा निज बा काम जेवन इतना ठहरा तो में चपने सारे चवकाश को समय को उमरों की मजधज यौर व्यय रखादि देखने में बिताता के । में जिया दृष्टि हानता है पर मनुष्य की यपनी धुन में बावका पाता है परमा को भीत धन की खोज में भारे फिरते हैं इन को देख बार दतना बाद्य नहीं दीता जितना उन नोगी पर जो ऋण सैन के निये कमर करे प्रस्तत रहते हैं। यह बात चमकात है कि जी मतुष्य ऋष सेता ही यह यह न जानता भी कि जिम समय वह वितित्ता में काठा हुआ। उसी समय से परगदाता की करण के पश्चिमण अनुमार उस मनुष्य की प्रतिष्ठा, खतंबता कीर धन पर खका प्राप्त की गया। प्रकार में तो ऐका प्रतीन कीता है कि मानी वह दश बात की जानता की नकीं कि पर्णटाता उस के विवय में कठीर से कठीर बात प्रधान "तुम प्रथमी हो" निकाल प्रकता है और उस का हाथ प्रकड़ सकता है ती भी उस के लिये प्रतिज्ञा भंग या बनात्वार करने सा दीय खिर न हीं की सकता । परना कीई र लीगा का चित्र ऐहा भाष कीता है कि यदापि पन बातों का अध उन को दिन रात सताए रहता है फिर भी वह इन की प्रधान कारण की बढाये जाते हैं। यब बताइये कि इस ने बरी कीन भी पवस्या सनुष्य को दोगो कि जहां उनने एवा सनुष्य की टेवा इर की माने विषरे पर प्रवाद उड़ने सगी, बजा से चांखें नीची कर की बीर मंड दिया कर घर में का घुसा, न कि भी मनुष्य यधिक ऋगप्रदत होता है उस की ती यह दथा बीधीं मनुष्यों के माथ दिखनाई देती है। रस खान पर हमरा यह नात्पर्य नहीं है कि सब कीय की ऋषी की जाते हैं वह पापनी व्यय व्यर्थ या पश्चिमान के जारण धोते हैं बल्कि कोई र पच्छे भीग भी पवने किसी काम के विगड जाने या उनरे शन्य की लगानत करने या दशी प्रकार के इयरे कारणी ये इस चावित तें फंस जाते हैं परन्त यह बात किसी श्रवस्ती चौर दशायों में यह बात वार्ड जाती है इस जिये साधारण शेति पर

उस के विषय जुक नहीं कहा जा मकता। जहां उस मनुष्य इस मांति पर क्रियों हो जाता है वहां दम मनुष्य ऐसे दृष्टि चाते हैं जो कोगों के दिखाने के बिसे धनिकों का सा धूमधाम करने के कारण करणो वनते हैं चौर करणदाता का नाम सुन कर हर समय इस्ते हैं। सब पूक्षिये तो करणो करणदाता का स्पराधी है चौर यह सर्वारी पदाधिकारों भौर चनुषर जिन का कोग दतना रोव चौर हर मानते हैं इसी किये हैं कि करणदाता का देन करणों से जिस भाति हो दिसवाएं। यह बात समाल की भनाई से सम्बन्ध रखती है कि दम विषय में जो कुछ न्याय का छहेग्य हो वह पूरे तौर पर काम में काया जाय चतः ऐसी चवस्था में करणों की खतंत्रता करणदाता के हाथ में है जैसे विषक का जीवन उस के बादगाह के बम में इहती है।

कनरपी घाट लड़ाई।

THE U SELECT

श्रीयुत जाजकि रिवत भीर मान्यवर भी • ए • यियर्भन साहिब वहादुर संग्रहित।

देश्हा—राम नारायन भूप तें, कहीं मुखालिफ जाय ।
हाकिम को मिथिलेश ने, दीन्हों अदल इठाम ॥
सीर करों तिरहृति को, ता के रची उपाय ।
फौजदार महथा भय, सङ्ग सलावित राय ॥
बखत सिड्घ कुल इद्धरन, रोड़ मछ दिल पूर ।
चौमान भान भान सुकुल, एक एक तें मूर ॥
याही सभ तैनाथ करिं, फौजे पांच हजार ।
दिगसुल सन्मुख जोगिनी, महिथा उतरे पार ॥ १॥

कंद भुजंगप्रयात।

चले फीज नाजिम को बाजत नगारे । सभे खुल गए तोपखाने सकारे ॥ घटा गज के ऊपर सी गाजत निशानें । जजायिल धमका लसें चन्द्रवानें ॥ अही धर मही कोल दिक्पाल कर्षें । उंडे गई अम्बर भरे सूर झम्पें ॥ दमामा नफीरी ओ कर्नाल बोलें । बड़े दलदले रे सभे दीप डोलें ॥ खड़ेंतें खड़े खूब खामिन के आगें । बड़े रहन तें जह के जोर पागें ॥

बड़े मोद के खुल गए द्वार आवें। जो पनखर लिए शेख सेश्वद समारे ॥ को आगें छड़ीबीन के दक बिराजें। बरच्छा के छाहें किए रह साजें।। चलो जी शिताबी लगी दूर जाना। लदे साथ छकर में केते खजाना।। यड़ी दाप तें कूचे दर कूच आवें। कहीं सान को नाहि मधवान पानें॥ समें सो पीटि बान्हि कम्मर जड़ावा। पुछे सह में दूर केते भड़ावा॥२॥ दोहा— खबरदार ने खबरि करि, जिप सें कहाड बुझाय। पांच हजार सवार है, महथा पहुंचे आया।।

पांच हजार सवार है, महथा पहुंचे आया ॥

विपति बोलाए ज्योतस्वी, कीजै कोटि विचार ।

इहां तो कड़नां है नहीं, बड़ी यळान के पार ॥

भूप ममूरित सक्त किर, बाहिर बैठे आय ।

कीजै फीज तयार तू, कही नकीच बोलाय ॥ ३॥

कि की कि किंद नागच ।

कहाी नकीव धाय धाय फील बीच जाय के तयार हो बहाद्रो सभे मिलाइ लाय के तयार होन की लगे जमातिदार गंजाई देसी दिसा अनोर सोर घोर बम्ब बर्जाई कहूं कमान बान सान भांति भांति देखिए निदान मो मैदान वांच भीम से बिसेखिए चले महा बकी तथार होय भीन भीन सें तुग्झ छेड छाड में तुके न पीन गीन तें ॥ ४॥ दोहा-सारियात दे सभीन को. करि के बिबिध बिकास । चलै सिपाइ महा बला. मिथिका पति के पाम ॥ भुपाल तें, अर्ज कियो -है द्वारपार जाय द्वाकवन्द तैयार हाजिर पहुंचे आय ॥ एक एक कार मोजरा, सब को लीग्ह सलाम । हाल महा कवि बैठि गी, तहां तहां सुख धाम ॥ विखन बैठे विपति को, बाव और दिमान । उत्तर ओझा बैठि गी, साथ छिए मतिमान ॥ पश्चिम सकल सिपाइ गन. बक्सी

पीछे बनाए देखिए, खास रीने दिवस हाजिर रहे, रतन रतन सो जान मोतसदी तिलका करे, तोफा बान बैठे सभ के बीच मों. महाराज सोभा बरनो जात नाह, ज्यों तारन मों चन्द्र ॥ ५ ॥

धन्द भुजन्न प्रयात।

सुपण्डित कहूं पच्छ रच्छा संभारे । कहूं चारु बैदिक पढ़े बेद सारें ! कहूँ ज्योतखी सी बड़ी नेक साधें। कहूँ आगमी यन्त्र के मन्त्र लाधें॥ कबीश्वर लगें सी कंडाखा बनावें । कहुं मांट बैठे कबिलों मुनावें । कहूं सर्व जाने कहें सर्व जाने । कहूं कीय साहित्य हूं की बखाने ॥ कहं मोलना से करें बैत बातें। कहं मोनसी पारसी नक रातें। कहूं बल्लभी सो दही द्वार लार्बे । लिए गागरी नागरी स्कू लार्बे ॥६॥ दोहा-राज सभा रजपूत गन, बरनत हैं काबि लाल ।

बैठे निपं चडभोर सें, लिए ढाल तलबाल

े छंद विभंगी।

राउत रजपूर्ते समैं सपूर्त लाख पूरहृते सबल और । सुर बैस बुनेला बीर चनेला लसे बघेला खडग धरें ॥ चीमान विसेना सन्बर सेना रायठीर दल बीर भरें हाडा कछवाहा काय सिलाहा हा हा कारे के ज़िक परें दब्बे अरिदम्मा जाति निक्म्भा श्री गन्हवरिआ सुर भला 1 सेंगर परिवाहा हैहरबाहा हैहयबन्सी भीम भला n गौतम बिजहरिआ औ सरवरिआ रघुबन्सी नरनाह कला गौडा बछगोती सजस समोती गडवार निज साजि इला सिरमोरक, कन्दा कौसिक चन्दा बडगैंओं करचोडलिआ जो सगरबार सरदार सिपांही गोंड अमेठी चौचरिका 11 तोगर गहनीता गुजर समेता रानाबन्सी सिधीटिजा मोनस विजहरिका जिप नमपुरिका इट महरीटी सतीटिका 11 ८ 11

क्रन्द पढाकुनमा।

करम्बार प्रमार कटेला वटहरिका सुरनेक सिपाही

तई लाल महा कवि जान महा छवि और गन सिर में असि बाही ॥ दोहां - तुझ तुरझम तरल गति, प्रवल जङ्ग में जोर । के छै आवत खोलि कें, गहें बाग की डोर ॥ १०॥

क्न सुनद्धमयात i

तुरकी अरब्बी इराकी सुकच्छी। दरायी खन्हारी जिते मीन छच्छी। चलै तेज ताजी मुजनस पिटानी । करें चारु बाजी कहां ही बखानी ॥ भहो चार कम्बोज अम्बू बनाई । मनो थार पारा धरै चजलाई ॥ तुरका सरका करीं मीन रङ्गा। पिलक्वा सर्वे सो महा नील रङ्गा॥ जरहा मुसकी समुन्दा छबीला । हराबीज सबजाओ लीला औ तीला ॥ सुरक्खाऽवलक्खा मनो वायु सक्खा । स उचैस्तवा को दले दर्प देखा ॥ साडे पञ्च कल्यान कल्यान कारी । कपोतच्छवी ज्यों चितेरे समारी ॥ इजारें हज़ारें लगें होग तार । चुनी से जड़ी जीन पंडा समारें ॥ १॥ दोहा-सुमें सिपाह सलाम कारे, चढ़्यों तुरङ्गम खास !

किलाह् तें मिसि लगी, कमला जी के पास ॥ छेमक्रुरनि निहारि नम, भी विकासित मुख चन्द्र । लम्बोदर बिप्नेस काहि, बहराए नरइन्द्र ॥ गच्छ पुच्छ के तिलक करि, पैन्ह. कसुम के मान । के प्रनाम विशेस कें, बहराने भूपाल ॥ १२॥

सुर पुर के राजा सङ्गीह भाजा मेरु समाजा जाय परें तहां करत बड़ाइ दुर्गी माई केहु बचाई अधिक दरें ॥ को गनित महीसा रङ्काधीसा लावें सीसा सुनि उहरें। धूछी के दर्प दिनकर झर्प मेदिन कम्पें को ठहरें ॥ वीजापुर बङ्का और सुरङ्गा जित निप सङ्का जोग भरें। हुगली कलकत्ता त्रिपतिन सत्ता तेजाह कत्ता किरात किरैं दिन्छन नर नाहा तेजि सिलाहा भेजाहि बाहा को ठहरें ढका के रानी फिरहि देवानी ओ मकमानी न्निप हहरें ॥ डिल्ली सगबग्गी कासी भग्गी बोतिआ टग्गी को ठहरें । दोनन सभ के गाति उरत सकल आते मैथिक मूपति को बहरें ॥

[101]

दोहा—ाकेलाहूं तें कूच करि, कर मैं गहो कमान । महाराज डेस दियो; हरिना के मैदान ॥ १४॥

छन्द नराच।

बड़ी बड़ी बनात की कनात जाहि सड़ी ।
तहां तहा जमाहिरे जड़ाउ ठाठ तें जटी ॥
छो छो हजार हेम- तार कोर सो भरे ।
कहूं कहू वितान आसमान स्थो रहे खरे ॥
कहूं अनेक रूप की बिचिन्न पाठकी पड़ी ।
कहूं हजार के सिछाही और ठाठकी घड़ी ॥
कहूं तुरङ्ग और मतङ्ग सों घरें हजारहीं ।
कहूं कमान और बेस बान बेसुमारही ॥
कहूं कमन दुन्दुभी श्रिदङ्ग रङ्ग के ।
कहूं सिपाह तुङ्गदार जेतबार जङ्ग के ॥ १९ ॥
दीहा—उरद् नृप मिथिलेस को, बरनत हैं किब ठाठ ।
अमर नगर तें चीगुनों, ठागत अधिक विठास ॥

सन्द भुजङ्ग प्रयात।

पुहाड़ा गड़े ओ वने चार हहा । हजारी बेपारी चलै बान्हि टेरा ॥ घनेरे जहां जाचि के जाचि आवें । नयी अङ्गना सो बनी गीत गावें ॥ कहूं कन्द चीनी बिकै नीन गहा । कि जाके चले तें सुधा होत खहा ॥ कहूं तें बतासा बने ओ मिठाई । कहूं आनि मेवा धरे हैं बनाई ॥ कहूं मीसरी ओ जिबेबी पके हैं । करें मोल जोलें बहुतो खड़े हैं ॥ कहूं सकरें औ विकै गृड चकी । कहूं तें सोहारी धरी घीउ पकी ॥ जबाड़ा सरीही कहूं तेग बिकैं । कहूं तों होरे मोहरे देत सिकैं ॥ कहूं तोसखाने लगी भीर भारी । तुरझे बिकै लच्छ कच्छी खन्हारी ॥ कहूं मत्त मातङ्ग जंचे घनेरा । कहूं चित्र लेखत खड़े हैं चितेरा ॥ कहूं दाख लखें कहूं हैं छोहाड़ा । कहूं होज में बेस छूटत फोहाड़ा ॥ कहूं बादला साल बांफी दोसाला । कहूं लाक मोती बिकै कण्ठ माला ॥ कहूं बापदा थान खासा पोसाकी । कहूं नाहि जाने कोउ मोल जाकी ॥

[869]

दोहा—रामपटी तें क्चकरि, पड़ी अचानक जाय । तव डङ्का भ्वति मुन्यो, नाजिम पहुंचे भाम ॥ १८॥ कन्द भुनक प्रधात ।

दोऊ और फीजें भथीं हैं तयारी । तहां बीचदरम्यान दरिआओं भारी ॥ चले बान कम्मान गोला हजारे । समें एक हो के गिरे जो सितारे ॥ छड़ीबान छूटे गजब के घड़ी सी । छकी आसमानो लगी फुलझड़ी सी ॥ पहुंच के बहेलिएं ने गोली से मारी । हटी जांय पीछे लटी फीज सारी ॥ जो घाइल पड़ै सो चढ़नु जाय खाटें । कहूं कोड आओ न सके नाहि बार्ट रेश।

दोहा— बकसी से भूपित कहीं , चिंद देखों मैदान ।

रही सभ होसिआर सें , किर हैं दगा निदान ॥

आफर खां की साथ किर, दूने हाला राप ।

डड्का दे बकसी चलें , चढ़े खेत पर जाय ॥

महंथा पेच खेलाय के , कांहु देखायों बाट ।

चढ़ी सवारी पार है , गङ्गदुआर के घाट ॥

धाबा किर के आए गी, बिष्णु पूर है टील ।

हलकारे जिप सें कहाँ , भयी मोहन्बिल गोल ॥

आए दोड महा बली , मित्रजीत उमराओं ।

भूपित को परनाम किर , दियाँ रिकेबनि पांओं ॥ २०॥

कृत्द भुजकु प्रयात।

चलें बैस मग्वेल बलबीत हाड़ा । लिए हाथ के बीच तेगा जहावा ॥
वने सूर के सूर हाड़ा बिराजा । चहु ओर से दुन्दुमी जोर बाजों ॥
चले बान कम्मान गोला हजारें । बहादुर दोऊ बाग को नाहि फेरें ॥
कदम दर कदम तें पड़ी फीज जाई । महा अष्टमी को लगी है लड़ाई ॥
दमामा नफीरी पने सङ्घ बाजों । अनोरे पड़ी राम चङ्गे अवाजों ॥
उठाई सलावित ने घोड़े के बागों । अग सिड्घ उमराओ आड़े हो आगों ॥
वहादुर कोऊ कहे कहां स्था बड़ाई । पड़ी कर्न पारथ के ऐसी लड़ाई ।
निकाल खाप तें खूब तेगा चला है । महा घनण्डा दामिनी जो भयी है ॥
जखम खाय पीछे भए हैं नचारा । पढ़िंडा की सलावित को चीचे देमारा ॥
चूले धाय की देखि आगे भिखारी । पहुंच तो सको नाहि होदे को मारी ॥

छगी आनि गोली गिरे बीर बङ्का । भरी सी पुरन्दर पुरी जाय सङ्का ॥ चहुओर जाको छकी कीर्ति बाई । लिऐ फूल माला परी पास आई ॥ बड़ी बीर साथी इजारें इजारें । सभै छाडि घोडा भयो हैं उतारें ॥२१॥

क्रव गाराचा

पडे उठाय धाय धाय एक एक सें लई मना गजेन्द्र सो गजेन्द्र जङ्ग जोर को धरें ॥ महीप मित्रजीत राओ बखत सिङ्घ को धरी चला चली चपेट चोट लोट पोट है गिर्रे सनासनी घनाघनी सुनी न जात तीर के पड़े जो ज़ुन रङ्ग रङ्ग जङ्ग जो अमार के जमातिदार और चोट को करें निरन्तरा पडे कमान बान सें मही अकास अन्तरा सुन्यो बिपच्छ पच्छ लच्छ भीरता तबै गयी घडा घडी हजार बार तोप की जबै भयी उठे अनोर घोर सोर हाल की चटा चटा जहां तहां चह दिसा किपान की खटा खटी भका भका हला नहीं कहीं जो बीर कोप सैं बदा बदी गिर्रे जो मुण्ड कोटि २ धोप तैं कर्टें कवन्ध भूमि चूमि घोर भाइरी भी हहा गिराय के हजाल केंद्र काहु को करें समुण्ड कञ्ज रक्त पानि ओ सेमार केस के नदी वही बहां तहां मैदान मीथिलेस के भयो फतेह बैरि जाल को निदान भोगिनी गयी अघाए खाय खाय गण्ड मुण्ड जोगिनी असेख मुण्ड माळ जाल कालिका के आउती कराल भूत साथ भूतनाथ को पेन्हाउती सबे फिरै मैदान छाडि फीबदार मागि गौ अयो फतेह भूप को सुकार्ति वस्त्र वालि गौ ॥ २१॥

[404]

दोहा रन फतेह भी भूप को, फीजदार गी भागि । चीगुन है तिस्हात को, कीर्ति उठी है जागि ॥ छाड़्यो हाकिम जानि कै, फक्त भिखारी एक । राखि कियों जगदम्ब ने, महाराज के टेक ॥ २३॥ इन्द भूजकु प्रयात ।

जो पीछे लगे हैं समें राओ राने । लुटे तोसखाने नगारे निसाने ॥
कहूं पालकी लालकी कोटि हीरा । लुटे तोसदानें भरें खास बीरा ॥
ओ तम्बू कनातें लुटे ऊंट गाड़ी । लुटे हैं कहु केहू काहू पिछाड़ी ।
बरच्छी धमाका लुटे सीमि नेजा । गथे हैं कहूं केहू काहू करेजा ॥
कहूं बाजि हाथी लुटे बैस धाई । महाराज जू को फिरी हैं दोहाई ॥
दोहा—लूटि कूटि लीट्यो समान, लिधुर लपेटे अङ्ग ।
लाल सुकान एह भांति भी, समर भिखारी भङ्ग ॥ १९॥

कवित्त रामायण।

नुजसीदास क्षत ।

वासव बरुन विधि बनते सोहानो दसानन को कानन बसंत को सिंगार सो .

समय पुराने पात परत उरते बात पालत लालत राति मार को बिहार सो .

देखे वर वापिका तहाग बाग को बनाव रागवस भो बिरागी पवन कुमार सो .

सीय की दसा बिलोकि बिटप असोकतर तुलसी बिलोक्यों सो तिलोक सोक सोर सो . १

माली मेवमाल बनपाल बिकराल भट नीके सम काल सींचैं सुधासार नीर को .

मेचनाद ते दुलारों प्रान ते पियारों बाग आति अनुराग जिय जातुधान धीर को .

वुलसी सो जानि सीय को दरस पाइ पैठो बाटिका बजाय बल रघुबीर को .

विद्यामान देखत दसानन को कानन सो तहसनहस कियो साहसी समीर को . १

वसन वटोरि बोरि बोरि तेल तमीचर खोरि खोरि धाइ बाइ बांधत लगूर हैं .

तैसो कपि कीतुकी उरात टीलो गात कैके लात के अवात सहै जी में कहे कूर है .

बाल किलकारी के के तारी दे हैं गारी देस पाले लगे बाजत निसान ढोल तूर हैं .

बालधी बढ़न लगि ठौर ठौर दीन्ही आगि विंध की दवारि कैथी कोटि शत सूर है . २

लाइ लाइ आगि भागे बाल जात जहां तहां लघु है निबुक्ति गिरि मेर ते विसा ल भो.

कीतुकी कपीस कृदि कनक कँगुरा चढ्यो रावन भवन चाढि ठाढो खिह काल भो. तुळसी विराज्यो ब्योम बाळधी पसारि भारी देखे हहरात भट काल सों कराक भो. तेज को निधान मानों कोटिक कुशान भान नख विकराक मख तैसी रिस काल भी. ध बाकधी विसाक विकराक ज्वाक जाक मानी कंक ठीलिवे को काक रसना पसारी है. कैथीं ब्योम वीधिका भरे हैं भूरि धुमकेतु वीर रस बीर तरवारि सी उधारी है. तुष्ठसी सुरेस चाप कैथीं दामिनी कलाप कैथीं चली मेरु ते कुसानु सरि भारी है. . देखें जातुधान जातुधानी अक्कानी कहैं कानन उजारे अब नगर प्रजारी है. ५ जहां तहां बुवक विकोकि बुबकारी देत जात निकेत धाओ धाओ कागि आगि रे. कहाँ तात मात आत भागनी भागनी भागी दोटा छोटे छोहरा अभागे भारे भागि रे. हाथी छोरो घोरा छोरो महिष वषम छोरो छेरी छोरी सोबै सी जगावी जागि जागि रे. तुळसी विकोकि अकुकानी जातुधानी कहै बारबार कहा पिय कपि से न लागि रे.इ देखि ज्वाक जाक दाहाकार दसकंघ सुनि कह्यो धरो धरो धाम बीर बलवान हैं. किये सक सैक पास परिच प्रचण्ड दण्ड भाजन सनीर धीर घरे धनुवान हैं. मुकसी समिध सीन कंक जज्ञ कुण्ड कखि बातुधान पूंगी फळ जब तिक धान हैं. श्रवा सो कँगूल वल मूल प्रतिकृत हाबे स्वाहा महा हांकि हांकि हुने हनुमान हैं. ७ गाज्यो कपि गाज उपों विराज्यो ज्वाला जालजुत भाज्यो बीर धीर अकुलाइ उठ्यो रावनी. धावो धावो धरो सनिधायो जातुधान धारि वारि धारा उलचै जलद जीन सावनो. क्यट अपट अहराने हहराने बात भहराने भट परे प्रवल दक्ति दक्ते के पेलि सचिव चले के डेलि नाथ न चकैगो बल अनल भयावनो. ८ बड़ो विकराल बेख देखि सनि सिंह नाद उठे मेघनाद सविखाद कहै रावनो. बेग जीतो मारुत प्रताप मारतण्ड कोटि काकऊ करालता बडाई जीतो बावनो. तकसी सयाने जातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसी दूत सो ती साहेब अब आवनो. काहे की कुसल रोखे राम वामदेव हू की विखम वली सो बादि वैर को बढ़ावनो. पानी पानी पानी सब रानी अकुळानी कहें जाति है परानी गति जानी गज चाछि है. बसन बिसारे मिन भूषन सँभारत न आनन सुखाने कहें क्यों हू कोड पालि है. तुकसी मदोवें मीजि हाथ धुनि माथ कहै काहू कान कियो न में कह्यों केती कालि है. बापुरी विभीषन पुकारि बारदार कहो। वानर वड़ी बकाय घने घर घाकि है. १० कानन उजान्यो तौ उजान्यो न विगान्यो कछ वानर विचारो वांधि आनो हिठ हार सों. निपट निडर देखि काह न कख्यो बिसेखि दीन्हों न छुडाइ काहि कुछ के कुठार सों.

छाटे भी बढ़रे मेरे पुतऊ अनेरे सब सांपनि सो खेळें मेर्ड गरे छुरा बार सों. लुलसी मदीवे रोइ रोइ के विगोये आषु बारबार कहा। में पुकारि दादी नार सों. ११ रानी अक्रलांत्री सब डाटत परानी जाहि सर्वें न बिलोकि बेख केसरीक्मार को. आँजि भीजि हाथ धुनि माध दसमाथ तिय तुलसी तिलोन भयो बाहिर अगार को. सब असवाव डाटो में न कादो तें न काहो निय की परी सँभारें सहन भेंडार को. खीश्चति मदोवै सविखाद देखि मेघनाद वयोलनियत सव याही दाढी जार को. १२ रावन की रानी विरुक्तानी कहै जातधानी हाहा कोड कहै बीसबांह दसमाथ सों. काहे मेघनाद काहे काहरे महोदर तू धीरल न देत छाइ लेत क्यों न हाथ सों. काहे अतिकाय काहे काहरे अकंपन अभागे तिय लागे भोंडे भागे बात साथ सों. नर्जसी बढाय बाद सालते बिसाल बाहै याही बल बालिसों बिरोध रघुनाथ सों. १६ हाट बाट कोट ओट अहिन अगार पीरि खोरि खोरि दीरि दीरि दीनही.अति आगि है. आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काह व्याकुल जहां सो तहां लोग चले भागि है. बालधी फिरावे बारबार झहरावें झरे वृंदिया सी लंक पांघलाइ पाग पागि है. मलसी बिलोकि अकुलानी जानुधानी कहैं चिल हु के किए सो निसाचरन लागि है. १ ४ लागि लागि सागि भागि चले जहां तहां शीय को न माय वाप पत न संभारहीं. छुटे बार बसन उघारे धूम धुंध अंध कहैं बारे बृढे बारि वारि बारबारही. हय हिहिनात भागे जात घहरात गज भारी भीर ढेकि पेलि रीदि खींदि डारही. नाम के चिलात विलालत अकलात जाते तात तात तीसियत झीसियत झारहीं. १ ९ छपट कराल ज्वाल जालमाल दुई दिसि धुम अकुलाने पहिचाने कौन काहिरे. पानी को ठलात बिललात और गात जात परे पाइ माल जात आत तु निवाहिरे. प्रिया तु पराहि नाथ नाथ तु पराहि बाप वाप तु पराहि पुत पुत तु पराहिरे. तलसी बिलोबि लोक ब्याबल विद्वाल कहें लोह दससीस अब बीस चख चाहिरे. ११ बीधिका बजार प्रति अटन अगार प्रति पँवरि पगार प्रति बानर बिलोकिये. अई उई वानर बिदिसि दिसि वानर है मानी रह्यों है भरि वानर तिल्लाकिय. मूंदे आंखि होंग में उधारे आंखिआगे ठाढ़ी धाइ जाइ जहां तहां और कोऊ कोकिये. केंहु अन लेहु तन कोऊन सिखानो मानों सोई सतराइ जाइ जाहि जाहि रोकिये. १७ एक करे थीन एक कहे काढ़ों सीज एक औजि पानी पाके करे बनत न आवनी. एक पर गाटे एक डाइतही काढे एक देखत हैं ठाड़े कहें पावक भयावनी. तुल भी कहत एक नीके हाथ छाये काप अन हूं न छाडे वाल गाल को बनावनी,

थावरे बुझावरे कि वावरे जिआवरे हो और आगि छागि न बुझावे सिंधु सावनी, १८ कोपि दसकंध तब प्रलय पयोद बोके रावन रजाइ धाइ आये जूथ जोरि के. कह्यों लंकपति लंकबरत बतावों बेगि बानर वहाइ गारी महावारि बोरि कै. भके नाथ नाइ माथ चले पाथप्रदनाथ बरखे मुसलधार बारबार घोरि के. जीवन ते जागी आगि चपरि चौगुनी लागी तुलसी ममरि मेघमागे मुख मोरि कै. १९ इहां ज्वाल जरे जात उहां ग्लानि गरे गात मुखे सकुचात सव कहत पुकार है. जुग पट भानु देखे प्रलय कुशानु देखे सेसमुख अनल बिलोके बारबार है. तुळसी सुन्यो न कान सिक्क सर्पी समान अति अचरज कियो केसरी कुमार है. वारिद बचन मुनि धुनै सीस सचिवन कहै दससीस ईस बामता बिकार है. २० पावक पवन पानी भान हिमवान जम काल लोकपाल मेरे डर डावां डोक है. साहब महेस सदा संकित रमेस गो। हैं महातप साहस बिरंचि छीन्हें गोल है. तुल्सी त्रिलोक आज दुजो न बिराजे राज बाजे बाजे राजन के बेटा बेटी ओल है. को है ईस नाम को जो बाम होत मोहूं से को माळवान राबरे के बावरे से बोल है. २ ? भूमि भूमिपाल ब्यालपालक पताल नाकपाल लोकपाल जेते सुभट समाज है. कहै मालवान जातुधान पति रावरे को मनहुं अकाज आने ऐसी कीन आजु है. राम कोह पावक समीर सीय स्वास कीस ईस बामता बिलोकी बानर को व्याज है. जारत प्रचारि फेरि फेरि सो निसंकलंक जहां बांको बीर तो सो मुर सिरताज है. २२ पान पकवान बिधि नाना के संधानी सीधी विविधि विधान धान बरत बलारही. कनक किरीट कोटि पलंग पेटारे पीठ काढत कहार सब जर भरे भारही. प्रवल पावक बाढ़े जहां काहें तहां डाड़े झपठ लपट भरे भवन भंडारही. तुलसी अंगारन पगारन बजार बच्चो हाथी हथसार जरे घोरे घोरसारही. २३ हाट बाट हाटक पिचिलि चलो घीसो घनो कनक कराही छंक तलकत जायसों. नाना पकवान जातुवान बळवान सब पागि पागि देरी कीन्ही भछी भाति भायसीं. पाहुने क्रुगान पवमान सो परोसो इनुमान सनमानिक जैवाये चित्त चायसों. तुलसी निहारि अरि नारि देदै गारि कहें बावरे सुरारि बैर कीन्हों राम रायसों. २.४ रावन सों राज रोग बाढत बिराट हर दिन दिन बिक्क सकल सुखराँकसो. नाना उपचार करि हारे सुर सिद्ध माने होत न बिसोक औव पावे न मनाँकसो. राम की रजाय ते रसायनी समीरसून उतार पयोधि पार सोधिसर बांब.साँ. जातुषान बुटपुटपाक लंक जातरप रतन जतन जारि कियो है ज्याकसो. ३९ जारि बारि के विधूम वाशिष बताइ लूम नाइ माथो पगिन मो ठाड़ो करजोरिके. मातु कृषा की जै साहे दान दी जै सुनि सीय दीन्हीं है असीस चार चूड़ामिन छोरिके. कहा कहीं तात देखे जात जो विहान दिन बड़ी अवलंबही सो चले तुम तोरिके. तुलसी सनीर नैन नेह सो सिथिल बैन विकल विलोकि किय कहत निहोरिके. २६ दिवस छसाच जात जानवे न मातु घर धीर और अन्त की अवाध रही थोरिके. बारिध बंधाय सेतु ऐहैं भानुकुलकेतु सानुज कुसल किय कटक बटोरिके. बचन विनीत कहि साता को प्रवोध किर तुलसी त्रिक्ट चाढ़ कहत उफोरिके. जैजे जानकीस दससीस किर केसरी कपीस कुद्यो बात घात उदिध हलोरिके. २७

सवैया-वेद पढे बिंधि सम्भु सभीत पुजावन शवन सो नित आर्वे ! दानत्र देव दयावने दीन दुखी दिन दूरहि ते सिर नावें ॥ एसेह भाग भगे दसभाल ते जो प्रभता कवि कोबिद गावें। रामसे बाम भये त्यहि बांमहिबाम सबै सुख सम्पात कार्वे ॥ २ ॥ वेद बिरुद्ध मही मुनि साधु ससीक किये सुरलोक उजाऱ्यो । और कहा कहीं तीय हरी तबहूं करुनाकर कोप निवान्यो ॥ सेवक छोहरे छाँडि छमा तलसी छस्यो रामसुभाव तिहाऱ्यो । तौलीं न दापदल्यो दसकन्धर जीलीं विभीषन लात न माऱ्यो ॥ ३ ॥ सोक समुद्र निमञ्जत काढि कपीस कियो जग जानत जैसी । नीच निसाचर बेरी को बन्धु बिभीषन कीन्ह पुरन्दर सैसी ॥ नाम किये अपनाय कियो तुलसी सी कही जग कौन अनेसी । आरत आरतिभंजन राम गरीब निवाज न दूसर ऐसी ॥ १॥ भीत पुनीत किये कापमालु को पाल्यो ज्यों काहुन बाल तनुजो । सजन सीव बिभीयन भी अजह बिल्से बर बन्धु बधुजी ॥ कौसक पाल बिना तुकसी सरनागत पाल क्रपाल न दुजो । क्र कुजाति कपूत- अधी सब की सधरे जो करे नर पूजी ॥ ५॥ तीय सिरोमनि सीय तजी ज्वहि पावक की कलुखाई दही है ! धर्म्म धुरन्धर बन्ध तज्यो प्रलोगन की बिधि बोक्ति कही है ॥ कीस निसाचर की करनी न सनी न बिलाकि न चित्त रही है। राम सदा सरनागत की अनखीही अनेसी सुभाय सही है ॥ ६॥ पाइ रन रारि न मंडै -जाइ सो सुभट समर्थ

सो जती कहाय विषय बासना धनिक बिन दान जाइ निर्धन बिनु धर्मिह । जाइ सो पंडित पढ़ि पुरान को रत न सुकर्मीह ॥ सुत जाइ मातुपितु भक्ति बिनु तिय सो बाइ जेहि पति न हित । सब जाइ दास तुलसी कहै जी न राम पद नेह नित ॥११०॥ सवैया-भौंह कमान सुधान सुठान जे नारि विकोकन बान तें बाँचे । कीप क्रशान गुमान अवाधट ज्यों जिनके मन आँचन आँचे ॥ कोभ सबै नट के बस है कांच ज्यों जग में बहु नाच न नाँच । नींके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुवीर के सेवक साँचे ॥१११॥ बालक बोलि दिये बिल कालको कायर कोटि कुचाल चलाई । पापी है बाप बडे परिताप ते आपनी ओर ते खोरि. न काई ॥ मृरि दई बिप मृरि मई प्रहलाद सुधाई सुधा की मलाई । राम क्रपा तुलसी जन को जग होत अले को भलोई भलाई ॥१२४॥ कंस करी वजबासिन पे करतृति कुर्भाति चली न चलाई । पाण्डु के पूत सपूत कपूत सजोधन भी काँक छोटो छलाई ॥ कान्द्र कुपाल बडे नतपाल गये खलखेचर खीस खलाई। ठीक प्रतीति कहै तुळसी जग होइ भळे को भळोई भळाई ॥१२५॥ अवनीस अनेक भये अवनी जिनके उरते सर सीच सुखाहीं। मानव दानव देव सतावन रावन घाटि रच्यो जगमाही । ते मिकते धरि धूरि सुजोधन जे चलते बहु छत्र कि छाहीं। बेर् पुरान कहें जग जान गुभान गोविंदिह भावत नाहीं ॥१२६॥

घनाचरी।

जहां बन पावनो सुद्दावने बिहंग मृग देखि अति लागत अनंद खेत खूंट सो । सीता राम लखन निवास बास मुनिन को सिद्ध साधु साधक सबै बिबेक बूट सो ॥ झरना झरत झार सीतल पुनीत बारि मंदािकिनि मंजुल महेस जटा जूट सो । तुल्रसी जो रामसों सनेह सांची चाहिये तो सेइये सनेह सी बिचित्र चित्रकृट सी ३३९॥ मोह बन किलमल पल्पीन लानिजिय साधु गाइ बिप्रन के भय को नेवािर है। दौन्हीं है रजाय राम पाइ सो सहाय लाललखन समर्थ बीर हेरि हेरि मारि है। मंदािकिनी मंजुल कमान आसिवान जहां बारिधार धीर धरी सुकर सुधािर है। चित्रकृट अचल अहेरी बैठ्यो घात मानों पातक के ब्रात घोर सावज संहारि है ॥१३६॥
सवैया—कागि दवारि पहार ढहीं कहकी काप कक जथा खर खोकी ।
चार चुवा चहुंओर चली कपटें झपटें सो तमीचर तोकी ॥
क्यों कहि जात महा सखमा उपमा तिक ताकत है किवकोकी ।
मानो कसी तुलसी हनुमान हिये जम ब्रीति जराय की चौकी ॥१६७॥

आर्यावर्त का विलाप।

डाय! पीड़ित न रडे जी भैरा विस भौत निदान, क्यों न फट लाय इदय घोर निवासने प' हो शान। जील-माजर में भला डूब न बची सुप्त की जान, भिल बेरी पड़े बुक्त, प्रयमा प्रशासा, प्रमाला देश की ही य' देशा और य' गति की भी की, विना मंदेड है मारी गड जिंत की गी की ॥ १ दाय ! कन भर न विस्ता है तेरा दृष्ट सन दे। की गया कींन बदल रंग-अवन की बन छ ? विसस सुटिरे की इसा राज तेरे सन धन से ? कीन पा रोग नया तुभा में सभा थीं सन से ? कार्यावर्त ! तुक्यों कारति है, दिन राप्त, विकाय, कोन से मुरबदय में निया है यह सन्ताप ॥ २ ॥ दुर्देशा तीर है जब ध्यान में चाती एक सार, कांब बाखों में डमड़ बाता है, बंध जाता है तार। भीच यी व्यय है भारता कि न रहता है विचार, सर्वया को से विसर काता है जग का व्यवहार। सीना खप्र होता है, पच्छा नहिं धन कगता है, भीषा को चांग से असा होने संगता है। एक दिन घो' धे कि या नाम तेरा की निकला, तिरिक्षो कीत कि कर देश में फिरतो थी धना। थों न चन धन कि कमी, सब का सबिह था प्रा, षाखें जिस भीर थिं उठती वस उधर सब जुड़ था। यां, को शोभा थी, कहाँ देख नहीं पहती थी, कमारा सर्ग हे काने के सिये सरतो थी।

मेघदूत (पूर्वार्ड)

चवैया - कारण में उनमत्त भएं इक जल दई सब खोई ब नारि तजी निम दादय मास को सींद वड़ी यह नाम खवादे। काइ बद्धो गिरिराम के भाजम भीतल कोड में गेड बनाई। जानकी साम की पावन नीर बड़े चहुं भीर लड़ां सुखदाई ॥ १ ॥ ब सि लाकी संकीधर में विरक्षी कितने एक सास विलाद गया। भुजबन्द गए गिर सीरन के इतनी चिता द्वर गात भयो ॥ फिर कागत माम चनाढ़ नक्यों गिरि ये घन सोहनी चार कथी। सुत्र के सन्द्र गनगानवित गहतावन खिल स्वाद ब्ह्यो ॥ २॥ कोतको पून पुनावनदार वा मेघ पैदास कुवर गयो। प्रतार में फंसुवा भरते कड़ वेर की प्रोचत ठाड़ी भयो ॥ कंठ सरी सुखियानष्ट्र के चित भीरत दुखि घटा न । भी। बात कड़ा फिर ऐसेन की जिन मीत तें दूर वसेरी कशी ॥ शोवन के दिन आवन में वह नारिको प्रान वचावन काल। बादरद्त बनावन को क्षत्रकात संदेश पठावन काल ॥ मी कर कटकपूर्ण गए मनकस्थित चर्च दनावन कान। बोसन प्रीति से बोल सन्यो इंग्तें सुक नेइ बढावन काल । घनाचरी-धाम धूम नीर भी समीरन की खिलपात ऐसी जड़ मैच

कशाद्त कान करिहै। मेड की संदेशे डाय चातुर पठेवे जीग बादर विचारों कीन रीति से उचरिष्ठे ॥ बादी उक्त ठा कच दुदि विसरानी सब बाडी ही निडीर जानि कान यातें सरिडें। बाम के सताए मतिडीन हैं सदाई तिन्हें चेत थी चचेत कहा मेद जानि परि है॥ ५॥

पुष्कारावर्तन में प्रसिद्ध की का को का में बंग तिन हो के नी के तेने जवा यायी है। इच्छाक्य धारन की गति है दई ने दई मन्त्री सुरराज ह ने भाषणी बनायी है ॥ एते गुन जानि तीप मंशिता भयोड़ मेघ बन्धुन तें द्र मीड विधि ने बसायो है। सक्तन ये मौगिबो बिनाइं सरें बाज मन्ते नीच ये सरें इं मान पाछी ना बनायी है॥ ६॥

े तुती है सकाई तनताय के सताएन की भयी हूं वियोगी में कुवेर कीय पाई के। केम की संदेशी यातें मेरी प्रानप्यारी पास शक्षकापुरी में मीत दोशी पहंचाई के ॥ देखन हो जीग बाको नगरी बनी है वह कीनी जलराजन स्वास कहां जाद के । वागन में वाहरें विगाज़ें चन्द्रचूड काके निल्ली घटाव रहें चन्द्रकटा काद के ॥ ७ ॥

वातपंथ जात तो हि ना शे परदेशिन की देखें भी बार के शन कर शों छठाइ। बाज स के पावन को पामा उर काइ जाइ धीरन धरें भी पीर नैक जिय भी विद्वाद ॥ पाएं भी सभीप कोई नारि की विभार नाहिं विरहा विद्या में नर जी पै पपनी वसाइ। ऐसी संद भागी सें हूं दूसरी न भीर होइ पराधीन हित्त हैत बैठो सुख हूं नहाइ॥ ८॥

टोश-मन्द मन्द मादत वहै , जैसी तोडि प्रशाह । चरवित यह चातक मध्र , बाएँ बोल्यी चार ॥ बगुली ह नभ में सुभग , आई बांचि कतार । गर्भदान समस्य प्रमुक्ति , देन तीडि मनुहार ॥ ८॥ भग में त विवाद नहीं , खिख है भी जि जाद । कीवांत दिन गिनती वारति . पति भरता चितनाइ ॥ नेडी डिग्दी नारि को , कोमन जैसी फन । विरह मांहि पावा करति , ताहि कक्क हट सक ॥ १०॥ क्षवती किति की कर्रात , उक्किन्न उपनाइ ऐसी तेरी गरज सुनि , इंप दियो सुलमाइ मानमरीवर चनन की , कमन नान से पाय छडि हैं धर कैवान की . राजहंग ती साथ सांगि मीख गिरि तंग पै , अब सीतहि भरि अंब पावन ब्युवित चन्न सों , शंकित याकी लंक जब जब त्यातें मिनत , यहत दिनन में चार प्रीति प्रगट तो में करत , आंमू तप्त वहाइ

कंडिनिया—गैन बताकं मेघ धव निहं चित्र पाने चैन।

फिर सुनियो संदेश सम जानन धित सुखदैन॥

कानन धित सुखदैन बके वा सग में जब तू।

चित्रियो धिई धिर पांत शिखर कंचिन पैतव तू॥

भूष को सीता सिनें उधरे घक विन मैन।

पो तिन को पानी तुरत को की धपनी गैसा॥ १३॥

रुक्मिणी परिणय। (किवत दंडका।)

कारे नाग मेघ राजें दुन्दभी अवांजें गांजें बाजें बेस बांसुरी विराजें मोर सोर है। चमकें कृपान तेई दामिनी दमङ्कें दौरि बान बन्द बूंदन की मई दृष्टि घोर है। फहरें पताके व्योम डहरें ते बकपांति मांगें पानी घायल तेचातृक वा ठौरहै। इन्द्रचाप चाप झिल्ली झिलीम झनङ्काति हैं फेली रन पावस की सोभा चहुँ ओर है। १॥ सोनित सरीर छाये किंसुक सुहाये भट लितका कृपानहीं की लोनी लहराती है। रतन अनेक ते प्रसून रंग रंग राजें कोप छाये बीर मुख कोक नद्पाती है। बाजत स्दङ्ग संख कोकिला कलांपें तेई बानन की गांसी अलि औति दरसाती है। बीर औ बराङ्गना बिमान में बिनोद करें समर बसन्त बेस सोभा सरसाती है॥ २॥

तल के प्रहार होते तई मनो ताल देते दुन्दुभी मदंग ढाढ़ी मारु गान करते। गदा के अवाज ते मँजीरा मनो बाजि रहे तेग की ठनाक ते तमूरा सुर भरते॥ जोगनी जमाति भांति भांति दौरे ठौर ठौर तेई नाचि गानिका के गुन मन हरते। संगर, सभा में संगीत सांचो साहि रह्यो बीर प्रान के इनाम दे दे नहिं टरते॥ ३॥

पिचका तमञ्जा अहै सोतित को रंग वहें धर-की अबीर चहुँ ओर दरसाय है। दुन्दुभी धुकार सो मदंग ठनकार होती भिंडिपाछ केरे कुमकुमा त्यों सुहाय है।। जोगिनी जमाति भूत औ पिसाच प्रेत पांति नाचि नाचि मांति भांति बोछै धाय धाय है। बीर जबुबंसी शत्रु सेना सुन्दरी के संग खेळें फागु जंग अंग अंग रंग छाय है ॥ ४ ॥ बातन के माड़ी छाये कुम्भ मुण्डही के भाये. केटे केस तेई कुस सोनित सु नीर है। भटन के पीठिन की पीठि पीछ पेट बेदी प्रेत औं पिसाच ते पुरोहित की भीर है ॥ जोगिनी जमाति नारी मंगल को गानवारी दन्तन के लाजा अरु मेदन की खीर है। कोप को कुसान त्योंहीं सुरुवा कृपा-नहीं को बधूवे बरांगनानि व्याह ते प्रवीर हैं ॥५॥ एक ओर गूद एक ओर केस मध्यरक सुरसरि सूरसुता सरस्वती भावे है । छत्र वटबक्षतरे लोथिन के घाटन में मोदित मुनीसन ते त्रेतहां-नहावै है ॥ क्रीड़ा करें जोगिनी अनेक देवनारी सम मुण्ड पुण्डरोक छै छै खेल को मचावे है। शम्भू को चढ़ाय सीस प्रान दान दे दे तहां समर विवेनी न्हाय स्वर्ग सूर जावे है ॥६॥

भाषासार पहला भाग।

यह पुस्तव मिडन स्कूनी भीर निना स्कूनी में पढ़ाई नाती है जड़ नै भीर मास्टर नोग दरावर भाषासार की (टीका) मांगते थे पर पन तक यह क्यों न थो चन सातनी एडिशन में बहुत कुछ घटा बढ़ाकर छापी गई है मैंने भंजह करता की राथ ने कर इस के कई एक विषय की उत्तम उत्तम टीका वनवाई है। यदि मास्टर श्रीर विद्यार्थियों की इस से कुछ भी नाम हुचा ती भीर भीर विषय नो कविता में वाकी रह गई है इस को भी टीका बनवा कर छपवा दंगा।

वालकांड सटीक।

'सेटो राम नाम रहार को' से से कर 'हिमिरि भवानी संकरि कर कि काया महाय' तक का चर्य चयूर्व रीति से काया गया है। क्योंकि भाषामार को कोर्स को युस्तक है हम में यह प्रकरण दिया गया है चौर हम का चर्य ऐसा उत्तम रीति से जिखा है जिम से उत्तम होना ही दुर्क भ है। पाठकों की चौर वर्न क्यूजर के हरेक विद्यादियों को एक एक प्रति चयन पाम रखना चाहिये यह ऐसा है कि जिस से पाठकों के पास पढ़ने की चवध्यकता नहीं चाप से चाप चर्य मालूम हो जायगा चौर हम टोका के पढ़ने से हतनी चतु-राई होगी कि साधारण कोगों में चच्छा पंडित मिना जायगा। यह पुस्तक वही है। दास भी साधारण कोगों के सुभीतकी निये ॥) चाना रक्या गया है।

सुरमागर कटीवा।

पवाभी कूट के मूरधार का बर्ध भनी भांति से किया गया है एक बार पढ़ने से बर्ध भनी भांति से बा कायगा इस में कुछ सन्देश नहीं और इस के बिना क्या क्यार्थियों और क्या पाठकों सभी को पळ्यल कष्ट होगा इस किये बाठ बाना खर्च की जिये नहीं तो फिर बीही रहियगा। यह टोका भारतेन्द्र इतिबन्द्र संबदित है।